**Class:** B.A. 3 year

**Subject:** Music (Vocal/Instrumental)

**Course Code:** MUSA304PR

**Course Name:** ELECTIVE(DSE-1A) UNIT-2 VOCAL/INSTRUMENTAL (HINDUSTANI MUSIC)

# MUSIC
# (Hindustani Music)

**Lesson : 1 - 15**

**Dr. Mritunjay Sharma**

**Centre for Distance & Online Education (CDOE)**
**Himachal Pradesh University**
**Gyan Path, Summer Hill, Shimla-171005**

# विषय सूची


| क्रम | इकाई | विषय | पृ. सं. |
|---|---|---|---|
| 1 | | विषय सूची | ii |
| 2 | | प्राक्कथन | ii |
| 3 | | पाठ्यक्रम | iV |
| 4 | इकाई - 1 | दरबारी कान्हड़ा राग की विलंबित गत/मसीतखानी गत (वादन के संदर्भ में) | 1 |
| 5 | इकाई - 2 | तोड़ी राग की विलंबित गत/मसीतखानी गत (वादन के संदर्भ में) | 13 |
| 6 | इकाई - 3 | भैरवी राग की विलंबित गत/मसीतखानी गत (वादन के संदर्भ में) | 27 |
| 7 | इकाई - 4 | दरबारी कान्हड़ा राग का विलंबित ख्याल (गायन के संदर्भ में) | 38 |
| 8 | इकाई - 5 | तोड़ी राग का विलंबित ख्याल (गायन के संदर्भ में) | 51 |
| 9 | इकाई - 6 | भैरवी राग का विलंबित ख्याल (गायन के संदर्भ में) | 65 |
| 10 | इकाई - 7 | दरबारी कान्हड़ा राग की द्रुत गत (वादन के संदर्भ में) | 77 |
| 11 | इकाई - 8 | तोड़ी राग की द्रुत गत (वादन के संदर्भ में) | 90 |
| 12 | इकाई - 9 | भैरवी राग की द्रुत गत (वादन के संदर्भ में) | 105 |
| 13 | इकाई - 10 | दरबारी कान्हड़ा राग का छोटा ख्याल (गायन के संदर्भ में) | 116 |
| 14 | इकाई - 11 | तोड़ी राग का छोटा ख्याल (गायन के संदर्भ में) | 160 |
| 15 | इकाई - 12 | भैरवी राग का छोटा ख्याल (गायन के संदर्भ में) | 144 |
| 16 | इकाई - 13 | ध्रुवपद | 156 |
| 17 | इकाई - 14 | एकताल में द्रुत गत/रजाखनी गत | 166 |
| 18 | इकाई - 15 | ताल<br>• तीन ताल<br>• दादरा ताल<br>• एक ताल<br>• चौताल | 177 |
| 19 | | महत्वपूर्ण प्रश्न | 194 |

# प्राक्कथन

संगीत स्नातक के नवीन पाठ्यक्रम के क्रियात्मक विषय के MUSA304PR में संगीत से सम्बन्धित उपयोगी सामग्री का समावेश किया गया है। संगीत में प्रायोगिक तथा सैद्धान्तिक दोनों पक्षों का योगदान रहता है। गायन तथा वादन में भी इन्हीं दोनों पक्षों का महत्वपूर्ण स्थान रहता है। संगीत में क्रियात्मक पक्ष के अंतर्गत मंच प्रदर्शन तथा मौखिकी का भी महत्वपूर्ण स्थान रहता है। प्रस्तुत पाठ्यक्रम में संगीत की क्रियात्मक तथा मौखिकी परीक्षा को ध्यान में रखकर पाठ्य सामग्री दी गई है। इस पुस्तक के

इकाई 1 में वादन के संदर्भ में दरबारी कान्हड़ा राग का परिचय, आलाप, विलंबित गत, तोड़ों आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 2 में वादन के संदर्भ में तोड़ी राग का परिचय, आलाप, विलंबित गत, तोड़ों आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 3 में वादन के संदर्भ में भैरवी राग का परिचय, आलाप, विलंबित गत, तोड़ों आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 4 में गायन के संदर्भ में दरबारी कान्हड़ा राग का परिचय, आलाप, विलंबित ख्याल, तानों आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 5 में गायन के संदर्भ में तोड़ी राग का परिचय, आलाप, विलंबित ख्याल, तानों आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 6 में गायन के संदर्भ में भैरवी राग का परिचय, आलाप, विलंबित ख्याल, तानों आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 7 में वादन के संदर्भ में दरबारी कान्हड़ा राग का परिचय, आलाप, द्रुत गत, तोड़ों आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 8 में वादन के संदर्भ में तोड़ी राग का परिचय, आलाप, द्रुत गत, तोड़ों आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 9 में वादन के संदर्भ में भैरवी राग का परिचय, आलाप, द्रुत गत, तोड़ों आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 10 में गायन के संदर्भ में दरबारी कान्हड़ा राग का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल, तानों आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 11 में गायन के संदर्भ में तोड़ी राग का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल, तानों आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 12 में गायन के संदर्भ में भैरवी राग का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल, तानों आदि का वर्णन किया गया है।
इकाई 13 में गायन के संदर्भ में ध्रुवपद गायन शैली का वर्णन किया गया है।
इकाई 14 में वादन के संदर्भ में एकताल में द्रुत गत/रजाखनी गत, तोड़ों सहित दी गई है।
इकाई 15 में ताल पक्ष से तीनताल, दादरा, चौताल, एकताल का परिचय तथा बोलों का एकगुण, दुगुण, तिगुण व चौगुण में वर्णन किया गया है।
प्रत्येक इकाई में शब्दावली, स्वयं जांच अभ्यास प्रश्न तथा उत्तर, संदर्भ, अनुशंसित पठन, पाठगत प्रश्न दिए गए हैं।

प्रस्तुत पाठ्यक्रम को लिखने के लिए स्वयं के अनुभव से, संगीतज्ञों के साक्षात्कार से तथा संगीत से सम्बन्धित पुस्तकों द्वारा शिक्षण सामग्री एकत्रित की गई है। मैं उन सभी संगीतज्ञों तथा लेखकों का आभारी हूं जिनके ज्ञान द्वारा तथा जिनकी संगीत संबंधी पुस्तकों द्वारा शिक्षण सामग्री को यहां लिया गया है। आशा है कि विद्यार्थियों के लिए यह पुस्तक लाभप्रद होगी।

डॉ. मृत्युंजय शर्मा

**COURSE CODE MUSA304PR**
**B.A. 3rd YEAR, DISCIPLINE SPECIFIC**
**ELECTIVE (DSE-1A) UNIT-2**
**VOCAL/INSTRUMENTAL (HINDUSTANI MUSIC)**

**Title: Practical** **Max Marks: (35+15)=50** **Credits: 3**

Rãga – Todi, Bhairavi, Darbari-kanahda

1. One Vilambit Khyal/ Maseetkhani Gat in any of the Rãgas.
2. Madhyalaya Khyal/ Razakhani Gat in all the Rãgas.
3. Dhrupad/Dhamar in any one of the Rãgas

   or

   Dhrut Gat in any Tala (other than Teentala)
4. Ability to recite the Thekas and Different laykaris of Teentãla, Ektãla, Chautãla, Dadra
5. Innovative singing/playing to enhance the musical ability of the students in the classroom.
6. Guided listening session on the practical aspects of music.

# इकाई-1
# राग दरबारी कान्हड़ा की विलंबित गत

## इकाई की रूपरेखा

| क्रम | विवरण |
|---|---|
| 1.1 | भूमिका |
| 1.2 | उद्देश्य तथा परिणाम |
| 1.3 | दरबारी कान्हड़ा राग का परिचय (वादन के संदर्भ में) |
| | स्वयं जांच अभ्यास 1 |
| 1.4 | दरबारी कान्हड़ा राग का आलाप (वादन के संदर्भ में) |
| | स्वयं जांच अभ्यास 2 |
| 1.5 | राग दरबारी कान्हड़ा की विलंबित गत तथा तोड़े |
| 1.5.1 | दरबारी कान्हड़ा राग की विलम्बित गत |
| 1.5.2 | दरबारी कान्हड़ा राग की विलम्बित गत के तोड़े |
| | स्वयं जांच अभ्यास 3 |
| 1.6 | सारांश |
| 1.7 | शब्दावली |
| 1.8 | स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर |
| 1.9 | संदर्भ |
| 1.10 | अनुशंसित पठन |
| 1.11 | पाठगत प्रश्न |

## 1.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA304PR की यह पहली इकाई है। इस इकाई में वाद्य संगीत, विशेष रूप से सितार वाद्य के संदर्भ में, राग दरबारी कान्हड़ा  का परिचय, आलाप, विलंबित गत, तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग दरबारी कान्हड़ा के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, विलंबित गत, तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही सितार वाद्य पर क्रियात्मक रूप से राग दरबारी कान्हड़ा का आलाप, विलंबित गत, तोड़ों को बजा सकेंगे।

## 1.2 उद्देश्य तथा परिणाम

### सीखने के उद्देश्य

- दरबारी कान्हड़ा राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।
- दरबारी कान्हड़ा राग के आलाप, विलंबित गत, तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- दरबारी कान्हड़ा  राग के आलाप, विलंबित गत, तोड़ों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को वादन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

### सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वादन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा

- दरबारी कान्हड़ा  राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।
- दरबारी कान्हड़ा  राग के आलाप, विलंबित गत, तोड़ों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- दरबारी कान्हड़ा  राग के आलाप, विलंबित गत, तोड़ों को बजाने में सक्षम होंगे।
- राग दरबारी कान्हड़ा के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

## 1.3 दरबारी कान्हड़ा राग का परिचय

थाट – आसावरी

जाति – संपूर्ण- वक्र संपूर्ण

वादी - ऋषभ

संवादी - पंचम

स्वर – गंधार, धैवत, निषाद कोमल (ग ध नी), अन्य स्वर शुद्ध

न्यास के स्वर – षडज, ऋषभ,  पंचम

समय – मध्य रात्रि

समप्रकृतिक राग – अड़ाना

आरोह: सा रे $^{म}$ग ऽ म रे सा, म प, $^{नी}$ध $^{सां}$नी सां।

अवरोह: सां, $^{नी}$ध ऽ नी प, म प $^{म}$ग म रे सा।

पकड़:  सा रे $^{म}$ग ऽ ग ऽ म $^{सा}$रे ऽ सा, $^{रे}$ध़ नी़ सा।

दरबारी कान्हड़ा राग, आसावरी थाट का एक महत्वपूर्ण राग है। इस राग की जाति संपूर्ण- वक्र संपूर्ण है। दरबारी कान्हड़ा राग का वादी स्वर ऋषभ तथा संवादी स्वर पंचम है। प्रस्तुत राग में गंधार, धैवत, निषाद कोमल (ग ध नी) तथा अन्य

स्वर शुद्ध लगते हैं। इस राग का वादन समय मध्य रात्रि माना जाता है। इस राग में ऋषभ, पंचम स्वरों पर न्यास किया जाता है। इस राग की प्रकृति गंभीर है। कानड़ा, दरबारी या दरबारी कान्हड़ा तीनों से अभिप्रायः एक ही राग से है। इस राग का आविष्कारक मियां तानसेन को माना जाता है। इस राग का विस्तार अधिकतर मन्द्र और मध्य सप्तक में किया जाता है। मन्द्र सप्तक में यह राग विशेष रूप से अच्छा लगता है। इस राग में गंधार स्वर को हमेशा आन्दोलित किया जाता है। दरबारी राग का गन्धार, अति कोमल गन्धार है और इसे हमेशा ऋषभ की सहायता से आन्दोलित किया जाता है (सा रे ग ऽ रे ग ऽ रे ग ऽ रे सा)। इस राग में धैवत स्वर भी आन्दोलित होता है और यह निषाद की सहायता से आन्दोलित होता है (नी ध ऽ ध ऽ नि प)। धैवत और गान्धार स्वरों का प्रयोग इस राग में वक्र रूप से किया जाता है। दरबारी के उतरांग में धनि प या सां धनि प' या निधनि प स्वर संगतियां प्रयुक्त होती हैं। इस राग में तानें अधिकतर सारंग अंग से ली जाती हैं। ग तथा ध स्वरों के वक्र होने के कारण इसमें म रे और नि प की संगतियां अधिक दिखाई जाती हैं।

### स्वयं जांच अभ्यास 1

1.1 दरबारी कान्हड़ा राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) ध

घ) ग

1.2 दरबारी कान्हड़ा राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) प

घ) ग

1.3 दरबारी कान्हड़ा राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) मध्य रात्रि

घ) दोपहर

1.4 दरबारी कान्हड़ा राग का आविष्कारक किसने किया था?

क) उ. विलायत खां

ख) पं. रवि शंकर

ग) स्वामी हरिदास

घ) तानसेन

1.5 दरबारी कान्हड़ा राग में, निम्न में से कौन सा स्वर कोमल होता है?

क) गंधार

ख) षड़ज

ग) मध्यम

घ) ऋषभ

1.6 दरबारी कान्हड़ा राग में किस स्वर को हमेशा आन्दोलित किया जाता है?

क) ग

ख) प

ग) ध

घ) सा

1.7 दरबारी कान्हड़ा राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) आसावरी

ग) मारवा

घ) तोड़ी

## 1.4 आलाप

- सा ऽ रे रे ऽ ध़ ध़ नी़ सा ऽ नी़ ऽ

  सा ऽ रे ध़ नी़ ऽ नी़ सा ऽ सा ऽ।

- सा ऽ सा, नी़ सा, रे सा, नी़ सा रे सा ध़ ऽ

  ध़ ऽ नी़ प़, म़ प़ ध़ ऽ सा नी़ ऽ सा ऽ।

- नी़ सा नी़ रे सा। नी़ सा रे रे सा ऽ नी़,

सा रे, ध़ ऽ नी़ प़ म़ प़, ध़ ऽ ध़ ऽ नी़ सा ऽ।

- नी़ सा म़ सा नी़ सा रे ध़ ऽ नी़ प़ म़ प़ सा।
- म प, म प ध़ ऽ ध़ नी प, म प सां ध़ नी़ प,

  प नी़ प नी़ प म प ग़ ऽ म रे सा नी़

  सा रे ऽ सा, नी़ सा।
- म प ध़ ऽ ध़ ऽ नी़ सां, नी़ सां रें सां ऽ।
- ग़ं ऽ ग़ं मं रे सां, ग़ं ऽ ग़ं मं रें सां,

  रें नी़ सां ध़ ऽ नी़ प, म प सां ध़ ऽ नी़ प,

  म प म नी़ प नी़ प म प सां, नी़ प ग़ऽ

  ग़ ऽ म रे सा, नी़ नी़ सा रे सा।

**स्वयं जांच अभ्यास 2**

1.8 क्या दरबारी कान्हड़ा राग में नी़ सा रे सा स्वर संगति हो सकती है?

क) हां

ख) नहीं

1.9 क्या दरबारी कान्हड़ा राग में ध़ ऽ नी़ ध़ प़ स्वर संगति हो सकती है?

क) हां

ख) नहीं

1.10 दरबारी कान्हड़ा राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) ग़ म रे सा

ख) म ग़ रे सा

ग) ग़ म रे़ सा

घ) म ग़ रे़ सा

## 1.5 राग दरबारी कान्हड़ा की विलंबित गत तथा तोड़े

### 1.5.1 दरबारी कान्हड़ा विलंबित गत तीन ताल

| x | | | | 2 | | | | 0 | | | | 3 | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 |
| **स्थाई** | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | गम | रे | सा़नी | सा | ध़नी |
| | | | | | | | | | | | दिर | दा | दिर | दा | राऽ |
| रे | रे | सा | मप | ध | नीप | म | प | गम | रे | सा | | | | | |
| दा | दा | रा | दिर | दा | दिर | दा | रा | दाऽ | दा | रा | | | | | |
| | | | | | | | | | | | गम | रे | सा़नी | सा | ध़नी |
| | | | | | | | | | | | दिर | दा | दिर | दा | राऽ |
| रे | रे | सा | मप | ध | नीप | म | प | गम | रे | सा | | | | | |
| दा | दा | रा | दिर | दा | दिर | दा | रा | दाऽ | दा | रा | | | | | |
| **अन्तरा** | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | मम | प | नीनी | प | धनी |
| | | | | | | | | | | | दिर | दा | दिर | दा | राऽ |
| सां | सां | सां | नींरें | सां | धनी | म | प | गम | रे | सा | | | | | |
| दा | दा | रा | दिर | दा | दिर | दा | रा | दाऽ | दा | रा | | | | | |
| | | | | | | | | | | | मम | प | नीनी | प | धनी |
| | | | | | | | | | | | दिर | दा | दिर | दा | राऽ |
| सां | सां | सां | नींरें | सां | धनी | म | प | गम | रे | सा | | | | | |
| दा | दा | रा | दिर | दा | दिर | दा | रा | दाऽ | दा | रा | | | | | |

## 1.5.2 दरबारी कान्हड़ा राग की विलंबित गत के तोड़े

- धनीसांनी पमगम रेसामप धनीसां-
- रेंरेंसांनी धनीसांरें सांनीपम गमरेसा
- सांनीपम गमरेसा मपधनी सांसांरेंसां
- सारेग- ममरेसा रेरेसाऩी सा-ऩीप़
  ऩीऩीप़म़ धऩीरेसा
- ऩीसारेसा गमरेसा ममरेसा मपनीप
  मपगम रेसाऩीसा
- सारेसासा ऩीसारेसा ममपप धनीनीप
  गमरेसा ऩीसारेसा।
- ममरेसा ऩीसानीनी पमगम रेसाऩीसा
  रेंरेंसांनी सांसांनीनी पपमप गमरेसा
- ऩीसारेसा गमरेसा मपनीप गमरेसा
  सारेसासा ममपप धनीपप गमरेसा
- ऩीरेसासा गमरेसा मपनीप धधनीप
  धनीसांसां धनीपप मपनीप गमरेसा

- ऩीसारेसा ध़ध़ऩीसा गमरेसा मपनीप
  धनीपप मपनीप गमरेसा ऩीरेसासा
- मपमप गमरेसा नीनीपप मपमप
  गमरेसा नीरेंसांसां धनीपप मपमप
- गमरेसा गंमरेंसां धनीपग मरेसा-
- ऩीसारेसा गमरेसा मपनीप गमरेसा
  मपधनी सारेंसांसां धनीपप गमरेसा
- नीसारेंसां गंमरेंसां मपनीप गमरेसा
  ध़ऩिरेरे सासागम रेरेसासा मपमप
- धनीरेसां नीसारेसां धधनीप गमरेसा
  ध़ऩिऩिरे ध़ऩिऩिरे ध़ऩिऩिरे
- गमरेसा ऩीसाध़ऩी सा-गम रेसाऩीसा
  ध़ऩीसा- गमरेसा ऩीसाध़ऩी
- गमरेसा ऩीसाध़ऩी सा--- गमरेसा
  ऩीसाध़ऩी सा--- गमरेसा ऩीसाध़ऩी
- मपधनी सारेंनीसां मंमरेंसां नीसांधध
  पनीमप गमरेसा ऩीसाध़ऩी रेरेसा-

**स्वयं जांच अभ्यास 3**

1.11 दरबारी कान्हड़ा राग की विलंबित गत में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 1

घ) 9

1.12 दरबारी कान्हड़ा राग की विलंबित गत अधिकतर किस मात्रा से शुरू होती है?

क) 13

ख) 12

ग) 1

घ) 9

1.13 दरबारी कान्हड़ा राग की विलंबित गत को केवल सितार वाद्य पर ही बजाते हैं?

क) हां

ख) नहीं

1.14 तीन ताल में, 8 मात्रा के तोड़े को किस मात्रा से शुरू करें कि वह सम पर समाप्त हो जाए?

क) 8

ख) 9

ग) 10

घ) 1

1.15 तीन ताल में, 16 मात्रा के तोड़े को किस मात्रा से शुरू करें कि वह सम पर समाप्त हो जाए?

क) 16

ख) 9

ग) 1

घ) 12

## 1.6 सारांश

दरबारी कान्हड़ा राग भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत के वादन के अंतर्गत इस राग को बजाया जाता है। दरबारी कान्हड़ा राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में विलंबित गत को धीमी

लय में बजाया जाता है। विलंबित गत में तोड़ों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार के तोड़ों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ बजाया जाता है।

## 1.7 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- विलंबित गत: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर-रचना जो लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा विलंबित लय में बजाई जाती हो उसे विलंबित गत कहते हैं।
- तोड़ा: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, वाद्य पर बजाया जाता है तो उसे तोड़ा कहते हैं।

## 1.8 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

**स्वयं जांच अभ्यास 1**

1.1 उत्तर: क)

1.2 उत्तर: ग)

1.3 उत्तर: ग)

1.4 उत्तर: घ)

1.5 उत्तर: क)

1.6 उत्तर: क)

1.7 उत्तर: ख)

**स्वयं जांच अभ्यास 2**

1.8 उत्तर: क)

1.9 उत्तर: ख)

1.10 उत्तर: क)

**स्वयं जांच अभ्यास 3**

1.11 उत्तर: ग)

1.12 उत्तर: ख)

1.13 उत्तर: ख)

1.14 उत्तर: ख)

1.15 उत्तर: ग)

## 1.9 संदर्भ


डॉ. केशव शर्मा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, मार्च 2024।

डॉ. निर्मल सिंह  से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, अप्रैल 2024।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।


## 1.10 अनुशंसित पठन


शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।


## 1.11 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग दरबारी कान्हड़ा का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग दरबारी कान्हड़ा के तीन आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग दरबारी कान्हड़ा की विलंबित गत लिखिए।

प्रश्न 4. राग दरबारी कान्हड़ा की विलंबित गत के पांच तोड़े लिखिए।

# इकाई-2
# राग तोड़ी की विलंबित गत

## इकाई की रूपरेखा


| क्रम | विवरण |
|---|---|
| 2.1 | भूमिका |
| 2.2 | उद्देश्य तथा परिणाम |
| 2.3 | तोड़ी राग का परिचय (वादन के संदर्भ में) |
| | स्वयं जांच अभ्यास 1 |
| 2.4 | तोड़ी राग का आलाप (वादन के संदर्भ में) |
| | स्वयं जांच अभ्यास 2 |
| 2.5 | राग तोड़ी की विलंबित गत तथा तोड़े |
| 2.5.1 | तोड़ी राग की विलंबित गत |
| 2.5.2 | तोड़ी राग की विलंबित गत के तोड़े |
| | स्वयं जांच अभ्यास 3 |
| 2.6 | सारांश |
| 2.7 | शब्दावली |
| 2.8 | स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर |
| 2.9 | संदर्भ |
| 2.10 | अनुशंसित पठन |
| 2.11 | पाठगत प्रश्न |

## 2.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA304PR की यह दूसरी इकाई है। इस इकाई में वाद्य संगीत, विशेष रूप से सितार वाद्य के संदर्भ में, राग तोड़ी  का परिचय, आलाप, विलंबित गत, तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग तोड़ी के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, विलंबित गत, तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही सितार वाद्य पर क्रियात्मक रूप से राग तोड़ी का आलाप, विलंबित गत, तोड़ों को बजा सकेंगे।

## 2.2 उद्देश्य तथा परिणाम

### सीखने के उद्देश्य

- तोड़ी राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।
- तोड़ी राग के आलाप, विलंबित गत, तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- तोड़ी  राग के आलाप, विलंबित गत, तोड़ों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को वादन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

### सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वादन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- तोड़ी  राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।

- तोड़ी  राग के आलाप, विलंबित गत, तोड़ों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- तोड़ी  राग के आलाप, विलंबित गत, तोड़ों को बजाने में सक्षम होंगे।
- राग तोड़ी  के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और  अनुभव भी प्राप्त होगा।

## 2.3 तोड़ी राग का परिचय

राग - तोड़ी

थाट – तोड़ी

जाति – संपूर्ण- संपूर्ण

वादी - धैवत

संवादी - गंधार

स्वर – ऋषभ, गंधार, धैवत कोमल (रे॒ ग॒ ध॒), मध्यम तीव्र, (म॑) अन्य स्वर शुद्ध

न्यास के स्वर – षडज, गंधार, धैवत

समय – दिन का दूसरा प्रहर

समप्रकृतिक राग – गुर्जरी तोड़ी

आरोह: सा रे॒ ग॒ म॑ ध॒ ऽ प, म॑ ध॒ नी सां।

अवरोह: सां, नी ध॒ प ऽ, म॑ ग॒, रे॒ ग॒, रे॒ सा।

पकड़:  ध॒ नी॒ सा, म॑ ग॒, रे॒ ग॒ रे॒ सा।

तोड़ी राग, तोड़ी थाट का एक महत्वपूर्ण राग है। इस राग की जाति संपूर्ण-संपूर्ण है। तोड़ी राग का वादी स्वर धैवत तथा संवादी स्वर गंधार है। प्रस्तुत राग में ऋषभ, गंधार, धैवत कोमल (रे ग ध), मध्यम तीव्र (म') तथा अन्य स्वर शुद्ध लगते हैं। इस राग का वादन समय दिन का दूसरा प्रहर माना जाता है। इस राग में षडज, गंधार, धैवत स्वरों पर न्यास किया जाता है। इस राग की प्रकृति शांत है। इस राग का आविष्कारक मियां तानसेन को माना जाता है। इसलिए इस राग को मियां की तोड़ी भी कहा जाता है। इस राग का विस्तार अधिकतर मन्द्र और मध्य सप्तक में किया जाता है। मन्द्र सप्तक में यह राग विशेष रूप से अच्छा लगता है। इस राग का आरोह करते समय पंचम को अधिकतर छोड़ दिया जाता है। तोड़ी राग में रे ग रे सा स्वर समुदाय बार-बार प्रयुक्त होते हैं। आरोह में म' ध नि सां स्वर समुदाय का प्रयोग किया जाता है।

**स्वयं जांच अभ्यास 1**

2.1 तोड़ी राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) ध

ख) नि

ग) रे

घ) ग

2.2 तोड़ी राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) ग

घ) सा

2.3 तोड़ी राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) दिन का दूसरा प्रहर

ग) मध्य रात्रि

घ) दोपहर

2.4 तोड़ी राग का आविष्कारक किसने किया था?

क) उ. विलायत खां

ख) पं. रवि शंकर

ग) स्वामी हरिदास

घ) तानसेन

2.5 तोड़ी राग में, निम्न में से कौन सा स्वर कोमल नहीं होता है?

क) षड़ज

ख) गंधार

ग) धैवत

घ) ऋषभ

2.6 तोड़ी राग में किस स्वर को वर्जित करते हैं?

क) कोई भी नहीं

ख) ग

ग) ध

घ) सा

2.7 तोड़ी राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) तोड़ी

ग) मारवा

घ) आसावरी

## 2.4 आलाप

- सा, ऩी सा रे रे सा,

  रे रे ग रे सा, सा,

  ऩी सा, ध ध ऩी ऩी सा,

  सा, रे ग रे सा।

- सा ऩी ध ऩी ऩी सा,

  सा, ऩी सा,

ऩी ध़ प़, प़, ध़ ऩी ध़

म॑ प़ ध़, प़ म़ प़ ध़ ऩी सा।

- सा रे॒ ग॒ म॑ म॑ ग॒,

  रे॒ ग॒ म॑ ग॒

  रे॒ ग॒ रे॒ रे॒ सा, सा,

  ऩी ध़ ऩी सा।

- सा रे॒ सा ऩी ध़ ऩी ध़ प़ म़॑ प़ ध़

  ऩी ग॒ रे॒ ग॒ रे॒ सा,

  सा, सा रे॒ ग॒

  म॑ म॑ रे॒ ग॒ रे॒ सा,

  ग॒ रे॒ ग॒ म॑

  ध़ प म॑ ध़ ध़,

  म॑ रे॒ ग॒ रे॒ सा।

- सा ऩी सा रे॒ ग॒ रे॒, ग॒ म॑ ग॒ रे॒,

  ध़ प म॑ ग॒ रे॒ ध़ नी ध़ प म॑ ग॒,

  ध़ ऩी सा रे॒ सा।

- ग॒ म॑ ध़ ध़ प, म॑, ग॒ म

  ध़ ध़ नी नी ध़ नी सां,

सां, रें गं रें सां, सां नी ध़,

प म ध़ नी नी सां, नी रें रें सां,

सां नी ध़, ध़ प मं प ध़ नी ध़,

ध़ प मं रे ग़ रे सा, सा।

- सां नी ध़ प मं ध़ प,

  नी ध़ प मं

  रे ग़ रे सा, ऩी ध़ ऩी रे,

  सा, रे ग़ रे सा सा।।

**स्वयं जांच अभ्यास 2**

2.8 क्या तोड़ी राग में मं ग़ रे ग़ रे सा स्वर संगति हो सकती है?

क) हां

ख) नहीं

2.9 क्या तोड़ी राग में ध़ ऽ ऩी ध़ प़ स्वर संगति हो सकती है?

क) हां

ख) नहीं

2.10 तोड़ी राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) रे ग़ मं ध़ ऽ प,

ख) म ग़ रे सा

ग) रे ग़ म प ध़ ऽ,

घ) म ग़ रे सा

## 2.5 राग तोड़ी की विलंबित गत तथा तोड़े

### 2.5.1 तोड़ी विलंबित गत तीन ताल

| x | | | | 2 | | | | 0 | | | | 3 | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 |
| **स्थाई** | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | रेग | रे | ऩीसा | ऩीध़ | ऩी- |
| | | | | | | | | | | | दिर | दा | दिर | दा | रा |
| सा | सा | सा | ऩीसा | ध | ऩीध | प | प | मपधप | रेग | सा | | | | | |
| दा | दा | रा | दिर | दा | दिर | दा | रा | दा | दा | रा | | | | | |
| **अन्तरा** | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | रेरे | ग | मंमं | ध | नी |
| | | | | | | | | | | | दिर | दा | दिर | दा | रा |
| सां | सां | सां | सांसां | रें | गंगं | रें | सां | नी | रें | सां | | | | | |
| दा | दा | रा | दिर | दा | दिर | दा | रा | दा | दा | रा | | | | | |
| | | | | | | | | | | | धंधं | मंग | रेंरें | सां | सां |
| | | | | | | | | | | | दिर | दा | दिर | दा | रा |
| नी | रें | सां | मंमं | ध | नीसां | नी | ध | मपधप | रेग | सा | | | | | |
| दा | दा | रा | दिर | दा | दिर | दा | रा | दा | दा | रा | | | | | |

## 2.5.2 तोड़ी राग की विलंबित गत के तोड़े

- रें गं रें सां  नी सां ध नी  ध प मं ग  रे ग रे सा
- नी सां ध नी  ध प मं ग  मं ध प मं  रे ग रे सा
- सा रे ग ग  रे ग ग ग  रे ग रे सा  ऩी ध ऩी सा
- सा रे ग मं  मं ग मं मं  ग मं ग ग  रे ग रे सा
- मं ध नी सां  ग मं ध नी  रे ग मं ध  मं ग रे सा
- मं ध नी नी  ध प मं ग  मं ध प मं  रे ग रे सा
- सां नी ध मं  ध नी सां रें  नी ध प मं  रे ग रे सा
- सा रे ग मं  ध प मं ग  मं ग ग रे  ग रे सा -
- ध प मं ग  रे ग मं प  ध प मं ग  रे ग रे सा  ऩी सा ऩी सा
- सा रे ग मं  ध प मं ग  मं ध नी ध  मं ग रे ग  रे - सा -
- ध प मं रे  ग मं ध नी  ध प मं रे  ग रे रे सा
- नी नी ध प  मं ध नी सां  नी ध प मं  रे ग रे सा
- सां नी ध प  मं रे ग मं  ध प मं रे  ग रे सा -
- नी नी ध नी  ध प मं ध  ध प मं ध  प मं ग रे  ग रे सा -
- ग मं प ध  नी सां रें गं  गं रें गं रें  सां सां रें गं

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| रें सां सां सां | नी नी नी ध | ध ध प प | म॑ म॑ ग ग | रे - सा - |
| • सा रे सा रे | ग रे ग ऩी | सा ऩी रे सा | रे ऩी सा - | |
| सा रे - रे | ग - ग म॑ | - ध नी - ध | सां - नी सां | |
| प ध म॑ नी | ध नी ध प | - म॑ ध नी | - नी सां - | सा रें - सां |
| नी ध प म॑ | रे ग रे सा | ग म॑ ध ग | म॑ ध ग म॑ | |
| • सा रे ग रे | सा सा ऩी सा | ऩी ऩी ध्र प | म़॑ ध्र ऩी सा | |
| रे ग रे ग | रे रे सा सा | ऩी सा ध्र ऩी | सा - सा - | |
| • सा रे ग ग | रे ग रे रे | सा सा ऩी सा | रे ग म॑ ग | |
| म॑ रे ग ग | रे ग रे रे | सा रे ऩी ध्र | ऩी रे सा सा | |
| • सा रे ग म॑ | ध प म॑ ग | ध ध म॑ प | म॑ ग रे ग | |
| म॑ ध नी नी | ध म॑ रे ग | म॑ प ध म॑ | रे ग रे सा | |
| • ध ध प म॑ | ग रे ग म॑ | प ध नी नी | ध प म॑ ध | |
| नी सां सां रें | गं रें सां नी | सां नी ध प | म॑ ध प म॑ | रे ग रे सा |
| • सा रे ग म॑ | रे ग म॑ ध | नी ध प म॑ | ग रे ग म॑ | |
| ध नी सां रें | गं रें सां नी | सां नी ध म॑ | रे ग रे सा | |
| • सा रे ग ग | रे ग रे सा | ऩी सा ध्र ऩी | सा रे ग म॑ | |
| म॑ ग रे ग | रे सा ऩी सा | ध्र ऩी सा रे | ग रे सा - | |

| | | | |
|---|---|---|---|
| • सा रे ग मं | प ध मं ध | नी नी ध प | मं ध नी सां |
| सां नी सां नी | नी ध प मं | ध प मं ग | रे ग रे सा |
| • सां - सां नी | ध प मं ग | ध - ध प मं | रे ग मं रे |
| ग, मं मं ग | रे ग रे सा | - सा रे सा | ऩी सा ध़ ध़ |
| ऩी सा रे ग | - रे ग मं | - ग मं ध - | |
| • ध़ ऩी सा रे | ग रे सा रे | सा रे ग मं | प ध मं ग |
| मं ग मं ध | नी सां नी ध | नी ध नी सां | रें सां नी सां |
| ध नी सां रें | गं रें सां रें | - सां नी रें | सां नी ध प |
| मं - ध प | मं ध मं रे | ग रे सा - | ग मं ध ग |
| मं ध ग मं | | | |
| • सा रे ग रे | - मं ग मं | ध - नी नी | ध प मं - |
| ध ध प मं | ग - ग मं | रे रे रे ग | रे - ग ग |
| रे सा - - | सा रे ग रे | - मं ग मं | ध - सा रे |
| ग रे - मं | ग मं ध - | सा रे ग रे | - मं ग मं |
| • ध़ ऩी ऩी सा रे | सा ऩी नी़ ध़ प | म़ं ध़ ध़ ऩी | सा रे सा सा |
| ऩी सा ऩी ग | ग रे ग रे | मं मं ग मं | ग प प ध |
| ध मं प ध | प मं रे ग | रे सा सा रे | ग - रे ग |
| मं - ग मं | ध - ध - | | |

**स्वयं जांच अभ्यास 3**

2.11 तोड़ी राग की विलंबित गत में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 1

घ) 9

2.12 तोड़ी राग की विलंबित गत अधिकतर किस मात्रा से शुरू होती है?

क) 13

ख) 12

ग) 1

घ) 9

2.13 तोड़ी राग की विलंबित गत को केवल सितार वाद्य पर ही बजाते हैं?

क) हां

ख) नहीं

2.14 तीन ताल में, 8 मात्रा के तोड़े को किस मात्रा से शुरू करें कि वह सम पर समाप्त हो जाए?

क) 8

ख) 9

ग) 10

घ) 1

2.15 तीन ताल में, 16 मात्रा के तोड़े को किस मात्रा से शुरू करें कि वह सम पर समाप्त हो जाए?

क) 16

ख) 9

ग) 1

घ) 12

## 2.6 सारांश

तोड़ी राग भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत के वादन के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। तोड़ी राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में विलंबित गत को धीमी लय में बजाया जाता है।

विलंबित गत में तोड़ों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार के तोड़ों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ बजाया जाता है।

## 2.7 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- विलंबित गत: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर-रचना जो लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा विलंबित लय में बजाई जाती हो उसे विलंबित गत कहते हैं।
- तोड़ा: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, वाद्य पर बजाया जाता है तो उसे तोड़ा कहते हैं।

## 2.8 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

### स्वयं जांच अभ्यास 1

2.1 उत्तर: क)

2.2 उत्तर: ग)

2.3 उत्तर: ग)

2.4 उत्तर: घ)

2.5 उत्तर: क)

2.6 उत्तर: क)

2.7 उत्तर: ख)

### स्वयं जांच अभ्यास 2

2.8 उत्तर: क)

2.9 उत्तर: ख)

2.10 उत्तर: क)

**स्वयं जांच अभ्यास 3**

2.11 उत्तर: ग)

2.12 उत्तर: ख)

2.13 उत्तर: ख)

2.14 उत्तर: ख)

2.15 उत्तर: ग)

## 2.9 संदर्भ


डॉ. निर्मल सिंह से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, अप्रैल 2024।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।


## 2.10 अनुशंसित पठन


शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।


## 2.11 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग तोड़ी का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग तोड़ी के तीन आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग तोड़ी की विलंबित गत लिखिए।

प्रश्न 4. राग तोड़ी की विलंबित गत के पांच तोड़े लिखिए।

# इकाई-3
# राग भैरवी की विलंबित गत

## इकाई की रूपरेखा


| क्रम | विवरण |
|---|---|
| 3.1 | भूमिका |
| 3.2 | उद्देश्य तथा परिणाम |
| 3.3 | भैरवी राग का परिचय (वादन के संदर्भ में) |
| | स्वयं जांच अभ्यास 1 |
| 3.4 | भैरवी राग का आलाप (वादन के संदर्भ में) |
| | स्वयं जांच अभ्यास 2 |
| 3.5 | राग भैरवी की विलंबित गत तथा तोड़े |
| 3.5.1 | भैरवी राग की विलम्बित गत |
| 3.5.2 | भैरवी राग की विलम्बित गत के तोड़े |
| | स्वयं जांच अभ्यास 3 |
| 3.6 | सारांश |
| 3.7 | शब्दावली |
| 3.8 | स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर |
| 3.9 | संदर्भ |
| 3.10 | अनुशंसित पठन |
| 3.11 | पाठगत प्रश्न |

## 3.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA304PR की यह तीसरी इकाई है। इस इकाई में वाद्य संगीत, विशेष रूप से सितार वाद्य के संदर्भ में, राग भैरवी  का परिचय, आलाप, विलंबित गत, तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग भैरवी के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, विलंबित गत, तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही सितार वाद्य पर क्रियात्मक रूप से राग भैरवी का आलाप, विलंबित गत, तोड़ों को बजा सकेंगे।

## 3.2 उद्देश्य तथा परिणाम

### सीखने के उद्देश्य

- भैरवी राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।
- भैरवी राग के आलाप, विलंबित गत, तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- भैरवी  राग के आलाप, विलंबित गत, तोड़ों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को वादन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

### सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वादन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- भैरवी  राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।

- भैरवी  राग के आलाप, विलंबित गत, तोड़ों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- भैरवी  राग के आलाप, विलंबित गत, तोड़ों को बजाने में सक्षम होंगे।
- राग भैरवी  के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और  अनुभव भी प्राप्त होगा।

## 3.3 भैरवी राग का परिचय

राग - भैरवी

थाट – भैरवी

जाति – संपूर्ण- संपूर्ण

वादी - मध्यम

संवादी - षड़ज

स्वर – ऋषभ, गंधार, धैवत, निषाद कोमल (रे ग ध नी), अन्य स्वर शुद्ध

न्यास के स्वर – षडज, मध्यम, पंचम

समय – प्रात:काल

समप्रकृतिक राग – बिलासखानी तोडी

आरोह: सा रे ग म प ध नी सां।

अवरोह: सां, नी ध प, म ग रे सा।

पकड़- म ग रे ग, सा रे सा, ग म प ध प, म ग रे सा।

भैरवी राग, भैरवी थाट का एक महत्वपूर्ण राग है। इस राग की जाति संपूर्ण-संपूर्ण है। भैरवी राग का वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षड़ज है। प्रस्तुत राग में ऋषभ, गंधार, धैवत, निषाद कोमल (रे ग ध नी) तथा अन्य स्वर शुद्ध लगते हैं। इस राग का वादन समय प्रात:काल माना जाता है परंतु इस राग को किसी भी समय बजाया जा सकता है ऐसा विद्वानों का मत है। इस राग में षडज, मध्यम, पंचम स्वरों पर न्यास किया जाता है। इस राग में सभी 12 स्वरों का प्रयोग भी किया जाता है। इस राग का विस्तार अधिकतर मन्द्र और मध्य सप्तक में किया जाता है। मन्द्र सप्तक में यह राग विशेष रूप से अच्छा लगता है। भैरवी राग में म प ध प स्वर समुदाय बार-बार प्रयुक्त होते हैं।

## स्वयं जांच अभ्यास 1

3.1 भैरवी राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) म

ख) प

ग) रे

घ) ग

3.2 भैरवी राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) सा

घ) प

3.3 भैरवी राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का दूसरा प्रहर

ख) सांयकाल

ग) प्रात:काल

घ) दोपहर

3.4 भैरवी राग का आविष्कारक किसने किया था?

क) उ. विलायत खां

ख) पं. रवि शंकर

ग) स्वामी हरिदास

घ) अज्ञात

3.5 भैरवी राग में, निम्न में से कौन सा स्वर कोमल नहीं होता है?

क) षड़ज

ख) गंधार

ग) धैवत

घ) ऋषभ

3.6 भैरवी राग में किस स्वर पर न्यास होता है?

क) प

ख) ग

ग) ध

घ) नी

3.7 भैरवी राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) भैरवी

ग) मारवा

घ) आसावरी

## 3.4 आलाप

- सा रे सा, ध नि सा, ग रे सा, नि ध प,

  प ध नि सा रे सा।

- सा रे ग ऽ रे ग सा, प ध प, म प ग,

  सा रे ग म प ऽ ध प म प ग म ग,

  सा ग प ऽ म, प ऽ ग म ग ऽ रे सा,

  ध नि सा ग रे सा।

- नि सा ग म प ऽ ध प, ग म प ध प,

नि ध प, प ध नि ऽ ध नि ऽ प ध प,

म प नि ध प,

सा ऽ प प ध प म प म ग,

सा रे ग म ग,

सा रे सा, ध नि सा रे सा।

- ग म ध नि सां, रें सां गं रें सां, सां रें गं सां रें मं गं सां रें सां, नि सां नि सां रें सां ध प,

  नि ध प प ऽ प ध ऽऽ प, ध म प म ग, सा ग म प,

  म ग सा रे सा, ध नि ध सा, रे सा ग रे सा।

**स्वयं जांच अभ्यास 2**

3.8 क्या भैरवी राग में ग म' रे ग रे सा स्वर संगति हो सकती है?

क) हां

ख) नहीं

3.9 क्या भैरवी राग में ध ऽ नी ध प स्वर संगति हो सकती है?

क) हां

ख) नहीं

3.10 भैरवी राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) सा रे ग म ग रे सा

ख) म ग रे सा

ग) रे ग म प ध ऽ,

घ) म ग रे सा

## 3.5 राग भैरवी की विलंबित गत तथा तोड़े

### 3.5.1 भैरवी विलंबित गत तीन ताल

| x | | | | 2 | | | | 0 | | | | 3 | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 |
| **स्थाई** | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | सारे | नी | सासा | ग | म |
| | | | | | | | | | | | दिर | दा | दिर | दा | रा |
| प | प | प | धनी | ध | पम | ग | म | ग | रे | सा | | | | | |
| दा | दा | रा | दिर | दा | दिर | दा | रा | दाऽ | दा | रा | | | | | |
| | | | | | | | | | | | नीनी | रे | सासा | रे | सा |
| | | | | | | | | | | | दिर | दा | दिर | दा | रा |
| नी | ध | प | धनी | ध | नी | नी | सा | ग | रे | सा | | | | | |
| दा | दा | रा | दिर | दा | दिर | दा | रा | दा | दा | रा | | | | | |
| **अन्तरा** | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | मम | प | मम | ध | नी |
| | | | | | | | | | | | दिर | दा | दिर | दा | रा |
| सां | सां | सां | सारें | नी | सांसां | रें | सां | ध | ध | प | | | | | |
| दा | दा | रा | दिर | दा | दिर | दा | रा | दाऽ | दा | रा | | | | | |
| | | | | | | | | | | | पप | प | गंगं | रें | सां |
| | | | | | | | | | | | दिर | दा | दिर | दा | रा |
| नी | ध | प | धनी | ध | पम | ग | म | ग | रे | सा | | | | | |
| दा | दा | रा | दिर | दा | दिर | दा | रा | दा | दा | रा | | | | | |

## 3.5.2 भैरवी राग की विलंबित गत के तोड़े

| | | | |
|---|---|---|---|
| • सारे गम | गरे सारे | गम पम | गरे सासा |
| गम पम | पम गम | गरे सारे | गरे साऽ |
| • सारे गम | मप गम | पम गम | गरे साऩी |
| सारे गम | गरे साऩी | धप धऩी | साऩीसाऽ |
| • ऩीसा गम | पऽ मप | गम पम | गरे साऩी |
| सारे सारे | गरे सारे | ऩीसा ऩीसा | रेसा साऽ |
| • सारें गरें | सांनि धनि | सांनि धप | मग रेसा |
| निसा गम | पध पम | गम पध | निध पम |
| गम पध | निसां रेंसां | सांनि धप | मग रेसा |
| • सारे रेग | गम मप | पध धनी | नीसां सारें |
| सांनी नीध | धप पम | मग गरे | रेसा साऽ |
| • सारे गम | पध मप | गम गरे | गग रेसा |
| सारे गरे | गम गम | पम गरे | गग रेसा |
| • सांनी धनी | धप मप | गम गरे | गग रेसा |
| धऩी सारे | साऩीसारे | गग रेग | मप धप |
| पम गम | गरे गग | रेसा रेग | रेसा ऩीसा |

- गम धप मप गम गरे सारे नीसारेग

  सारे गम पध पम पग मरे गग रेसा

**स्वयं जांच अभ्यास 3**

3.11 भैरवी राग की विलंबित गत को केवल सितार वाद्य पर ही बजाते हैं?

क) हां

ख) नहीं

3.12 भैरवी राग की द्रुत गत में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 1

घ) 9

3.13 भैरवी राग की द्रुत गत में सम पर मिजराब का कौन सा बोल आता है?

क) रा

ख) दिर

ग) दा

घ) दारा

3.14 तीन ताल में, 8 मात्रा के तोड़े को किस मात्रा से शुरू करें कि वह सम पर समाप्त हो जाए?

क) 8

ख) 9

ग) 10

घ) 1

3.15 तीन ताल में, 16 मात्रा के तोड़े को किस मात्रा से शुरू करें कि वह सम पर समाप्त हो जाए?

क) 16

ख) 9

ग) 1

घ) 12

## 3.6 सारांश

भैरवी राग भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत के वादन के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। भैरवी राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में विलंबित गत को धीमी लय में बजाया जाता है। विलंबित गत तथा द्रुत गत में तोड़ों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार के तोड़ों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ बजाया जाता है।

## 3.7 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- विलंबित गत: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर-रचना जो लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा विलंबित लय में बजाई जाती हो उसे विलंबित गत कहते हैं।
- तोड़ा: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, वाद्य पर बजाया जाता है तो उसे तोड़ा कहते हैं।

## 3.8 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

**स्वयं जांच अभ्यास 1**

3.1 उत्तर: क)

3.2 उत्तर: ग)

3.3 उत्तर: ग)

3.4 उत्तर: घ)

3.5 उत्तर: क)

3.6 उत्तर: क)

3.7 उत्तर: ख)

**स्वयं जांच अभ्यास 2**

3.8 उत्तर: ख)

3.9 उत्तर: ख)

3.10 उत्तर: क)

**स्वयं जांच अभ्यास 3**

3.11 उत्तर: ख)

3.12 उत्तर: ग)

3.13 उत्तर: ग)

3.14 उत्तर: ख)

3.15 उत्तर: ग)

## 3.9 संदर्भ


डॉ. निर्मल सिंह से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, अप्रैल 2024।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।


## 3.10 अनुशंसित पठन


भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।


## 3.11 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग भैरवी का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग भैरवी के तीन आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग भैरवी की विलंबित गत लिखिए।

प्रश्न 4. राग भैरवी की विलंबित गत के पांच तोड़े लिखिए।

# इकाई-4
# राग दरबारी कान्हड़ा का बड़ा ख्याल

## इकाई की रूपरेखा


| क्रम | विवरण |
|---|---|
| 4.1 | भूमिका |
| 4.2 | उद्देश्य तथा परिणाम |
| 4.3 | दरबारी कान्हड़ा राग का परिचय (गायन के संदर्भ में) |
| | स्वयं जांच अभ्यास 1 |
| 4.4 | दरबारी कान्हड़ा राग का आलाप (गायन के संदर्भ में) |
| | स्वयं जांच अभ्यास 2 |
| 4.5 | राग दरबारी कान्हड़ा का बड़ा ख्याल तथा तानें |
| 4.5.1 | दरबारी कान्हड़ा राग का बड़ा ख्याल |
| 4.5.2 | दरबारी कान्हड़ा राग के बड़े ख्याल की तानें |
| | स्वयं जांच अभ्यास 3 |
| 4.6 | सारांश |
| 4.7 | शब्दावली |
| 4.8 | स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर |
| 4.9 | संदर्भ |
| 4.10 | अनुशंसित पठन |
| 4.11 | पाठगत प्रश्न |

## 4.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA304PR की यह चौथी इकाई है। इस इकाई में गायन संगीत के संदर्भ में, राग दरबारी कान्हड़ा  का परिचय, आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग दरबारी कान्हड़ा के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, बड़ा ख्याल तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग दरबारी कान्हड़ा का आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को गा सकेंगे।

## 4.2 उद्देश्य तथा परिणाम

### सीखने के उद्देश्य

- दरबारी कान्हड़ा राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।
- दरबारी कान्हड़ा राग के आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- दरबारी कान्हड़ा  राग के आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

### सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वादन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा

- दरबारी कान्हड़ा  राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।
- दरबारी कान्हड़ा  राग के आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- दरबारी कान्हड़ा  राग के आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को गाने में सक्षम होंगे।
- राग दरबारी कान्हड़ा  के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

## 4.3 दरबारी कान्हड़ा राग का परिचय

राग - दरबारी कान्हड़ा

थाट – आसावरी

जाति – संपूर्ण- वक्र संपूर्ण

वादी - ऋषभ

संवादी - पंचम

स्वर – गंधार, धैवत, निषाद कोमल (ग ध नी), अन्य स्वर शुद्ध

न्यास के स्वर – षडज, ऋषभ,  पंचम

समय – मध्य रात्रि

समप्रकृतिक राग – अड़ाना

आरोह: सा रे $^{म}$ग ऽ म रे सा, म प, $^{नी}$ध $^{सां}$नी सां।

अवरोह: सां, $^{नी}$ध ऽ नी प, म प $^{म}$ग म रे सा।

पकड़:  सा रे $^{म}$ग ऽ ग ऽ म $^{सा}$रे ऽ सा, $^{रे}$ध नी सा।

दरबारी कान्हड़ा राग, आसावरी थाट का एक महत्वपूर्ण राग है। इस राग की जाति संपूर्ण- वक्र संपूर्ण है। दरबारी कान्हड़ा राग का वादी स्वर ऋषभ तथा संवादी स्वर पंचम है। प्रस्तुत राग में गंधार, धैवत, निषाद कोमल (ग ध नी) तथा अन्य स्वर शुद्ध लगते हैं। इस राग का वादन समय मध्य रात्रि माना जाता है। इस राग में ऋषभ, पंचम स्वरों पर न्यास किया जाता है। इस राग की प्रकृति गंभीर है। कानड़ा, दरबारी या दरबारी कान्हड़ा तीनों से अभिप्रायः एक ही राग से है। इस राग का आविष्कारक मियां तानसेन को माना जाता है। इस राग का विस्तार अधिकतर मन्द्र और मध्य सप्तक में किया जाता है। मन्द्र सप्तक में यह राग विशेष रूप से अच्छा लगता है। इस राग में गंधार स्वर को हमेशा आन्दोलित किया जाता है। दरबारी राग का गन्धार, अति कोमल गन्धार है और इसे हमेशा ऋषभ की सहायता से आन्दोलित किया जाता है (सा रे ग ऽ रे ग ऽ रे ग ऽ रे सा)। इस राग में धैवत स्वर भी आन्दोलित होता है और यह निषाद की सहायता से आन्दोलित होता है ($^{नी}$ध ऽ ध ऽ नि प)। धैवत और गान्धार स्वरों का प्रयोग इस राग में वक्र रूप से किया जाता है। दरबारी के उतरांग में धनि प या सां धनि प' या निधनि प स्वर संगतियां प्रयुक्त होती हैं। इस राग में तानें अधिकतर सारंग अंग से ली जाती हैं। ग तथा ध स्वरों के वक्र होने के कारण इसमें म रे और नि प की संगतियां अधिक दिखाई जाती हैं।

### स्वयं जांच अभ्यास 1

4.1 दरबारी कान्हड़ा राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) ध

घ) ग

4.2 दरबारी कान्हड़ा राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) प

घ) ग

4.3 दरबारी कान्हड़ा राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) मध्य रात्रि

घ) दोपहर

4.4 दरबारी कान्हड़ा राग का आविष्कारक किसने किया था?

क) उ. विलायत खां

ख) पं. रवि शंकर

ग) स्वामी हरिदास

घ) तानसेन

4.5 दरबारी कान्हड़ा राग में, निम्न में से कौन सा स्वर कोमल होता है?

क) गंधार

ख) षड़ज

ग) मध्यम

घ) ऋषभ

4.6 दरबारी कान्हड़ा राग में किस स्वर को हमेशा आन्दोलित किया जाता है?

क) ग़

ख) प

ग) ध़

घ) सा

4.7 दरबारी कान्हड़ा राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) आसावरी

ग) मारवा

घ) तोड़ी

## 4.4 आलाप

- सा ऽ रे रे ऽ ध़ ध़ नी़

  सा ऽ नी़ ऽ सा ऽ रे ध़ नी़

  ऽ नी़ सा ऽ सा ऽ।

- सा ऽ सा, ऩी सा, रे सा,

  ऩी सा रे सा ध़ ऽ

  ध़ ऽ ऩी प़, म़ प़ ध़ ऽ

  सा ऩी ऽ सा ऽ।

- ऩी सा ऩी रे सा। ऩी सा

  रे रे सा ऽ ऩी,

  सा रे, ध़ ऽ ऩी प़ म़ प़,

  ध़ ऽ ध़ ऽ ऩी सा ऽ।

- ऩी सा म़ सा ऩी सा रे ध़ ऽ

  ऩी प़ म़ प़ सा।

- म प, म प ध़ ऽ ध़ नी प,

  म प सां ध़ नी प,

  प नी प नी प म प ग़ ऽ

  म रे सा ऩी

  सा रे ऽ सा, ऩी सा।

- म प ध़ ऽ ध़ ऽ नी सां,

  नी सां रें सां ऽ।

- गं ऽ गं मं रे सां, गं ऽ

ग़ं मं रें सां,

रें नी सां ध़ ऽ नी प, म

प सां ध़ ऽ नी प,

म प म नी प नी प

म प सां, नी प ग़ऽ

ग़ ऽ म रे सा,

ऩी ऩी सा रे सा।

**स्वयं जांच अभ्यास 2**

4.8 क्या दरबारी कान्हड़ा राग में ऩी सा रे सा स्वर संगति हो सकती है?

क) हां

ख) नहीं

4.9 क्या दरबारी कान्हड़ा राग में ध़ ऽ ऩी ध़ प़ स्वर संगति हो सकती है?

क) हां

ख) नहीं

4.10 दरबारी कान्हड़ा राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) ग़ म रे सा

ख) म ग़ रे सा

ग) ग़ म रे़ सा

घ) म ग़ रे़ सा

## 4.5 राग दरबारी कान्हड़ा का बड़ा ख्याल तथा तानें

### 4.5.1 दरबारी कान्हड़ा बड़ा ख्याल विलम्बित लय एक ताल

**स्थायी**

तू ही करतार रे नैया मोरी कर पार रे

**अंतरा**

तू ही दाता तू ही विधाता तू ही पालनहार

| x | | 0 | | 2 | | 0 | | 3 | | 4 | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
| **स्थायी** | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | रे | सा | रे- | रे |
| | | | | | | | | तू | ही | क- | र |
| ग | म | रे | प | प | म | प | - | | | | |
| ता | - | - | र | - | रे | - | - | | | | |
| | | | | | | | | म | प | नीनीमप | ग |
| | | | | | | | | नै | या | मो--- | री |
| म | रे | रे | नी | रे | रे | नी | - | | | | |
| क | र | पा | - | र | - | रे | - | | | | |
| **अंतरा** | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | म | प | ध | नी |
| | | | | | | | | तू | - | ही | - |
| सां | - | रें | सां | रेंसांनीसां | - | रें | रें- | | | | |
| दा | - | ता | - | तू--- | ही | वि | धाता | | | | |
| | | | | | | | | नीनीपमप | प | म | प |
| | | | | | | | | तू---- | - | ही | - |
| ग | - | म | रे | रे | नी | - | रेसा | | | | |
| पा | - | ल | न | - | हा | - | र- | | | | |

## 4.5.2 दरबारी कान्हड़ा राग की तानें

- धनीसांनी पमगम रेसामप धनीसां-
- रेंरेंसांनी धनीसांरें सांनीपम गमरेसा
- सांनीपम गमरेसा मपधनी सांसांरेंसां
- सारेग- ममरेसा रेंरेसाऩी सा-ऩीप़
  ऩीऩीप़म ध़ऩीरेसा
- ऩीसारेसा गमरेसा ममरेसा मपनीप
  मपगम रेसाऩीसा
- सारेसासा ऩीसारेसा ममपप धनीनीप
  गमरेसा ऩीसारेसा।
- ममरेसा ऩीसानीनी पमगम रेसाऩीसा
  रेंरेंसांनी सांसांनीनी पपमप गमरेसा
- ऩीसारेसा गमरेसा मपनीप गमरेसा
  सारेसासा ममपप धनीपप गमरेसा
- ऩीरेसासा गमरेसा मपनीप धधनीप
  धनीसांसां धनीपप मपनीप गमरेसा

- ऩीसारेसा ध़ध़ऩीसा गमरेसा मपनीप
  धनीपप मपनीप गमरेसा ऩीरेसासा
- मपमप गमरेसा नीनीपप मपमप
  गमरेसा नीरेंसांसां धनीपप मपमप
- गमरेसा गंमरेंसां धनीपग मरेसा-
- ऩीसारेसा गमरेसा मपनीप गमरेसा
  मपधनी सारेंसांसां धनीपप गमरेसा
- नीसारेंसां गंमरेंसां मपनीप गमरेसा
  ध़ऩिरेरे सासागम रेरेसासा मपमप
- धनीरेसां नीसारेसां धधनीप गमरेसा
  ध़ऩिऩिरे ध़ऩिऩिरे ध़ऩिऩिरे
- गमरेसा ऩीसाध़ऩी सा-गम रेसाऩीसा
  ध़ऩीसा- गमरेसा ऩीसाध़ऩी
- गमरेसा ऩीसाध़ऩी सा--- गमरेसा
  ऩीसाध़ऩी सा--- गमरेसा ऩीसाध़ऩी
- मपधनी सारेंनीसां मंमरेंसां नीसांधध
- पनीमप गमरेसा ऩीसाध़ऩी रेरेसा-

**स्वयं जांच अभ्यास 3**

4.11 दरबारी कान्हड़ा राग के बड़े ख्याल में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 1

घ) 9

4.12 दरबारी कान्हड़ा राग  का बड़ा ख्याल मध्य लय में ही होता है?

क) हां

ख) नहीं

4.13 दरबारी कान्हड़ा राग का बड़ा ख्याल केवल गाते  ही हैं?

क) हां

ख) नहीं

4.14 एक ताल में, 8 मात्रा की तान को किस मात्रा से शुरू करें कि वह सम पर समाप्त हो जाए?

क) 8

ख) 5

ग) 10

घ) 1

4.15 एक ताल में, 16 मात्रा की तान को किस मात्रा से शुरू करें कि वह सम पर समाप्त हो जाए?

क) 11

ख) 3

ग) 9

घ) 12

## 4.6 सारांश

दरबारी कान्हड़ा राग भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत के गायन  के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। दरबारी कान्हड़ा राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में बड़ा ख्याल, धीमी लय में

गाया जाता है। बड़ा ख्याल में तानों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तानों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ गाया जाता है।

## 4.7 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- बड़ा ख्याल: गायन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी गीत रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा विलंबित लय में गाई  जाती हो उसे छोटा ख्याल कहते हैं।
- तान: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, गाया जाता है तो उसे तान कहते हैं।

## 4.8 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

### स्वयं जांच अभ्यास 1

4.1 उत्तर: क)

4.2 उत्तर: ग)

4.3 उत्तर: ग)

4.4 उत्तर: घ)

4.5 उत्तर: क)

4.6 उत्तर: क)

4.7 उत्तर: ख)

### स्वयं जांच अभ्यास 2

4.8 उत्तर: क)

4.9 उत्तर: ख)

4.10 उत्तर: क)

**स्वयं जांच अभ्यास 3**

4.11 उत्तर: ग)

4.12 उत्तर: ख)

4.13 उत्तर: क)

4.14 उत्तर: ख)

4.15 उत्तर: ग)

## 4.9 संदर्भ


श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।


## 4.10 अनुशंसित पठन


भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।


## 4.11 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग दरबारी कान्हड़ा का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग दरबारी कान्हड़ा के तीन आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग दरबारी कान्हड़ा के बड़े ख्याल को लिखिए।

प्रश्न 4. राग दरबारी कान्हड़ा के बड़े ख्याल की पांच तानों को लिखिए।

# इकाई-5
# राग तोड़ी का बड़ा ख्याल

## इकाई की रूपरेखा


| क्रम | विवरण |
|---|---|
| 5.1 | भूमिका |
| 5.2 | उद्देश्य तथा परिणाम |
| 5.3 | तोड़ी राग का परिचय (गायन के संदर्भ में) |
| | स्वयं जांच अभ्यास 1 |
| 5.4 | तोड़ी राग का आलाप (गायन के संदर्भ में) |
| | स्वयं जांच अभ्यास 2 |
| 5.5 | राग तोड़ी का बड़ा ख्याल, तथा तानें |
| 5.5.1 | तोड़ी राग का बड़ा ख्याल |
| 5.5.2 | तोड़ी राग के बड़े ख्याल की तानें |
| | स्वयं जांच अभ्यास 3 |
| 5.6 | सारांश |
| 5.7 | शब्दावली |
| 5.8 | स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर |
| 5.9 | संदर्भ |
| 5.10 | अनुशंसित पठन |
| 5.11 | पाठगत प्रश्न |

## 5.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA304PR की यह पांचवीं इकाई है। इस इकाई में गायन संगीत के संदर्भ में, राग तोड़ी  का परिचय, आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग तोड़ी के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग तोड़ी का आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को को गा सकेंगे।

## 5.2 उद्देश्य तथा परिणाम

### सीखने के उद्देश्य

- तोड़ी राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।
- तोड़ी राग के आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- तोड़ी  राग के आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

### सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वादन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- तोड़ी  राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।

- तोड़ी  राग के आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- तोड़ी  राग के आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को गाने में सक्षम होंगे।
- राग तोड़ी  के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और  अनुभव भी प्राप्त होगा।

## 5.3 तोड़ी राग का परिचय

राग - तोड़ी

थाट – तोड़ी

जाति – संपूर्ण- संपूर्ण

वादी - धैवत

संवादी - गंधार

स्वर – ऋषभ, गंधार, धैवत कोमल (रे ग ध), मध्यम तीव्र, (म') अन्य स्वर शुद्ध

न्यास के स्वर – षडज, गंधार, धैवत

समय – दिन का दूसरा प्रहर

समप्रकृतिक राग – गुर्जरी तोड़ी

आरोह: सा रे ग म' ध ऽ प, म' ध नी सां।

अवरोह: सां, नी ध प ऽ, म' ग, रे ग, रे सा।

पकड़:  ध नी सा, म' ग, रे ग रे सा।

तोड़ी राग, तोड़ी थाट का एक महत्वपूर्ण राग है। इस राग की जाति संपूर्ण-संपूर्ण है। तोड़ी राग का वादी स्वर धैवत तथा संवादी स्वर गंधार है। प्रस्तुत राग में ऋषभ, गंधार, धैवत कोमल (रे ग ध), मध्यम तीव्र (म') तथा अन्य स्वर शुद्ध लगते हैं। इस राग का वादन समय दिन का दूसरा प्रहर माना जाता है। इस राग में षडज, गंधार, धैवत स्वरों पर न्यास किया जाता है। इस राग की प्रकृति शांत है।

इस राग का आविष्कारक मियां तानसेन को माना जाता है। इसलिए इस राग को मियां की तोड़ी भी कहा जाता है। इस राग का विस्तार अधिकतर मन्द्र और मध्य सप्तक में किया जाता है। मन्द्र सप्तक में यह राग विशेष रूप से अच्छा लगता है। इस राग का आरोह करते समय पंचम को अधिकतर छोड़ दिया जाता है। तोड़ी राग में रे ग रे सा स्वर समुदाय बार-बार प्रयुक्त होते हैं। आरोह में म' ध नि सां स्वर समुदाय का प्रयोग किया जाता है।

### स्वयं जांच अभ्यास 1

5.1 तोड़ी राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) ध

ख) नि

ग) रे

घ) ग

5.2 तोड़ी राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) ग

घ) सा

5.3 तोड़ी राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) दिन का दूसरा प्रहर

ग) मध्य रात्रि

घ) दोपहर

5.4 तोड़ी राग का आविष्कारक किसने किया था?

क) उ. विलायत खां

ख) पं. रवि शंकर

ग) स्वामी हरिदास

घ) तानसेन

5.5 तोड़ी राग में, निम्न में से कौन सा स्वर कोमल नहीं होता है?

क) षड़ज

ख) गंधार

ग) धैवत

घ) ऋषभ

5.6 तोड़ी राग में किस स्वर को वर्जित करते हैं?

क) कोई भी नहीं

ख) ग

ग) ध

घ) सा

5.7 तोड़ी राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) तोड़ी

ग) मारवा

घ) आसावरी

## 5.4 आलाप

- सा, ऩी सा रे रे सा, रे रे ग रे सा,

  सा, ऩी सा, ध़ ध़ ऩी ऩी सा, सा,

  रे ग रे सा।

- सा ऩी ध़ ऩी ऩी सा, सा,

  ऩी सा, ऩी ध़ प़, प़, ध़ ऩी ध़

म॑ प ध॒, प म प ध॒ नी॒ सा।

- सा रे॒ ग॒ म॑ म॑ ग॒,

  रे॒ ग॒ म॑ ग॒

  रे॒ ग॒ रे॒ रे॒ सा,

  सा, नी॒ ध॒ नी॒ सा।

- सा रे॒ सा नी॒ ध॒ नी॒ ध॒ प म॑ प ध॒

  नी॒ ग॒ रे॒ ग॒ रे॒ सा,

  सा, सा रे॒ ग॒

  म॑ म॑ रे॒ ग॒ रे॒ सा,

  ग॒ रे॒ ग॒ म॑

  ध॒ प म॑ ध॒ ध॒,

  म॑ रे॒ ग॒ रे॒ सा।

- सा नी॒ सा रे॒ ग॒ रे॒,

  ग॒ म॑ ग॒ रे॒,

  ध॒ प म॑ ग॒ रे॒ ध॒

  नी ध॒ प म॑ ग॒,

  ध॒ नी॒ सा रे॒ सा।

- ग॒ म॑ ध॒ ध॒ प, म॑, ग॒ म

ध़ ध़ नी नी ध़ नी सां,

सां, रें़ गं़ रें़ सां,

सां नी ध़, प म ध़

नी नी सां, नी रें़ रें़ सां,

सां नी ध़, ध़ प म॑ प ध़ नी ध़,

ध़ प म॑ रे़ ग़ रे़ सा, सा।

- सां नी ध़ प म॑ ध़ प,

  नी ध़ प म॑ रे़ ग़ रे़ सा,

  ऩी ध़ ऩी रे़, सा, रे़ ग़ रे़ सा सा।।

**स्वयं जांच अभ्यास 2**

5.8 क्या तोड़ी राग में म॑ ग़ रे़ ग़ रे़ सा स्वर संगति हो सकती है?

क) हां

ख) नहीं

5.9 क्या तोड़ी राग में ध़ ऽ ऩी ध़ प़ स्वर संगति हो सकती है?

क) हां

ख) नहीं

5.10 तोड़ी राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) रे़ ग़ म॑ ध़ ऽ प,

ख) म ग़ रे सा

ग) रे़ ग़ म प ध़ ऽ,

घ) म ग़ रे़ सा

## 5.5 राग तोड़ी का बड़ा ख्याल तथा तानें

### 5.5.1 तोड़ी राग बड़ा ख्याल विलम्बित लय एक ताल

**स्थायी**

अब मोरे राम राम रे विराम राम

**अंतरा**

निसदिन तिहारी टेर करत मनरंग हम चेरी

| x | | 0 | | 2 | | 0 | | 3 | | 4 | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
| **स्थायी** | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | (नी)ध़ ऩी | सा रे |
| | | | | | | | | | | अ ब | मो रे |
| (ग)रे - | ग (ग)रे | सा ध | (ध)मंग | (रे)गरे | - सा | (सा)ग - | रे ग | - रे | रे सा | | |
| रा ऽ | म रा | ऽ म | रे ऽ | वि रा | ऽ म | रा ऽ | ऽ ऽ | ऽ ऽ | ऽ म | | |
| **अंतरा** | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | (ध)मं ग | (ध)मं ध |
| | | | | | | | | | | नि स | दि न |
| सांनी सां | - सां | नी ध | नी सां | सां (रें)गं | रें सां | नीध प- | ध मंग | रे ग | रे सा | | |
| ति हा | ऽ री | टे ऽ | र क | र ऽत | म न | रंऽ ऽऽ | ग हऽ | म चे | ऽ री | | |

## 5.5.2 तोड़ी राग की तानें

- रें गं रें सां | नी सां ध नी | ध प मं ग | रे ग रे सा
- नी सां ध नी | ध प मं ग | मं ध प मं | रे ग रे सा
- सा रे ग ग | रे ग ग ग | रे ग रे सा | ऩी ध़ ऩी सा
- सा रे ग मं | मं ग मं मं | ग मं ग ग | रे ग रे सा
- मं ध नी सां | ग मं ध नी | रे ग मं ध | मं ग रे सा
- मं ध नी नी | ध प मं ग | मं ध प मं | रे ग रे सा
- सां नी ध मं | ध नी सां रें | नी ध प मं | रे ग रे सा
- सा रे ग मं | ध प मं ग | मं ग ग रे | ग रे सा -
- ध प मं ग | रे ग मं प | ध प मं ग | रे ग रे सा | ऩी सा ऩी सा
- सा रे ग मं | ध प मं ग | मं ध नी ध | मं ग रे ग | रे - सा -
- ध प मं रे | ग मं ध नी | ध प मं रे | ग रे रे सा
- नी नी ध प | मं ध नी सां | नी ध प मं | रे ग रे सा
- सां नी ध प | मं रे ग मं | ध प मं रे | ग रे सा -
- नी नी ध नी | ध प मं ध | ध प मं ध | प मं ग रे | ग रे सा -
- ग मं प ध | नी सां रें गं | गं रें गं रें | सां सां रें गं

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| रें सां सां सां | नी नी नी ध | ध ध प प | म॑ म॑ ग ग | रे - सा - |
| • सा रे सा रे | ग रे ग ऩी | सा ऩी रे सा | रे ऩी सा - | |
| सा रे - रे | ग - ग म॑ | - ध नी - ध | सां - नी सां | |
| प ध म॑ नी | ध नी ध प | - म॑ ध नी | - नी सां - | सा रें - सां |
| नी ध प म॑ | रे ग रे सा | ग म॑ ध ग | म॑ ध ग म॑ | |
| • सा रे ग रे | सा सा ऩी सा | ऩी ऩी ध्र प | म़॑ ध्र ऩी सा | |
| रे ग रे ग | रे रे सा सा | ऩी सा ध्र ऩी | सा - सा - | |
| • सा रे ग ग | रे ग रे रे | सा सा ऩी सा | रे ग म॑ ग | |
| म॑ रे ग ग | रे ग रे रे | सा रे ऩी ध्र | ऩी रे सा सा | |
| • सा रे ग म॑ | ध प म॑ ग | ध ध म॑ प | म॑ ग रे ग | |
| म॑ ध नी नी | ध म॑ रे ग | म॑ प ध म॑ | रे ग रे सा | |
| • ध ध प म॑ | ग रे ग म॑ | प ध नी नी | ध प म॑ ध | |
| नी सां सां रें | गं रें सां नी | सां नी ध प | म॑ ध प म॑ | रे ग रे सा |
| • सा रे ग म॑ | रे ग म॑ ध | नी ध प म॑ | ग रे ग म॑ | |
| ध नी सां रें | गं रें सां नी | सां नी ध म॑ | रे ग रे सा | |
| • सा रे ग ग | रे ग रे सा | ऩी सा ध्र ऩी | सा रे ग म॑ | |
| म॑ ग रे ग | रे सा ऩी सा | ध्र ऩी सा रे | ग रे सा - | |

| | | | |
|---|---|---|---|
| • सा रे ग म॑ | प ध म॑ ध | नी नी ध प | म॑ ध नी सां |
| सां नी सां नी | नी ध प म॑ | ध प म॑ ग | रे ग रे सा |
| • सां - सां नी | ध प म॑ ग | ध - ध प म॑ | रे ग म॑ रे |
| ग, म॑ म॑ ग | रे ग रे सा | - सा रे सा | ऩी सा ध़ ध़ |
| ऩी सा रे ग | - रे ग म॑ | - ग म॑ ध - | |
| • ध़ ऩी सा रे | ग रे सा रे | सा रे ग म॑ | प ध म॑ ग |
| म॑ ग म॑ ध | नी सां नी ध | नी ध नी सां | रें सां नी सां |
| ध नी सां रें | गं रें सां रें | - सां नी रें | सां नी ध प |
| म॑ - ध प | म॑ ध म॑ रे | ग रे सा - | ग म॑ ध ग |
| म॑ ध ग म॑ | | | |
| • सा रे ग रे | - म॑ ग म॑ | ध - नी नी | ध प म॑ - |
| ध ध प म॑ | ग - ग म॑ | रे रे रे ग | रे - ग ग |
| रे सा - - | सा रे ग रे | - म॑ ग म॑ | ध - सा रे |
| ग रे - म॑ | ग म॑ ध - | सा रे ग रे | - म॑ ग म॑ |
| • ध़ ऩी ऩी सा रे | सा ऩी ऩी ध़ प | म़॑ ध़ ध़ ऩी | सा रे सा सा |
| ऩी सा ऩी ग | ग रे ग रे | म॑ म॑ ग म॑ | ग प प ध |
| ध म॑ प ध | प म॑ रे ग | रे सा सा रे | ग - रे ग |
| म॑ - ग म॑ | ध - ध - | | |

**स्वयं जांच अभ्यास 3**

5.11 तोड़ी राग के बड़े ख्याल में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 1

घ) 9

5.12 तोड़ी राग का बड़ा ख्याल मध्य लय में ही होता है?

क) हां

ख) नहीं

5.13 तोड़ी राग का बड़ा ख्याल केवल एक ताल में ही गाते हैं?

क) हां

ख) नहीं

5.14 एक ताल में, 8 मात्रा की तान को किस मात्रा से शुरू करें कि वह सम पर समाप्त हो जाए?

क) 8

ख) 5

ग) 10

घ) 1

5.15 एक ताल में, 16 मात्रा की तान को किस मात्रा से शुरू करें कि वह सम पर समाप्त हो जाए?

क) 16

ख) 1

ग) 9

घ) 12

## 5.6 सारांश

तोड़ी राग भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत के गायन के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। तोड़ी राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में बड़ा ख्याल, धीमी लय में गाया जाता है। बड़ा ख्याल में तानों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तानों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ गाया जाता है।

## 5.7 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- बड़ा ख्याल: गायन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी गीत रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा विलंबित लय में गाई  जाती हो उसे छोटा ख्याल कहते हैं।
- तान: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, गाया जाता है तो उसे तान कहते हैं।

## 5.8 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

**स्वयं जांच अभ्यास 1**

5.1 उत्तर: क)

5.2 उत्तर: ग)

5.3 उत्तर: ग)

5.4 उत्तर: घ)

5.5 उत्तर: क)

5.6 उत्तर: क)

5.7 उत्तर: ख)

**स्वयं जांच अभ्यास 2**

5.8 उत्तर: क)

5.9 उत्तर: ख)

5.10 उत्तर: क)

**स्वयं जांच अभ्यास 3**

5.11 उत्तर: ग)

5.12 उत्तर: ख)

5.13 उत्तर: क)

5.14 उत्तर: ख)

5.15 उत्तर: ग)

## 5.9 संदर्भ


श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।


## 5.10 अनुशंसित पठन


भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।


## 5.11 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग तोड़ी का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग तोड़ी के तीन आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग तोड़ी के बड़े ख्याल को लिखिए।

प्रश्न 4. राग तोड़ी के बड़े ख्याल की पांच तानों को लिखिए।

# इकाई-6
# राग भैरवी का बड़ा ख्याल

## इकाई की रूपरेखा


| क्रम | विवरण |
|---|---|
| 6.1 | भूमिका |
| 6.2 | उद्देश्य तथा परिणाम |
| 6.3 | भैरवी राग का परिचय (गायन के संदर्भ में) |
| | स्वयं जांच अभ्यास 1 |
| 6.4 | भैरवी राग का आलाप (गायन के संदर्भ में) |
| | स्वयं जांच अभ्यास 2 |
| 6.5 | राग भैरवी का बड़ा ख्याल तथा तानें |
| 6.5.1 | भैरवी राग का बड़ा ख्याल |
| 6.5.2 | भैरवी राग के बड़े ख्याल की तानें |
| | स्वयं जांच अभ्यास 3 |
| 6.6 | सारांश |
| 6.7 | शब्दावली |
| 6.8 | स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर |
| 6.9 | संदर्भ |
| 6.10 | अनुशंसित पठन |
| 6.11 | पाठगत प्रश्न |

## 6.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA304PR की यह छटी इकाई है। इस इकाई में गायन संगीत के संदर्भ में, राग भैरवी  का परिचय, आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग भैरवी के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग भैरवी का आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को को गा सकेंगे।

## 6.2 उद्देश्य तथा परिणाम

### सीखने के उद्देश्य

- भैरवी राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।
- भैरवी राग के आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- भैरवी  राग के आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

### सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- भैरवी  राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।

- भैरवी  राग के आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- भैरवी  राग के आलाप, बड़ा ख्याल तथा तानों को गाने में सक्षम होंगे।
- राग भैरवी  के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और  अनुभव भी प्राप्त होगा।

## 6.3 भैरवी राग का परिचय

राग - भैरवी

थाट – भैरवी

जाति – संपूर्ण- संपूर्ण

वादी - मध्यम

संवादी - षड़ज

स्वर – ऋषभ, गंधार, धैवत, निषाद कोमल (रे ग ध नी), अन्य स्वर शुद्ध

न्यास के स्वर – षडज, मध्यम, पंचम

समय – प्रात:काल

समप्रकृतिक राग – बिलासखानी तोडी

आरोह: सा रे ग म प ध नी सां।

अवरोह: सां, नी ध प, म ग रे सा।

पकड़- म ग रे ग, सा रे सा, ग म प ध प, म ग रे सा।

भैरवी राग, भैरवी थाट का एक महत्वपूर्ण राग है। इस राग की जाति संपूर्ण-संपूर्ण है। भैरवी राग का वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षड़ज है। प्रस्तुत राग में ऋषभ, गंधार, धैवत, निषाद कोमल (रे ग ध नी) तथा अन्य स्वर शुद्ध लगते हैं। इस राग का वादन समय प्रात:काल माना जाता है परंतु इस राग को किसी भी समय बजाया जा सकता है ऐसा विद्वानों का मत है। इस राग में षडज, मध्यम, पंचम स्वरों पर न्यास किया जाता है। इस राग में सभी 12 स्वरों का प्रयोग भी किया जाता है। इस राग का विस्तार अधिकतर मन्द्र और मध्य सप्तक में किया जाता है। मन्द्र सप्तक में यह राग विशेष रूप से अच्छा लगता है। भैरवी राग में म प ध प स्वर समुदाय बार-बार प्रयुक्त होते हैं।

## स्वयं जांच अभ्यास 1

6.1 भैरवी राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) म

ख) प

ग) रे

घ) ग

6.2 भैरवी राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) सा

घ) प

6.3 भैरवी राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का दूसरा प्रहर

ख) सांयकाल

ग) प्रात:काल

घ) दोपहर

6.4 भैरवी राग का आविष्कारक किसने किया था?

क) उ. विलायत खां

ख) पं. रवि शंकर

ग) स्वामी हरिदास

घ) अज्ञात

6.5 भैरवी राग में, निम्न में से कौन सा स्वर कोमल नहीं होता है?

क) षड़ज

ख) गंधार

ग) धैवत

घ) ऋषभ

6.6 भैरवी राग में किस स्वर पर न्यास होता है?

क) प

ख) ग

ग) ध

घ) नी

6.7 भैरवी राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) भैरवी

ग) मारवा

घ) आसावरी

## 6.4 आलाप

सा रे सा, ध नि सा, ग रे सा, नि ध प, प ध नि सा रे सा।

- सा रे ग ऽ रे ग सा, प ध प,

  म प ग, सा रे ग म प ऽ

  ध प म प ग म ग,

  सा ग प ऽ म, प ऽ ग म

  ग ऽ रे सा, ध नि सा ग रे सा।

- नि सा ग म प ऽ ध प,

ग म प ध प, नि ध प,

प ध नि ऽ ध नि ऽ प ध प,

म प नि ध प,

सा ऽ प प ध प म प म ग,

सा रे ग म ग,

सा रे सा, ध नि सा रे सा।

- ग म ध नि सां, रें सां गं रें सां, सां रें गं सां रें मं गं सां रें सां, नि सां नि सां रें सां ध प, नि ध प प ऽ प ध ऽऽ प, ध म प म ग, सा ग म प, म ग सा रे सा, ध नि ध सा, रे सा ग रे सा।

**स्वयं जांच अभ्यास 2**

6.8 क्या भैरवी राग में ग म' रे ग रे सा स्वर संगति हो सकती है?

क) हां

ख) नहीं

6.9 क्या भैरवी राग में ध ऽ नी ध प स्वर संगति हो सकती है?

क) हां

ख) नहीं

6.10 भैरवी राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) सा रे ग म ग रे सा

ख) म ग रे सा

ग) रे ग म प ध ऽ,

घ) म ग रे सा

## 6.5 राग भैरवी का बड़ा ख्याल तथा तानें

### 6.5.1 भैरवी बड़ा ख्याल विलम्बित लय एक ताल

**स्थायी**

अब तो जागो मनवा

जीवन बीता प्रभु नाम बिना

**अंतरा**

सोवत है सो खोवत है

जागत है सो पावत है

**स्थायी**

| | | | |
|---|---|---|---|
| **3** | | **4** | |
| **9** | **10** | **11** | **12** |
| साग | साग मपधपमग | ग म रेसा रेसाऩी | सा रे |
| अ ब | तो - - - - - - - | जा - गो - - - - | म न |
| **x** | | **0** | |
| 1 | 2 | 3 | 4 |
| म - - -पगरेसा | सा ग प प मपमग सागमपध प | प धपध म | म म |
| वा - - - - - - | जी - व न - - - - - - - - -- - | बी ता - - - | प्र भु |
| **2** | | **0** | |
| 5 | 6 | 7 | 8 |
| मपधनीध प मगग | ग - म - | म प मपमगम | ध पधपमग सा रे सा |
| ना - - - - - - म | ना - म - | बि ना - - - - | - - - - - - - - - - - |

**अंतरा**

| | | | |
|---|---|---|---|
| | | | 12<br>ग म ध ध<br>सो व - त |
| x<br>1<br>नीसां नीसां नीसारेंसां<br>है - - - - - - - - - - - | 2<br>सां नीधपमगमपधनीसां<br>सो - - - - - - - - - - - - | 0<br>3<br>पधनीसांगरेंसां नीध<br>खो - - - - - - - - - | 4<br>ध ध<br>व त |
| 2<br>5<br>मधप नीधप पम नीध पम<br>है - - - - - - - - - - - - - | 6<br>ग म म<br>जा ग त | 0<br>7<br>म म ग म<br>है - - - - | 8<br>प मपम गमधनी<br>सो - - - - - - - |
| 3<br>9<br>नीधपमग म ग<br>पा - - - - - - | 10<br>ग म<br>व त | 4<br>11<br>रे - सा<br>है - - | |

## 6.5.2 भैरवी राग की तानें

| | | | |
|---|---|---|---|
| • गम धप | मप गम | गरे सारे | ऩीसारेग |
| सारे गम | पध पम | पग मरे | गग रेसा |
| • सारे गम | गरे सारे | गम पम | गरे सासा |
| गम पम | पम गम | गरे सारे | गरे साऽ |
| • सारे गम | मप गम | पम गम | गरे साऩी |
| सारे गम | गरे साऩी | धप धऩी | साऩीसाऽ |
| • ऩीसा गम | पऽ मप | गम पम | गरे साऩी |
| सारे सारे | गरे सारे | ऩीसा ऩीसा | रेसा साऽ |
| • सांरें गरें | सांनि धनि | सांनि धप | मग रेसा |
| निसा गम | पध पम | गम पध | निध पम |
| गम पध | निसां रेंसां | सांनि धप | मग रेसा |
| • सारे रेग | गम मप | पध धनी | नीसांसारें |
| सांनी नीध | धप पम | मग गरे | रेसा साऽ |
| • सारे गम | पध मप | गम गरे | गग रेसा |
| सारे गरे | गम गम | पम गरे | गग रेसा |
| • सांनी धनी | धप मप | गम गरे | गग रेसा |

| | | | |
|---|---|---|---|
| धऩी सारे | साऩीसारे | गग रेग | मप धप |
| पम गम | गरे गग | रेसा रेग | रेसा ऩीसा |

**स्वयं जांच अभ्यास 3**

6.11 भैरवी राग के विलंबित ख्याल को केवल एकताल में ही गाते हैं?

क) हां

ख) नहीं

6.12 भैरवी राग के विलंबित ख्याल में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 1

घ) 9

6.13 भैरवी राग के विलंबित ख्याल में सम पर कौन सा 'शब्द' आता है?

क) केवल 'म' शब्द ही आता है

ख) केवल 'घ' शब्द ही आता है

ग) कोई भी शब्द आ सकता है

घ) सम पर कोई भी शब्द नहीं आता है

6.14 एक ताल में, 8 मात्रा के तोड़े को किस मात्रा से शुरू करें कि वह सम पर समाप्त हो जाए?

क) 8

ख) 5

ग) 10

घ) 1

6.15 एक ताल में, 12 मात्रा के तोड़े को किस मात्रा से शुरू करें कि वह सम पर समाप्त हो जाए?

क) 16

ख) 9

ग) 1

घ) 12

## 6.6 सारांश

भैरवी राग भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत के गायन  के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। भैरवी राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में बड़ा ख्याल, धीमी लय में गाया जाता है। बड़ा ख्याल में विभिन्न प्रकार की तानों  को इसमें विभिन्न लयकारियों के साथ गाया जाता है।

## 6.7 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- बड़ा ख्याल: गायन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी गीत रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा विलंबित लय में गाई  जाती हो उसे छोटा ख्याल कहते हैं।
- तान: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, गाया जाता है तो उसे तान कहते हैं।

## 6.8 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

**स्वयं जांच अभ्यास 1**

6.1 उत्तर: क)

6.2 उत्तर: ग)

6.3 उत्तर: ग)

6.4 उत्तर: घ)

6.5 उत्तर: क)

6.6 उत्तर: क)

6.7 उत्तर: ख)

**स्वयं जांच अभ्यास 2**

6.8 उत्तर: ख)

6.9 उत्तर: ख)

6.10 उत्तर: क)

**स्वयं जांच अभ्यास 3**

6.11 उत्तर: ख)

6.12 उत्तर: ग)

6.13 उत्तर: ग)

6.14 उत्तर: ख)

6.15 उत्तर: ग)

## 6.9 संदर्भ


श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।


## 6.10 अनुशंसित पठन


भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।


## 6.11 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग भैरवी का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग भैरवी के तीन आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग भैरवी के बड़े ख्याल को लिखिए।

प्रश्न 4. राग भैरवी के बड़े ख्याल की पांच तानों को लिखिए।

# इकाई-7
# राग दरबारी कान्हड़ा  की द्रुत गत

## इकाई की रूपरेखा


| क्रम | विवरण |
|---|---|
| 7.1 | भूमिका |
| 7.2 | उद्देश्य तथा परिणाम |
| 7.3 | दरबारी कान्हड़ा राग का परिचय (वादन के संदर्भ में) |
| | स्वयं जांच अभ्यास 1 |
| 7.4 | दरबारी कान्हड़ा राग का आलाप (वादन के संदर्भ में) |
| | स्वयं जांच अभ्यास 2 |
| 7.5 | राग दरबारी कान्हड़ा की द्रुत गत तथा तोड़े |
| 7.5.1 | दरबारी कान्हड़ा राग की द्रुत गत |
| 7.5.2 | दरबारी कान्हड़ा राग की द्रुत गत के तोड़े |
| | स्वयं जांच अभ्यास 3 |
| 7.6 | सारांश |
| 7.7 | शब्दावली |
| 7.8 | स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर |
| 7.9 | संदर्भ |
| 7.10 | अनुशंसित पठन |
| 7.11 | पाठगत प्रश्न |

## 7.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA304PR की यह सातवीं इकाई है। इस इकाई में वाद्य संगीत, विशेष रूप से सितार वाद्य के संदर्भ में, राग दरबारी कान्हड़ा  का परिचय, आलाप, द्रुत गत, तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग दरबारी कान्हड़ा के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप,  द्रुत गत, तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही सितार वाद्य पर क्रियात्मक रूप से राग दरबारी कान्हड़ा का आलाप, द्रुत गत, तोड़ों को बजा सकेंगे।

## 7.2 उद्देश्य तथा परिणाम

### सीखने के उद्देश्य

- दरबारी कान्हड़ा राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।
- दरबारी कान्हड़ा राग के आलाप, द्रुत गत, तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- दरबारी कान्हड़ा  राग के आलाप, द्रुत गत, तोड़ों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को वादन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

### सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वादन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- दरबारी कान्हड़ा  राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।

- दरबारी कान्हड़ा  राग के आलाप, द्रुत गत, तोड़ों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- दरबारी कान्हड़ा  राग के आलाप,  द्रुत गत, तोड़ों को बजाने में सक्षम होंगे।
- राग दरबारी कान्हड़ा  के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

## 7.3 दरबारी कान्हड़ा राग का परिचय

राग - दरबारी कान्हड़ा

थाट – आसावरी

जाति – संपूर्ण- वक्र संपूर्ण

वादी - ऋषभ

संवादी - पंचम

स्वर – गंधार, धैवत, निषाद कोमल (ग ध नी), अन्य स्वर शुद्ध

न्यास के स्वर – षडज, ऋषभ,  पंचम

समय – मध्य रात्रि

समप्रकृतिक राग – अड़ाना

आरोह: सा रे $^{म}$ग ऽ म रे सा, म प, $^{नी}$ध $^{सां}$नी सां।

अवरोह: सां, $^{नी}$ध ऽ नी प, म प $^{म}$ग म रे सा।

पकड़:  सा रे $^{म}$ग ऽ ग ऽ म $^{सा}$रे ऽ सा, $^{रे}$ध़ नी़ सा।

दरबारी कान्हड़ा राग, आसावरी थाट का एक महत्वपूर्ण राग है। इस राग की जाति संपूर्ण- वक्र संपूर्ण है। दरबारी कान्हड़ा राग का वादी स्वर ऋषभ तथा संवादी स्वर पंचम है। प्रस्तुत राग में गंधार, धैवत, निषाद कोमल (ग॒ ध॒ नी॒) तथा अन्य स्वर शुद्ध लगते हैं। इस राग का वादन समय मध्य रात्रि माना जाता है। इस राग में ऋषभ, पंचम स्वरों पर न्यास किया जाता है। इस राग की प्रकृति गंभीर है। कानड़ा, दरबारी या दरबारी कान्हड़ा तीनों से अभिप्रायः एक ही राग से है। इस राग का आविष्कारक मियां तानसेन को माना जाता है। इस राग का विस्तार अधिकतर मन्द्र और मध्य सप्तक में किया जाता है। मन्द्र सप्तक में यह राग विशेष रूप से अच्छा लगता है। इस राग में गंधार स्वर को हमेशा आन्दोलित किया जाता है। दरबारी राग का गन्धार, अति कोमल गन्धार है और इसे हमेशा ऋषभ की सहायता से आन्दोलित किया जाता है (सा रे ग॒ ऽ रे ग॒ ऽ रे ग॒ ऽ रे सा)। इस राग में धैवत स्वर भी आन्दोलित होता है और यह निषाद की सहायता से आन्दोलित होता है (नी॒ध ऽ ध॒ ऽ नि॒ प)। धैवत और गान्धार स्वरों का प्रयोग इस राग में वक्र रूप से किया जाता है। दरबारी के उतरांग में धनि॒ प या सां धनि॒ प' या निधनि॒ प स्वर संगतियां प्रयुक्त होती हैं। इस राग में तानें अधिकतर सारंग अंग से ली जाती हैं। ग॒ तथा ध॒ स्वरों के वक्र होने के कारण इसमें म रे और नि॒ प की संगतियां अधिक दिखाई जाती हैं।

### स्वयं जांच अभ्यास 1

7.1 दरबारी कान्हड़ा राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि॒

ग) ध॒

घ) ग॒

7.2 दरबारी कान्हड़ा राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि॒

ग) प

घ) ग॒

7.3 दरबारी कान्हड़ा राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) मध्य रात्रि

घ) दोपहर

7.4 दरबारी कान्हड़ा राग का आविष्कारक किसने किया था?

क) उ. विलायत खां

ख) पं. रवि शंकर

ग) स्वामी हरिदास

घ) तानसेन

7.5 दरबारी कान्हड़ा राग में, निम्न में से कौन सा स्वर कोमल होता है?

क) गंधार

ख) षड़ज

ग) मध्यम

घ) ऋषभ

7.6 दरबारी कान्हड़ा राग में किस स्वर को हमेशा आन्दोलित किया जाता है?

क) ग़

ख) प

ग) ध़

घ) सा

7.7 दरबारी कान्हड़ा राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) आसावरी

ग) मारवा

घ) तोड़ी

## 7.4 आलाप

- ऩी सा ऽ रे रे ऽ ध़ ध़ ऩी सा ऽ ऩी ऽ

  सा ऽ रे ध़ ऩी ऽ ऩी सा ऽ सा ऽ।

- ऩी सा ऽ सा, ऩी सा, रे सा,

  ऩी सा रे सा ध़ ऽ

  ध़ ऽ ऩी प़, म़ प़ ध़ ऽ

  सा ऩी ऽ सा ऽ।

- ऩी सा ऩी रे सा। ऩी

  सा रे रे सा ऽ ऩी,

  सा रे, ध़ ऽ ऩी प़ म़ प़,

  ध़ ऽ ध़ ऽ ऩी सा ऽ।

- ऩी सा म़ सा ऩी सा रे

  ध़ ऽ ऩी प़ म़ प़ सा।

- म प, म प ध़ ऽ ध़ नी प,

  म प सां ध़ नी प,

  प नी प नी प म प ग़ ऽ

  म रे सा ऩी

  सा रे ऽ सा, ऩी सा।

- म प ध़ ऽ ध़ ऽ नी सां,

  नी सां रें सां ऽ।

- गं ऽ गं मं रे सां, गं ऽ गं मं रें सां,

रें <u>नी</u> सां <u>ध</u> ऽ <u>नी</u> प,

म प सां <u>ध</u> ऽ <u>नी</u> प,

म प म <u>नी</u> प <u>नी</u> प म प सां,

<u>नी</u> प <u>ग</u>ऽ <u>ग</u> ऽ म रे सा,

<u>नी़</u> <u>नी़</u> सा रे सा।

**स्वयं जांच अभ्यास 2**

7.8 क्या दरबारी कान्हड़ा राग में <u>नी़</u> सा रे सा स्वर संगति हो सकती है?

क) हां

ख) नहीं

7.9 क्या दरबारी कान्हड़ा राग में <u>ध़</u> ऽ <u>नी़</u> ध़ प़ स्वर संगति हो सकती है?

क) हां

ख) नहीं

7.10 दरबारी कान्हड़ा राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) <u>ग</u> म रे सा

ख) म <u>ग</u> रे सा

ग) <u>ग</u> म <u>रे</u> सा

घ) म <u>ग</u> <u>रे</u> सा

## 7.5 राग दरबारी कान्हड़ा की द्रुत गत तथा तोड़े

### 7.5.1 दरबारी कान्हड़ा द्रुत गत तीन ताल

| x | | | | 2 | | | | 0 | | | | 3 | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 |
| **स्थाई** | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | रे | मम | रेरे | सासा | रेऽ | रेऩी | ऽऩी | सारे |
| | | | | | | | | दा | दिर | दिर | दिर | दाऽ | रदा | ऽर | दारा |
| ग | ऽ | ऽ | म | रे | सासा | ऩी | सा | | | | | | | | |
| दा | ऽ | ऽ | दा | रा | दिर | दा | रा | | | | | | | | |
| | | | | | | | | ऩी | सासा | रेरे | सासा | ध़ऽ | ध़ऩी | ऽऩी | प़ |
| | | | | | | | | दा | दिर | दिर | दिर | दाऽ | रदा | ऽर | दाऽ |
| म़ | प़प़ | प़ | ध़ | ऽ | ऩी | रे | सा | | | | | | | | |
| दा | दिर | दा | रा | ऽ | दा | दा | रा | | | | | | | | |
| **अन्तरा** | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | म | पप | प | ध | ऽध | ध | नी | नी |
| | | | | | | | | दा | दिर | दा | रा | ऽर | दा | दा | रा |
| सां- | सांसा | -सां | सां- | रें | रेंरें | सां | ऽ | | | | | | | | |
| दाऽ | रदा | ऽर | दाऽ | दा | दिर | दा | ऽ | | | | | | | | |
| | | | | | | | | गं | मंमं | रें | सां | नी | धध | नी | प |
| | | | | | | | | दा | दिर | दिर | दिर | दा | दिर | दा | रा |
| म | पप | नी | ग | ऽम | मऽ | रे | सा | | | | | | | | |
| दा | दिर | दा | दा | ऽर | दाऽ | र | दा | | | | | | | | |

## 7.5.2 दरबारी कान्हड़ा राग की द्रुत गत के तांड़े

- मप धनी सारें नीसां मंमं रेंसां नीसां धध
  पनी मप गम रेसा नीसा ध़नी रेंरे सा-
- धनी सांनी पम गम रेसा मप धनी सां-
- रेंरें सांनी धनी सारें सांनी पम गम रेसा
- सांनी पम गम रेसा मप धनी सांसां रेंसां
- सारे ग- मम रेसा रेंरे साऩी सा- नीप़
  नीऩी प़म़ ध़नी रेसा
- गम रेसा नीसा ध़नी
  सा- गम रेसा नीसा
  ध़नी सा- गम रेसा
  नीसा धनी
- गम रेसा नीसा ध़नी
  सा- -- गम रेसा
  नीसा ध़नी सा- --
  गम रेसा नीसा ध़नी
- नीसा रेसा गम रेसा
  मप नीप गम रेसा
  मप धनी सारें सांसां
  धनी पप गम रेसा
- नीसा रेसा गम रेसा
  मम रेसा मप नीप
  मप गम रेसा नीसा
- सारे सासा नीसा रेसा

मम पप धनी नीप
गम रेसा नीसा रेसा।

- नीसा रेसा गम रेसा

  मप नीप गम रेसा
  सारे सासा मम पप
  धनी पप गम रेसा

- नीरे सासा गम रेसा

  मप नीप धध नीप
  धनी सांसां धनी पप
  मप नीप गम रेसा

- नीसा रेसा ध़ध़ नीसा

  गम रेसा मप नीप
  धनी पप मप नीप
  गम रेसा नीरे सासा

- मप मप गम रेसा

  नीनी पप मप मप
  गम रेसा नींरें सांसां
  धनी पप मप मप
  गम रेसा गंमं रेंसां
  धनी पग मरे सा-

- नीसां रेंसां गंमं रेंसां

  मप नीप गम रेसा
  ध़नि़ रेरे सासा गम
  रेरे सासा मप मप

- धनी रेसां नीसां रेसां

  धध नीप गम रेसा
  ध़नि़ नि़रे ध़नि़ नि़रे
  धनि़ नि़रे

**स्वयं जांच अभ्यास 3**

7.11 दरबारी कान्हड़ा राग की द्रुत गत को केवल सितार वाद्य पर ही बजाते हैं?

क) हां

ख) नहीं

7.12 दरबारी कान्हड़ा राग की द्रुत गत में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 1

घ) 9

7.13 दरबारी कान्हड़ा राग की द्रुत गत में सम पर मिजराब का कौन सा बोल आता है?

क) रा

ख) दिर

ग) दा

घ) दारा

7.14 तीन ताल में, 9 मात्रा के तोड़े को किस मात्रा से शुरू करें कि वह सम पर समाप्त हो जाए?

क) 9

ख) 8

ग) 10

घ) 1

7.15 तीन ताल में, 16 मात्रा के तोड़े को किस मात्रा से शुरू करें कि वह सम पर समाप्त हो जाए?

क) 16

ख) 9

ग) 1

घ) 12

## 7.6 सारांश

दरबारी कान्हड़ा राग भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत के वादन के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। दरबारी कान्हड़ा राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में द्रुत गत को तेज लय में

बजाया जाता है। द्रुत गत में तोड़ों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार के तोड़ों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ बजाया जाता है।

## 7.7 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- द्रुत गत: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर-रचना जो लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा द्रुत लय में बजाई जाती हो उसे द्रुत गत कहते हैं।
- तोड़ा: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, वाद्य पर बजाया जाता है तो उसे तोड़ा कहते हैं।

## 7.8 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

### स्वयं जांच अभ्यास 1

7.1 उत्तर: क)

7.2 उत्तर: ग)

7.3 उत्तर: ग)

7.4 उत्तर: घ)

7.5 उत्तर: क)

7.6 उत्तर: क)

7.7 उत्तर: ख)

### स्वयं जांच अभ्यास 2

7.8 उत्तर: क)

7.9 उत्तर: ख)

7.10 उत्तर: क)

**स्वयं जांच अभ्यास 3**

7.11 उत्तर: ख)

7.12 उत्तर: ग)

7.13 उत्तर: ग)

7.14 उत्तर: ख)

7.15 उत्तर: ग)

## 7.9 संदर्भ


डॉ. निर्मल सिंह से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, अप्रैल 2024।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।


## 7.10 अनुशंसित पठन


शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।


## 7.11 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग दरबारी कान्हड़ा का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग दरबारी कान्हड़ा के तीन आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग दरबारी कान्हड़ा की द्रुत गत लिखिए।

प्रश्न 4. राग दरबारी कान्हड़ा की द्रुत गत के पांच तोड़े लिखिए।

# इकाई-8
# राग तोड़ी की द्रुत गत

## इकाई की रूपरेखा


| क्रम | विवरण |
|---|---|
| 8.1 | भूमिका |
| 8.2 | उद्देश्य तथा परिणाम |
| 8.3 | तोड़ी राग का परिचय (वादन के संदर्भ में) |
| | स्वयं जांच अभ्यास 1 |
| 8.4 | तोड़ी राग का आलाप (वादन के संदर्भ में) |
| | स्वयं जांच अभ्यास 2 |
| 8.5 | राग तोड़ी की द्रुत गत तथा तोड़े |
| 8.5.1 | तोड़ी राग की द्रुत गत |
| 8.5.2 | तोड़ी राग की द्रुत गत के तोड़े |
| | स्वयं जांच अभ्यास 3 |
| 8.6 | सारांश |
| 8.7 | शब्दावली |
| 8.8 | स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर |
| 8.9 | संदर्भ |
| 8.10 | अनुशंसित पठन |
| 8.11 | पाठगत प्रश्न |

## 8.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA304PR की यह आठवीं इकाई है। इस इकाई में वाद्य संगीत, विशेष रूप से सितार वाद्य के संदर्भ में, राग तोड़ी  का परिचय, आलाप, द्रुत गत, तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग तोड़ी के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, द्रुत गत, तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही सितार वाद्य पर क्रियात्मक रूप से राग तोड़ी का आलाप, द्रुत गत, तोड़ों को बजा सकेंगे।

## 8.2 उद्देश्य तथा परिणाम

### सीखने के उद्देश्य

- तोड़ी राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।
- तोड़ी राग के आलाप, द्रुत गत, तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- तोड़ी  राग के आलाप, द्रुत गत, तोड़ों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को वादन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

### सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वादन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- तोड़ी  राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।

- तोड़ी  राग के आलाप, द्रुत गत, तोड़ों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- तोड़ी  राग के आलाप, द्रुत गत, तोड़ों को बजाने में सक्षम होंगे।
- राग तोड़ी  के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और  अनुभव भी प्राप्त होगा।

## 8.3 तोड़ी राग का परिचय

राग - तोड़ी

थाट – तोड़ी

जाति – संपूर्ण- संपूर्ण

वादी - धैवत

संवादी - गंधार

स्वर – ऋषभ, गंधार, धैवत कोमल (रे॒ ग॒ ध॒), मध्यम तीव्र, (म॑) अन्य स्वर शुद्ध

न्यास के स्वर – षडज, गंधार, धैवत

समय – दिन का दूसरा प्रहर

समप्रकृतिक राग – गुर्जरी तोड़ी

आरोह: सा रे॒ ग॒ म॑ ध॒ ऽ प, म॑ ध॒ नी सां।

अवरोह: सां, नी ध॒ प ऽ, म॑ ग॒, रे॒ ग॒, रे॒ सा।

पकड़:  ध॒ नी॒ सा, म॑ ग॒, रे॒ ग॒ रे॒ सा।

तोड़ी राग, तोड़ी थाट का एक महत्वपूर्ण राग है। इस राग की जाति संपूर्ण-संपूर्ण है। तोड़ी राग का वादी स्वर धैवत तथा संवादी स्वर गंधार है। प्रस्तुत राग में ऋषभ, गंधार, धैवत कोमल (रे ग ध), मध्यम तीव्र (म') तथा अन्य स्वर शुद्ध लगते हैं। इस राग का वादन समय दिन का दूसरा प्रहर माना जाता है। इस राग में षडज, गंधार, धैवत स्वरों पर न्यास किया जाता है। इस राग की प्रकृति शांत है। इस राग का आविष्कारक मियां तानसेन को माना जाता है। इसलिए इस राग को मियां की तोड़ी भी कहा जाता है। इस राग का विस्तार अधिकतर मन्द्र और मध्य सप्तक में किया जाता है। मन्द्र सप्तक में यह राग विशेष रूप से अच्छा लगता है। इस राग का आरोह करते समय पंचम को अधिकतर छोड़ दिया जाता है। तोड़ी राग में रे ग रे सा स्वर समुदाय बार-बार प्रयुक्त होते हैं। आरोह में म' ध नि सां स्वर समुदाय का प्रयोग किया जाता है।

**स्वयं जांच अभ्यास 1**

8.1 तोड़ी राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) ध

ख) नि

ग) रे

घ) ग

8.2 तोड़ी राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) ग

घ) सा

8.3 तोड़ी राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) दिन का दूसरा प्रहर

ग) मध्य रात्रि

घ) दोपहर

8.4 तोड़ी राग का आविष्कारक किसने किया था?

क) उ. विलायत खां

ख) पं. रवि शंकर

ग) स्वामी हरिदास

घ) तानसेन

8.5 तोड़ी राग में, निम्न में से कौन सा स्वर कोमल नहीं होता है?

क) षड़ज

ख) गंधार

ग) धैवत

घ) ऋषभ

8.6 तोड़ी राग में किस स्वर को वर्जित करते हैं?

क) कोई भी नहीं

ख) ग

ग) ध

घ) सा

8.7 तोड़ी राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) तोड़ी

ग) मारवा

घ) आसावरी

## 8.4 आलाप

- सा, ऩी सा रे रे सा, रे रे ग रे सा, सा,

  ऩी सा, ध़ ध़ ऩी ऩी सा,

  सा, रे ग रे सा।

- सा ऩी ध़ ऩी ऩी सा, सा, ऩी सा,

  ऩी ध़ प़, प़, ध़ ऩी ध़ म॑ प़ ध़,

  प़ म प़ ध़ ऩी सा।

- सा रे॒ ग॒ म॑ म॑ ग॒,

  रे॒ ग॒ म॑ ग॒

  रे॒ ग॒ रे॒ रे॒ सा, सा,

  ऩी ध़॒ ऩी सा।

- सा रे॒ सा ऩी ध़॒ ऩी ध़॒ प़ म़॑ प़ ध़॒

  ऩी ग॒ रे॒ ग॒ रे॒ सा,

  सा, सा रे॒ ग॒

  म॑ म॑ रे॒ ग॒ रे॒ सा,

  ग॒ रे॒ ग॒ म॑

  ध॒ प म॑ ध॒ ध॒, म॑

  रे॒ ग॒ रे॒ सा।

- सा ऩी सा रे॒ ग॒ रे॒, ग॒ म॑ ग॒ रे॒,

  ध॒ प म॑ ग॒ रे॒ ध॒

  नी ध॒ प म॑ ग॒,

  ध़॒ ऩी सा रे॒ सा।

- ग॒ म॑ ध॒ ध॒ प, म॑, ग॒ म

  ध॒ ध॒ नी नी ध॒ नी सां,

  सां, रें॒ गं॒ रें॒ सां, सां नी ध॒,

प म ध नी नी सां, नी रें रें सां,

सां नी ध, ध प मं प ध नी ध,

ध प मं रे ग रे सा, सा।

- सां नी ध प मं ध प,

नी ध प मं

रे ग रे सा, ऩी ध़

ऩी रे, सा,

रे ग रे सा सा।।

**स्वयं जांच अभ्यास 2**

8.8 क्या तोड़ी राग में मं ग रे ग रे सा स्वर संगति हो सकती है?

क) हां

ख) नहीं

8.9 क्या तोड़ी राग में ध़ ऽ ऩी ध़ प़ स्वर संगति हो सकती है?

क) हां

ख) नहीं

8.10 तोड़ी राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) रे ग मं ध ऽ प,

ख) म ग रे सा

ग) रे ग म प ध ऽ,

घ) म ग रे सा

## 8.5 राग तोड़ी की द्रुत गत तथा तोड़े

### 8.5.1 तोड़ी राग की द्रुत गत तीन ताल

| x | | | | 2 | | | | 0 | | | | 3 | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 |
| **स्थाई** | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | रे | गग | रे | सास | - | ऩी | सा | रे |
| | | | | | | | | दा | दिर | दा | दिर | - | रा | दा | रा |
| ग | - | - | ग | रे | गग | रे | सा | | | | | | | | |
| दा | - | - | दा | रा | दिर | दा | रा | | | | | | | | |
| | | | | | | | | ध | ऩीऩी | सा | ऩी | सा | रेरे | ग | रे |
| | | | | | | | | दा | दिर | दा | रा | दा | दिर | दा | रा |
| ग | धध | पप | मंमं | ग- | गरे | -रे | सा | | | | | | | | |
| दा | दिर | दिर | दिर | दा- | रदा | -र | दा | | | | | | | | |
| **अन्तरा** | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | मं | गग | मं | ध | - | नी | सां | - |
| | | | | | | | | दा | दिर | दा | रा | - | दा | रा | - |
| सां | रेंरें | गंगं | रेंरें | गं- | गरें | -रें | सां | | | | | | | | |
| दा | दिर | दिर | दिर | दा- | रदा | -र | दा | | | | | | | | |
| | | | | | | | | सां | नीनी | नी | ध | - | प | मं | ध |
| | | | | | | | | दा | दिर | दा | रा | - | दा | दा | रा |
| ग | धध | पप | मंमं | ग- | गरे | -रे | सा | | | | | | | | |
| दा | दिर | दिर | दिर | दा- | रदा | -र | दा | | | | | | | | |

## 8.5.2 तोड़ी राग की द्रुत गत के तोड़े

- रें गं    रें सां    नी सां    ध नी    ध प    म' ग    रे ग    रे सा
- नी सां    ध नी    ध प    म' ग    म' ध    प म'    रे ग    रे सा
- सा रे    ग ग    रे ग    ग ग    रे ग    रे सा    ऩी ध़    ऩी सा
- सा रे    ग म'    म' ग    म' म'    ग म'    ग ग    रे ग    रे सा
- म' ध    नी सां    ग म'    ध नी    रे ग    म' ध    म' ग    रे सा
- म' ध    नी नी    ध प    म' ग    म' ध    प म'    रे ग    रे सा
- सां नी    ध म'    ध नी    सां रें    नी ध    प म'    रे ग    रे सा
- सा रे    ग म'    ध प    म' ग    म' ग    ग रे    ग रे    सा -
- ध प    म' ग    रे ग    म' प    ध प    म' ग    रे ग    रे सा

  ऩी सा ऩी सा
- सा रे    ग म'    ध प    म' ग    म' ध    नी ध    म' ग    रे ग

  रे - सा -
- ध प    म' रे    ग म'    ध नी    ध प    म' रे    ग रे    रे सा
- नी नी    ध प    म' ध    नी सां    नी ध    प म'    रे ग    रे सा
- सां नी    ध प    म' रे    ग म'    ध प    म' रे    ग रे    सा -

- नी नी ध नी ध प म॑ध ध प म॑ध प म॑ ग रे
  ग रे सा -
- ग म॑ प ध नी सां रें गं गं रें गं रें सां सां रें गं
  रें सां सां सां नी नी नी ध ध ध प प म॑ म॑ ग ग
  रे - सा -
- सा रे सा रे ग रे ग ऩी सा ऩी रे सा रे ऩी सा -
  सा रे -रे ग - ग म॑ -ध नी - ध सां नी सां
  प ध म॑नी ध नी ध प -म॑ ध नी -नी सां -
  सा रें -सां नी ध प म॑ रे ग रे सा ग म॑ ध ग
  म॑ध ग म॑
- सा रे ग रे सा सा ऩी सा ऩी ऩी ध़ प म॑ध़ ऩी सा
  रे ग रे ग रे रे सा सा ऩी सा ध़ ऩी सा - सा -
- सा रे ग ग रे ग रे रे सा सा ऩी सा रे ग म॑ग
  म॑ रे ग ग रे ग रे रे सा रे ऩी ध़ ऩी रे सा सा
- सा रे ग म॑ ध प म॑ग ध ध म॑प म॑ग रे ग
  म॑ध नी नी ध म॑ रे ग म॑प ध म॑ रे ग रे सा
- ध ध प म॑ ग रे ग म॑ प ध नी नी ध प म॑ध

नी सां  सां रें  गं रें  सां नी  सां नी  ध प  मं ध  प मं
रे ग  रे सा

- सा रे  ग मं  रे ग  मं ध  नी ध  प मं  ग रे  ग मं
  ध नी  सां रें  गं रें  सां नी  सां नी  ध मं  रे ग  रे सा
- सा रे  ग ग  रे ग  रे सा  ऩी सा  ध़ ऩी  सा रे  ग मं
  मं ग  रे ग  रे सा  ऩी सा  ध़ ऩी  सा रे  ग रे  सा -
- सा रे  ग मं  प ध  मं ध  नी नी  ध प  मं ध  नी सां
  सां नी  सां नी  नी ध  प मं  ध प  मं ग  रे ग  रे सा
- सां -  सां नी  ध प  मं ग  ध -  ध प  मं रे  ग मं
  रे ग,  मं मं  ग रे  ग रे  सा -  सा रे  सा ऩी  सा ध़
  ध़ ऩी  सा रे  ग -  रे ग  मं -  ग मं  ध -
- ध़ ऩी  सा रे  ग रे  सा रे
- सा रे  ग मं  प ध  मं ग
  मं ग  मं ध  नी सां  नी ध
  नी ध  नी सां  रें सां  नी सां
  ध नी  सां रें  गं रें  सां रें
  - सां  नी रें  सां नी  ध प
  मं -  ध प  मं ध  मं रे

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ग रे | सा - | ग मं | ध ग | | |
| मं ध | ग मं | | | | |

- 

| | | | |
|---|---|---|---|
| सा रे | ग रे | - मं | ग मं |
| ध - | नी नी | ध प | मं - |
| ध ध | प मं | ग - | ग मं |
| रे रे | रे ग | रे - | ग ग |
| रे सा | - - | सा रे | ग रे |
| - मं | ग मं | ध - | सा रे |
| ग रे | - मं | ग मं | ध - |
| सा रे | ग रे | - मं | ग मं |

- 

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| ध़ऩीऩी | सा रे | साऩीनी | ध़ प | म़ं ध़ | ध़ ऩी |
| सा रे | सा सा | ऩी सा | ऩी ग | ग रे | ग रे |
| मं मं | ग मं | ग प | प ध | ध मं | प ध |
| प मं | रे ग | रे सा | सा रे | ग - | रे ग |
| मं - | ग मं | ध - | ध - | | |

**स्वयं जांच अभ्यास 3**

8.11 तोड़ी राग की द्रुत गत को केवल सितार वाद्य पर ही बजाते हैं?

क) हां

ख) नहीं

8.12 तोड़ी राग की द्रुत गत में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 1

घ) 9

8.13 तोड़ी राग की द्रुत गत में सम पर मिजराब का कौन सा बोल आता है?

क) रा

ख) दिर

ग) दा

घ) दारा

8.14 तीन ताल में, 8 मात्रा के तोड़े को किस मात्रा से शुरू करें कि वह सम पर समाप्त हो जाए?

क) 8

ख) 9

ग) 10

घ) 1

8.15 तीन ताल में, 16 मात्रा के तोड़े को किस मात्रा से शुरू करें कि वह सम पर समाप्त हो जाए?

क) 16

ख) 9

ग) 1

घ) 12

## 8.6 सारांश

तोड़ी राग भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत के वादन के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। तोड़ी राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में द्रुत गत को तेज लय में बजाया जाता है। द्रुत गत में तोड़ों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार के तोड़ों को इसमें विभिन्न लयकारियों के साथ बजाया जाता है।

## 8.7 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- द्रुत गत: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर-रचना जो लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा द्रुत लय में बजाई जाती हो उसे द्रुत गत कहते हैं।
- तोड़ा: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, वाद्य पर बजाया जाता है तो उसे तोड़ा कहते हैं।

## 8.8 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

### स्वयं जांच अभ्यास 1

8.1 उत्तर: क)

8.2 उत्तर: ग)

8.3 उत्तर: ग)

8.4 उत्तर: घ)

8.5 उत्तर: क)

8.6 उत्तर: क)

8.7 उत्तर: ख)

### स्वयं जांच अभ्यास 2

8.8 उत्तर: क)

8.9 उत्तर: ख)

8.10 उत्तर: क)

### स्वयं जांच अभ्यास 3

8.11 उत्तर: ख)

8.12 उत्तर: ग)

8.13 उत्तर: ग)

8.14 उत्तर: ख)

8.15 उत्तर: ग)

## 8.9 संदर्भ


डॉ. केशव शर्मा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, मार्च 2024।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।


## 8.10 अनुशंसित पठन


भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।


## 8.11 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग तोड़ी का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग तोड़ी के तीन आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग तोड़ी की द्रुत गत लिखिए।

प्रश्न 4. राग तोड़ी की द्रुत गत के पांच तोड़े लिखिए।

# इकाई-9
# राग भैरवी की द्रुत गत

## इकाई की रूपरेखा


| क्रम | विवरण |
|---|---|
| 9.1 | भूमिका |
| 9.2 | उद्देश्य तथा परिणाम |
| 9.3 | भैरवी राग का परिचय (वादन के संदर्भ में) |
| | स्वयं जांच अभ्यास 1 |
| 9.4 | भैरवी राग का आलाप (वादन के संदर्भ में) |
| | स्वयं जांच अभ्यास 2 |
| 9.5 | राग भैरवी की द्रुत गत तथा तोड़े |
| 9.5.1 | भैरवी राग की द्रुत गत |
| 9.5.2 | भैरवी राग की द्रुत गत के तोड़े |
| | स्वयं जांच अभ्यास 3 |
| 9.6 | सारांश |
| 9.7 | शब्दावली |
| 9.8 | स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर |
| 9.9 | संदर्भ |
| 9.10 | अनुशंसित पठन |
| 9.11 | पाठगत प्रश्न |

## 9.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA304PR की यह नवम इकाई है। इस इकाई में वाद्य संगीत, विशेष रूप से सितार वाद्य के संदर्भ में, राग भैरवी  का परिचय, आलाप, द्रुत गत, तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग भैरवी के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, द्रुत गत, तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही सितार वाद्य पर क्रियात्मक रूप से राग भैरवी का आलाप, , द्रुत गत, तोड़ों को बजा सकेंगे।

## 9.2 उद्देश्य तथा परिणाम

### सीखने के उद्देश्य

- भैरवी राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।
- भैरवी राग के आलाप,  द्रुत गत, तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- भैरवी  राग के आलाप, द्रुत गत, तोड़ों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को वादन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

### सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वादन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- भैरवी  राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।

- भैरवी  राग के आलाप, द्रुत गत, तोड़ों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- भैरवी  राग के आलाप, द्रुत गत, तोड़ों को बजाने में सक्षम होंगे।
- राग भैरवी  के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और  अनुभव भी प्राप्त होगा।

## 9.3 भैरवी राग का परिचय

राग - भैरवी

थाट – भैरवी

जाति – संपूर्ण- संपूर्ण

वादी - मध्यम

संवादी - षड़ज

स्वर – ऋषभ, गंधार, धैवत, निषाद कोमल (रे ग ध नी), अन्य स्वर शुद्ध

न्यास के स्वर – षडज, मध्यम, पंचम

समय – प्रात:काल

समप्रकृतिक राग – बिलासखानी तोडी

आरोह: सा रे ग म प ध नी सां।

अवरोह: सां, नी ध प, म ग रे सा।

पकड़- म ग रे ग, सा रे सा, ग म प ध प, म ग रे सा।

भैरवी राग, भैरवी थाट का एक महत्वपूर्ण राग है। इस राग की जाति संपूर्ण-संपूर्ण है। भैरवी राग का वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षड़ज है। प्रस्तुत राग में ऋषभ, गंधार, धैवत, निषाद कोमल (रे ग ध नी) तथा अन्य स्वर शुद्ध लगते हैं। इस राग का वादन समय प्रात:काल माना जाता है परंतु इस राग को किसी भी समय बजाया जा सकता है ऐसा विद्वानों का मत है। इस राग में षडज, मध्यम, पंचम स्वरों पर न्यास किया जाता है। इस राग में सभी 12 स्वरों का प्रयोग भी किया जाता है। इस राग का विस्तार अधिकतर मन्द्र और मध्य सप्तक में किया जाता है। मन्द्र सप्तक में यह राग विशेष रूप से अच्छा लगता है। भैरवी राग में म प ध प स्वर समुदाय बार-बार प्रयुक्त होते हैं।

## स्वयं जांच अभ्यास 1

9.1 भैरवी राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) म

ख) प

ग) रे

घ) ग

9.2 भैरवी राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) सा

घ) प

9.3 भैरवी राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का दूसरा प्रहर

ख) सांयकाल

ग) प्रात:काल

घ) दोपहर

9.4 भैरवी राग का आविष्कारक किसने किया था?

क) उ. विलायत खां

ख) पं. रवि शंकर

ग) स्वामी हरिदास

घ) अज्ञात

9.5 भैरवी राग में, निम्न में से कौन सा स्वर कोमल नहीं होता है?

क) षड़ज

ख) गंधार

ग) धैवत

घ) ऋषभ

9.6 भैरवी राग में किस स्वर पर न्यास होता है?

क) प

ख) ग

ग) ध

घ) नी

9.7 भैरवी राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) भैरवी

ग) मारवा

घ) आसावरी

## 9.4 आलाप

- सा रे सा, ध नि सा, ग रे सा, नि ध प, प ध नि सा रे सा।
- सा रे ग ऽ रे ग सा, प ध प, म प ग, सा रे ग म प ऽ

  ध प म प ग म ग, सा ग प ऽ म, प ऽ ग म

  ग ऽ रे सा, ध नि सा ग रे सा।
- नि सा ग म प ऽ ध प, ग म प ध प, नि ध प,

  प ध नि ऽ ध नि ऽ प ध प, म प नि ध प,

  सा ऽ प प ध प म प म ग, सा रे ग म ग,

सा रे सा, ध नि सा रे सा।

- ग म ध नि सां, रें सां गं रें सां,

  सां रें गं सां रें मं गं सां

  रें सां, नि सां नि सां रें सां ध प,

  नि ध प प ऽ प

  ध ऽऽ प, ध म प म ग, सा ग म प,

  म ग सा रे सा,

  ध नि ध सा, रे सा ग रे सा।

**स्वयं जांच अभ्यास 2**

9.8 क्या भैरवी राग में ग म॑ रे ग रे सा स्वर संगति हो सकती है?

क) हां

ख) नहीं

9.9 क्या भैरवी राग में ध़ ऽ नी॑ ध़ प़ स्वर संगति हो सकती है?

क) हां

ख) नहीं

9.10 भैरवी राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) सा रे ग म ग रे सा

ख) म ग रे सा

ग) रे ग म प ध ऽ,

घ) म ग रे सा

## 9.5 राग भैरवी की द्रुत गत तथा तोड़े

### 9.5.1 भैरवी द्रुत गत तीन ताल

| x | | | | 2 | | | | 0 | | | | 3 | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 |
| **स्थाई** | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | प | सांसां | नीनी | धध | पऽ | पग | ऽग | म |
| | | | | | | | | दा | दिर | दिर | दिर | दाऽ | रादा | ऽर | दा |
| प | - | ग | म | ग | रेरे | सा | सा | | | | | | | | |
| दा | ऽ | दा | रा | दा | दिर | दा | रा | | | | | | | | |
| | | | | | | | | ध | नीनी | सा | ग | रे | रेरे | सा | सा |
| | | | | | | | | दा | दिर | दा | रा | दा | दिर | दिर | रा |
| ध | नीनी | सां | नी | ध | पप | ग | म | | | | | | | | |
| दा | दिर | दा | रा | दा | दिर | दा | रा | | | | | | | | |
| **अन्तरा** | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | ग | मम | ध | नी | सां | - | सां | - |
| | | | | | | | | दा | दिर | दा | रा | दा | ऽ | रा | ऽ |
| ध | नीनी | सां | गं | रें | रेंरें | सां | सां | | | | | | | | |
| दा | दिर | दा | रा | दा | दिर | दा | रा | | | | | | | | |
| | | | | | | | | सां | रेंरें | नी | सा | ध | नीनी | प | ध |
| | | | | | | | | दा | दिर | दा | रा | दा | दिर | दा | रा |
| म | पप | ग | म | ग | रेरे | सा | सा | | | | | | | | |
| दा | दिर | दा | रा | दा | दिर | दा | रा | | | | | | | | |

## 9.5.2 भैरवी राग की द्रुत गत के तांड़े

- ऩीसा गम पऽ मप गम पम गरे साऽ
- सारे गम गरे सारे गम पम गरे साऽ
- गम पम पम गम गरे सारे गरे साऽ
- सारे गम मप गम पम गम गरे साऽ
- सारे गम गरे साऩी धप धऩी साऩी साऽ
- सारे सारे गरे सारे ऩीसा ऩीसा रेसा साऽ
- सारें गरें सांनि धनि सांनि धप मग रेसा
- निसा गम पध पम गम पध निध पम
  गम पध निसां रेंसां सांनि धप मग रेसा
- सारे रेग गम मप पध धनी नीसां सारें
  सांनी नीध धप पम मग गरे रेसा साऽ
- सारे गम पध मप गम गरे गग रेसा
- सारे गरे गम गम पम गरे गग रेसा
- सांनी धनी धप मप गम गरे गग रेसा
- धऩी सारे साऩी सारे गग रेग मप धप

पम गम गरे गग रेसा रेग रेसा नीसा

- गम धप मप गम गरे सारे नीसा रेग

  सारे गम पध पम पग मरे गग रेसा

स्वयं जांच अभ्यास 3

9.11 भैरवी राग की विलंबित गत को केवल सितार वाद्य पर ही बजाते हैं?

क) हां

ख) नहीं

9.12 भैरवी राग की द्रुत गत में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 1

घ) 9

9.13 भैरवी राग की द्रुत गत में सम पर मिजराब का कौन सा बोल आता है?

क) रा

ख) दिर

ग) दा

घ) दारा

9.14 तीन ताल में, 8 मात्रा के तोड़े को किस मात्रा से शुरू करें कि वह सम पर समाप्त हो जाए?

क) 8

ख) 9

ग) 10

घ) 1

9.15 तीन ताल में, 16 मात्रा के तोड़े को किस मात्रा से शुरू करें कि वह सम पर समाप्त हो जाए?

क) 16

ख) 9

ग) 1

घ) 12

## 9.6 सारांश

भैरवी राग भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत के वादन के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। भैरवी राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में द्रुत गत को तेज लय में बजाया जाता है। द्रुत गत में तोड़ों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार के तोड़ों को इसमें विभिन्न लयकारियों के साथ बजाया जाता है।

## 9.7 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- द्रुत गत: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर-रचना जो लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा द्रुत लय में बजाई जाती हो उसे द्रुत गत कहते हैं।
- तोड़ा: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, वाद्य पर बजाया जाता है तो उसे तोड़ा कहते हैं।

## 9.8 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

### स्वयं जांच अभ्यास 1

9.1 उत्तर: क)

9.2 उत्तर: ग)

9.3 उत्तर: ग)

9.4 उत्तर: घ)

9.5 उत्तर: क)

9.6 उत्तर: क)

9.7 उत्तर: ख)

### स्वयं जांच अभ्यास 2

9.8 उत्तर: ख)

9.9 उत्तर: ख)

9.10 उत्तर: क)

**स्वयं जांच अभ्यास 3**

9.11 उत्तर: ख)

9.12 उत्तर: ग)

9.13 उत्तर: ग)

9.14 उत्तर: ख)

9.15 उत्तर: ग)

## 9.9 संदर्भ


डॉ. निर्मल सिंह से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, अप्रैल 2024।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।


## 9.10 अनुशंसित पठन


भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।


## 9.11 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग भैरवी का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग भैरवी के तीन आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग भैरवी की द्रुत गत लिखिए।

प्रश्न 4. राग भैरवी की द्रुत गत के पांच तोड़े लिखिए।

# इकाई-10
# राग दरबारी कान्हड़ा का छोटा ख्याल

## इकाई की रूपरेखा


| क्रम | विवरण |
|---|---|
| 10.1 | भूमिका |
| 10.2 | उद्देश्य तथा परिणाम |
| 10.3 | दरबारी कान्हड़ा राग का परिचय (गायन के संदर्भ में) |
| | स्वयं जांच अभ्यास 1 |
| 10.4 | दरबारी कान्हड़ा राग का आलाप (गायन के संदर्भ में) |
| | स्वयं जांच अभ्यास 2 |
| 10.5 | राग दरबारी कान्हड़ा का छोटा ख्याल तथा तानें |
| 10.5.1 | दरबारी कान्हड़ा राग का छोटा ख्याल 1 |
| 10.5.2 | दरबारी कान्हड़ा राग का छोटा ख्याल 2 |
| 10.5.3 | दरबारी कान्हड़ा राग के छोटे ख्याल की तानें |
| | स्वयं जांच अभ्यास 3 |
| 10.6 | सारांश |
| 10.7 | शब्दावली |
| 10.8 | स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर |
| 10.9 | संदर्भ |
| 10.10 | अनुशंसित पठन |
| 10.11 | पाठगत प्रश्न |

## 10.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA304PR की यह दसवीं इकाई है। इस इकाई में गायन संगीत के संदर्भ में, राग दरबारी कान्हड़ा  का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग दरबारी कान्हड़ा के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग दरबारी कान्हड़ा का आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को गा सकेंगे।

## 10.2 उद्देश्य तथा परिणाम

### सीखने के उद्देश्य

- दरबारी कान्हड़ा राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।
- दरबारी कान्हड़ा राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- दरबारी कान्हड़ा  राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

### सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वादन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा

- दरबारी कान्हड़ा  राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।
- दरबारी कान्हड़ा  राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- दरबारी कान्हड़ा  राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को गाने में सक्षम होंगे।
- राग दरबारी कान्हड़ा  के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

## 10.3 दरबारी कान्हड़ा राग का परिचय

राग - दरबारी कान्हड़ा

थाट – आसावरी

जाति – संपूर्ण- वक्र संपूर्ण

वादी - ऋषभ

संवादी - पंचम

स्वर – गंधार, धैवत, निषाद कोमल (ग ध नी), अन्य स्वर शुद्ध

न्यास के स्वर – षडज, ऋषभ,  पंचम

समय – मध्य रात्रि

समप्रकृतिक राग – अड़ाना

आरोह: सा रे $^{म}$ग ऽ म रे सा, म प, $^{नी}$ध $^{सां}$नी सां।

अवरोह: सां, $^{नी}$ध ऽ नी प, म प $^{म}$ग म रे सा।

पकड़:  सा रे $^{म}$ग ऽ ग ऽ म $^{सा}$रे ऽ सा, $^{रे}$ध नी सा।

दरबारी कान्हड़ा राग, आसावरी थाट का एक महत्वपूर्ण राग है। इस राग की जाति संपूर्ण- वक्र संपूर्ण है। दरबारी कान्हड़ा राग का वादी स्वर ऋषभ तथा संवादी स्वर पंचम है। प्रस्तुत राग में गंधार, धैवत, निषाद कोमल (ग ध नी) तथा अन्य स्वर शुद्ध लगते हैं। इस राग का वादन समय मध्य रात्रि माना जाता है। इस राग में ऋषभ, पंचम स्वरों पर न्यास किया जाता है। इस राग की प्रकृति गंभीर है। कानड़ा, दरबारी या दरबारी कान्हड़ा तीनों से अभिप्रायः एक ही राग से है। इस राग का आविष्कारक मियां तानसेन को माना जाता है।

इस राग का विस्तार अधिकतर मन्द्र और मध्य सप्तक में किया जाता है। मन्द्र सप्तक में यह राग विशेष रूप से अच्छा लगता है। इस राग में गंधार स्वर को हमेशा आन्दोलित किया जाता है। दरबारी राग का गन्धार, अति कोमल गन्धार है और इसे हमेशा ऋषभ की सहायता से आन्दोलित किया जाता है (सा रे ग ऽ रे ग ऽ रे ग ऽ रे सा)।

इस राग में धैवत स्वर भी आन्दोलित होता है और यह निषाद की सहायता से आन्दोलित होता है ($^{नी}$ध ऽ ध ऽ नि प)। धैवत और गान्धार स्वरों का प्रयोग इस राग में वक्र रूप से किया जाता है। दरबारी के उतरांग में धनि प या सां धनि प' या निधनि प स्वर संगतियां प्रयुक्त होती हैं। इस राग में तानें अधिकतर सारंग अंग से ली जाती हैं। ग तथा ध स्वरों के वक्र होने के कारण इसमें म रे और नि प की संगतियां अधिक दिखाई जाती हैं।

### स्वयं जांच अभ्यास 1

10.1 दरबारी कान्हड़ा राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) ध

घ) ग

10.2 दरबारी कान्हड़ा राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) प

घ) ग

10.3 दरबारी कान्हड़ा राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) मध्य रात्रि

घ) दोपहर

10.4 दरबारी कान्हड़ा राग का आविष्कारक किसने किया था?

क) उ. विलायत खां

ख) पं. रवि शंकर

ग) स्वामी हरिदास

घ) तानसेन

10.5 दरबारी कान्हड़ा राग में, निम्न में से कौन सा स्वर कोमल होता है?

क) गंधार

ख) षड़ज

ग) मध्यम

घ) ऋषभ

10.6 दरबारी कान्हड़ा राग में किस स्वर को हमेशा आन्दोलित किया जाता है?

क) ग

ख) प

ग) ध

घ) सा

10.7 दरबारी कान्हड़ा राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) आसावरी

ग) मारवा

घ) तोड़ी

## 10.4 आलाप

- नी॒ नी॒ सा ऽ रे रे ऽ ध॒ ध॒

  नी॒ सा ऽ नी॒ ऽ

  सा ऽ रे ध॒ नी॒ ऽ नी॒ सा ऽ सा ऽ।

- सा ऽ सा, नी॒ सा, रे सा,

  नी॒ सा रे सा ध॒ ऽ

  ध॒ ऽ नी॒ प॒, म॒ प॒ ध॒ ऽ

  सा नी॒ ऽ सा ऽ।

- नी॒ सा नी॒ रे सा। नी॒ सा

  रे रे सा ऽ नी॒,

  सा रे, ध॒ ऽ नी॒ प॒ म॒ प॒,

  ध॒ ऽ ध॒ ऽ नी॒ सा ऽ।

- नी॒ सा म॒ सा नी॒ सा रे ध॒ ऽ

  नी॒ प॒ म॒ प॒ सा।

- म प, म प ध॒ ऽ ध॒ नी॒ प,

  म प सां ध॒ नी॒ प,

  प नी॒ प नी॒ प म प ग॒ ऽ म रे सा नी॒

सा रे ऽ सा, <u>नी़</u> सा।

- म प <u>ध</u> ऽ <u>ध</u> ऽ <u>नी</u> सां,

  <u>नी</u> सां रें सां ऽ।

- <u>गं</u> ऽ <u>गं</u> मं रे सां, <u>गं</u> ऽ <u>गं</u> मं रें सां,

  रें <u>नी</u> सां <u>ध</u> ऽ <u>नी</u> प,

  म प सां <u>ध</u> ऽ <u>नी</u> प,

  म प म <u>नी</u> प <u>नी</u> प

  म प सां, <u>नी</u> प <u>ग</u>ऽ

  <u>ग</u> ऽ म रे सा, <u>नी़</u> <u>नी़</u> सा रे सा।

**स्वयं जांच अभ्यास 2**

10.8 क्या दरबारी कान्हड़ा राग में <u>नी़</u> सा रे सा स्वर संगति हो सकती है?

क) हां

ख) नहीं

10.9 क्या दरबारी कान्हड़ा राग में <u>ध़</u> ऽ <u>नी़</u> ध़ प़ स्वर संगति हो सकती है?

क) हां

ख) नहीं

10.10 दरबारी कान्हड़ा राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) <u>ग</u> म रे सा

ख) म <u>ग</u> रे सा

ग) <u>ग</u> म <u>रे</u> सा

घ) म <u>ग</u> <u>रे</u> सा

## 10.5 राग दरबारी कान्हड़ा का छोटा ख्याल तथा तानें

### 10.5.1 दरबारी कान्हड़ा छोटा ख्याल (1) द्रुत लय तीन ताल

**स्थायी**

जो गुरू कृपा करे

कोटिक पाप कटत पल छिन में।

**अंतरा**

गुरू की महिमा हरि सों न्यारी

वेद पुरानन सब ही विचारी।

| x | | | | 2 | | | | 0 | | | | 3 | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 |
| **स्थाई** | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | रे | - | सा | सा | नीसा | रे | - | सारे |
| | | | | | | | | जो | - | गु | रू | कृ | पा | - | क |
| गम | - | - | - | रेसा | - | सा | - | | | | | | | | |
| रे | - | - | - | - | - | - | - | | | | | | | | |
| | | | | | | | | सामं | - | म | प | प | - | प | प |
| | | | | | | | | को | - | टि | क | पा | - | प | क |
| म | मप | प | नी | ग | गम | रे | सा | | | | | | | | |
| ट | त- | प | ल | छि | न- | में | - | | | | | | | | |
| **अंतरा** | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | म | म | प | - | नी | प | नी | - |
| | | | | | | | | गु | रू | की | - | म | हि | मा | - |
| सां | सां | सां | - | नीसां | सां | सां | - | | | | | | | | |
| ह | रि | सों | - | न्या | - | री | - | | | | | | | | |
| | | | | | | | | नीसां | सां | सां | सां | रें | - | सां | सां |
| | | | | | | | | वे | - | द | पु | रा | - | न | न |
| नीसां | नीसां | सां | रें | नीध | नी | प | - | | | | | | | | |
| स | ब | ही | वि | चा | - | री | - | | | | | | | | |

## 10.5.2 दरबारी कान्हड़ा छोटा ख्याल (2) द्रुत लय तीन ताल

स्थाई-

घर जाने दे छाँड़ मोरि बैयां
हाँ हाँ करत तोरे पैयाँ परत हूँ
मोहन से झगरैयां ।

अन्तरा

नगर बगर के लोगवा सुनत हैं
चर्चा करत ब्रज नारियां,
जाओ जि जाओ जि तुम खाओगे गालियाँ
मोहन से झगरैयां॥

| x 1 | 2 | 3 | 4 | 2 5 | 6 | 7 | 8 | 0 9 | 10 | 11 | 12 | 3 13 | 14 | 15 | 16 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **स्थाई** | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | (रे)म | (रे)म | रे | रे | सा | (सा)नी | - | सा | रे | रे |
| | | | | | | घ | र | जा | ने | दे | छां | ऽ | ड | मो | रि |
| (रे)प | (म)प | (म)ग | - | - | - | - | - | रे | रे | - | सा | सा | सा | सा | सा |
| बैं | ऽ | यां | ऽ | ऽ | ऽ | ऽ | ऽ | हाँ | हाँ | ऽ | क | र | त | तो | रे |
| (सा)नी | सा | - | रे | ध | नि | प | - | म | - | म | म | प | - | प | प |
| पैं | याँ | ऽ | प | र | त | हूँ | ऽ | मो | ऽ | ह | न | से | ऽ | झ | ग |
| म | - | प | नी | (म)ग | - | | | | | | | | | | |
| रै | ऽ | ऽ | ऽ | यां | ऽ | | | | | | | | | | |

## 10.5.3 दरबारी कान्हड़ा राग की तानें

- गम रेसा नीसा धनी सा- गम रेसा नीसा
  धनी सा- गम रेसा नीसा धनी
- गम रेसा नीसा धनी सा- -- गम रेसा
  नीसा धनी सा- -- गम रेसा नीसा धनी
- नीसा रेसा गम रेसा मप नीप गम रेसा
  मप धनी सारें सांसां धनी पप गम रेसा
- नीसा रेसा गम रेसा मम रेसा मप नीप
  मप गम रेसा नीसा
- सारे सासा नीसा रेसा मम पप धनी नीप
  गम रेसा नीसा रेसा।
- नीसा रेसा गम रेसा मप नीप गम रेसा
  सारे सासा मम पप धनी पप गम रेसा
- नीरे सासा गम रेसा मप नीप धध नीप
  धनी सांसां धनी पप मप नीप गम रेसा
- नीसा रेसा धध नीसा गम रेसा मप नीप
  धनी पप मप नीप गम रेसा नीरे सासा

- मप मप गम रेसा नीनी पप मप मप

  गम रेसा नीरें सांसां धनी पप मप मप

  गम रेसा गंमं रेंसां धनी पग मरे सा-

- नीसां रेंसां गंमं रेंसां

  मप नीप गम रेसा

  ध़नि़ रेरे सासा गम

  रेरे सासा मप मप

- धनी रेसां नीसां रेसां

  धध नीप गम रेसा

  ध़नि़ नि़रे ध़नि़ नि़रे

  ध़नि़ नि़रे

- धनी सांनी पम गम

  रेसा मप धनी सां-

- रेरें सांनी धनी सारें

  सांनी पम गम रेसा

- सांनी पम गम रेसा

  मप धनी सांसां रेंसां

| | | | |
|---|---|---|---|
| • सारे | ग- | मम | रेसा |
| रेरे | साऩी | सा- | ऩीप़ |
| ऩीऩी | प़म़ | ध़ऩी | रेसा |

**स्वयं जांच अभ्यास 3**

10.11 दरबारी कान्हड़ा राग के छोटे ख्याल में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 1

घ) 9

10.12 दरबारी कान्हड़ा राग के छोटे ख्याल में सम पर कौन सा अक्षर (शब्द) आता है?

क) सम

ख) प

ग) कोई भी

घ) कोई भी अक्षर नहीं आता

10.13 तीन ताल में, 8 मात्रा की तान को किस मात्रा से शुरू करें कि वह सम पर समाप्त हो जाए?

क) 8

ख) 9

ग) 10

घ) 1

10.14 तीन ताल में, 16 मात्रा की तान को किस मात्रा से शुरू करें कि वह सम पर समाप्त हो जाए?

क) 16

ख) 9

ग) 1

घ) 12

## 10.6 सारांश

दरबारी कान्हड़ा राग भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत के गायन के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। दरबारी कान्हड़ा राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में छोटा ख्याल, तेज लय में गाया जाता है। छोटा ख्याल में तानों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तानों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ गाया जाता है।

## 10.7 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- छोटा ख्याल: गायन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी गीत रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा मध्य या द्रुत लय में गाई जाती हो उसे छोटा ख्याल कहते हैं।
- तान: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, गाया जाता है तो उसे तान कहते हैं।

## 10.8 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

**स्वयं जांच अभ्यास 1**

10.1 उत्तर: क)

10.2 उत्तर: ग)

10.3 उत्तर: ग)

10.4 उत्तर: घ)

10.5 उत्तर: क)

10.6 उत्तर: क)

10.7 उत्तर: ख)

**स्वयं जांच अभ्यास 2**

10.8 उत्तर: क)

10.9 उत्तर: ख)

10.10 उत्तर: क)

**स्वयं जांच अभ्यास 3**

10.11 उत्तर: ग)

10.12 उत्तर: ग)

10.13 उत्तर: ख)

10.14 उत्तर: ग)

## 10.9 संदर्भ


डॉ. केशव शर्मा से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त जानकारी, मार्च 2024।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2010). मधुर स्वरलिपि संग्रह (भाग 1-3), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।


## 10.10 अनुशंसित पठन


शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।


## 10.11 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग दरबारी कान्हड़ा का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग दरबारी कान्हड़ा के तीन आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग दरबारी कान्हड़ा के छोटा ख्याल को लिखिए।

प्रश्न 4. राग दरबारी कान्हड़ा के छोटे ख्याल की पांच तानों को लिखिए।

# इकाई-11
# राग तोड़ी का छोटा ख्याल

## इकाई की रूपरेखा


| क्रम | विवरण |
|---|---|
| 11.1 | भूमिका |
| 11.2 | उद्देश्य तथा परिणाम |
| 11.3 | तोड़ी राग का परिचय (गायन के संदर्भ में) |
| | स्वयं जांच अभ्यास 1 |
| 11.4 | तोड़ी राग का आलाप (गायन के संदर्भ में) |
| | स्वयं जांच अभ्यास 2 |
| 11.5 | राग तोड़ी का छोटा ख्याल तथा तानें |
| 11.5.1 | तोड़ी राग का छोटा ख्याल |
| 11.5.2 | तोड़ी राग के छोटे ख्याल की तानें |
| | स्वयं जांच अभ्यास 3 |
| 11.6 | सारांश |
| 11.7 | शब्दावली |
| 11.8 | स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर |
| 11.9 | संदर्भ |
| 11.10 | अनुशंसित पठन |
| 11.11 | पाठगत प्रश्न |

## 11.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA304PR की यह ग्यारहवीं इकाई है। इस इकाई में गायन संगीत के संदर्भ में, राग तोड़ी  का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग तोड़ी के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग तोड़ी का आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को को गा सकेंगे।

## 11.2 उद्देश्य तथा परिणाम

### सीखने के उद्देश्य

- तोड़ी राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।
- तोड़ी राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- तोड़ी  राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

### सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वादन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- तोड़ी  राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।

- तोड़ी  राग के आलाप, , छोटा ख्याल तथा तानों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- तोड़ी  राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को गाने में सक्षम होंगे।
- राग तोड़ी  के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और  अनुभव भी प्राप्त होगा।

## 11.3 तोड़ी राग का परिचय

राग - तोड़ी

थाट – तोड़ी

जाति – संपूर्ण- संपूर्ण

वादी - धैवत

संवादी - गंधार

स्वर – ऋषभ, गंधार, धैवत कोमल (रे ग ध), मध्यम तीव्र, (म') अन्य स्वर शुद्ध

न्यास के स्वर – षडज, गंधार, धैवत

समय – दिन का दूसरा प्रहर

समप्रकृतिक राग – गुर्जरी तोड़ी

आरोह: सा रे ग म' ध ऽ प, म' ध नी सां।

अवरोह: सां, नी ध प ऽ, म' ग, रे ग, रे सा।

पकड़:  ध नी सा, म' ग, रे ग रे सा।

तोड़ी राग, तोड़ी थाट का एक महत्वपूर्ण राग है। इस राग की जाति संपूर्ण-संपूर्ण है। तोड़ी राग का वादी स्वर धैवत तथा संवादी स्वर गंधार है। प्रस्तुत राग में ऋषभ, गंधार, धैवत कोमल (रे ग ध), मध्यम तीव्र (म') तथा अन्य स्वर शुद्ध लगते हैं। इस राग का वादन समय दिन का दूसरा प्रहर माना जाता है।

इस राग में षडज, गंधार, धैवत स्वरों पर न्यास किया जाता है। इस राग की प्रकृति शांत है। इस राग का आविष्कारक मियां तानसेन को माना जाता है। इसलिए इस राग को मियां की तोड़ी भी कहा जाता है। इस राग का विस्तार अधिकतर मन्द्र और मध्य सप्तक में किया जाता है।

मन्द्र सप्तक में यह राग विशेष रूप से अच्छा लगता है। इस राग का आरोह करते समय पंचम को अधिकतर छोड़ दिया जाता है। तोड़ी राग में रे ग रे सा स्वर समुदाय बार-बार प्रयुक्त होते हैं। आरोह में म' ध नि सां स्वर समुदाय का प्रयोग किया जाता है।

### स्वयं जांच अभ्यास 1

11.1 तोड़ी राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) ध

ख) नि

ग) रे

घ) ग

11.2 तोड़ी राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) ग

घ) सा

11.3 तोड़ी राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) दिन का दूसरा प्रहर

ग) मध्य रात्रि

घ) दोपहर

11.4 तोड़ी राग का आविष्कारक किसने किया था?

क) उ. विलायत खां

ख) पं. रवि शंकर

ग) स्वामी हरिदास

घ) तानसेन

11.5 तोड़ी राग में, निम्न में से कौन सा स्वर कोमल नहीं होता है?

क) षड़ज

ख) गंधार

ग) धैवत

घ) ऋषभ

11.6 तोड़ी राग में किस स्वर को वर्जित करते हैं?

क) कोई भी नहीं

ख) ग

ग) ध

घ) सा

11.7 तोड़ी राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) तोड़ी

ग) मारवा

घ) आसावरी

## 11.4 आलाप

- सा, ऩी सा रे रे सा, रे रे ग रे सा, सा,

  ऩी सा, ध ध ऩी ऩी सा,

  सा, रे ग रे सा।

- सा ऩी ध ऩी ऩी सा, सा, ऩी सा,

ऩी ध़ प़, प़, ध़ ऩी

ध़ म़ प़ ध़,

प़ म़ प़ ध़ ऩी सा।

- सा रे़ ग़ म़ म़ ग़,

  रे़ ग़ म़ ग़

  रे़ ग़ रे़ रे़ सा, सा,

  ऩी ध़ ऩी सा।

- सा रे़ सा ऩी ध़ ऩी

  ध़ प़ म़ प़ ध़

  ऩी ग़ रे़ ग़ रे़ सा, सा,

  सा रे़ ग़

  म़ म़ रे़ ग़ रे़ सा,

  ग़ रे़ ग़ म़

  ध़ प म़ ध़ ध़, म़

  रे़ ग़ रे़ सा।

- सा ऩी सा रे़ ग़ रे़, ग़ म़ ग़ रे़,

  ध़ प म़ ग़ रे़ ध़

  नी ध़ प म़ ग़,

ध़ नी़ सा रे सा।

- ग म॑ ध ध प, म॑, ग

म ध ध नी नी ध नी सां,

सां, रें गं रें सां, सां नी ध,

प म ध नी नी सां, नी रें रें सां,

सां नी ध, ध प म॑ प ध नी ध,

ध प म॑ रे ग रे सा, सा।

- सां नी ध प म॑ ध प, नी ध प म॑

रे ग रे सा, नी़ ध़ नी़ रे, सा,

रे ग रे सा सा।।

**स्वयं जांच अभ्यास 2**

11.8 क्या तोड़ी राग में म॑ ग रे ग रे सा स्वर संगति हो सकती है?

क) हां

ख) नहीं

11.9 क्या तोड़ी राग में ध़ ऽ नी़ ध़ प़ स्वर संगति हो सकती है?

क) हां

ख) नहीं

11.10 तोड़ी राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) रे ग म॑ ध ऽ प,

ख) म ग रे सा

ग) रे ग म प ध ऽ,

घ) म ग रे सा

## 11.5 राग तोड़ी का छोटा ख्याल तथा तानें

### 11.5.1 तोड़ी राग छोटा ख्याल द्रुत लय तीन ताल

**स्थायी**

लंगर कांकरिया जिन मारो मोरे अंगवा लग जाए लंगर।

**अंतरा**

सुन पावे मोरी सास ननदिया दौरि दौरि घर आवे लंगर।

| x | | | | 2 | | | | 0 | | | | 3 | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **1** | **2** | **3** | **4** | **5** | **6** | **7** | **8** | **9** | **10** | **11** | **12** | **13** | **14** | **15** | **16** |
| **स्थाई** | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | | | | | - | रे | सा | सा |
| | | | | | | | | | | | | - | लं | ग | र |
| ध | - | प | प | म' | - | प | ध | म' | ग | - | रे | ग | रे | सा | सा |
| कां | - | क | रि | या | - | जि | न | मा | - | - | रो | - | लं | ग | र |
| म' | - | प | प | म' | - | प | ध | म' | ग | - | रे | ग | रे | सा | सा |
| कां | - | क | रि | या | - | जि | न | मा | - | - | रो | - | मों | - | रे |
| नी | रे | ग | - | म' | - | प | ध | म' | - | ग | रे | | | | |
| अं | ग | वा | - | - | - | ल | ग | जा | - | - | - | | | | |
| **अंतरा** | | | | | | | | | | | | | | | |
| प | प | ग | - | म' | - | ध | ध | नी | - | सां | नी | सां | सां | सां | सां |
| सु | न | पा | - | वे | - | मो | री | सा | - | स | न | न | दि | या | - |
| सारें | गं | रें | नी | - | नी | सां | रें | नी | ध | नी | ध | - | प | ग | म |
| दौ | - | रि | दौ | - | रि | घ | र | आ | - | - | वे | - | लं | ग | र |
| ध | - | ध | नी | म' | - | प | ध | म' | ग | - | रे | | | | |
| कां | - | क | रि | या | - | जि | न | मा | - | - | रो | | | | |

## 11.5.2 तोड़ी राग की तानें

- धप मंरे गमं धनी धप मंरे गरे रेसा
- नीनी धप मंध नीसां नीध पमं रेग रेसा
- सांनी धप मंरे गमं धप मंरे गरे सा -
- रेंगं रेंसां नीसां धनी धप मंग रेग रेसा
- नीसां धनी धप मंग मंध पमं रेग रेसा
- सारे गग रेग गग रेग रेसा ऩीध़ ऩीसा
- सारे गमं मं ग मंमं गमं गग रेग रेसा
- मंध नीसां गमं धनी रेग मंध मं ग रेसा
- मं ध नीनी धप मंग मंध पमं रेग रेसा
- सांनी धमं धनी सांरें नीध पमं रेग रेसा
- सारे गमं धप मंग मंग गरे गरे सा -
- धप मंग रेग मंप धप मंग रेग रेसा ऩीसा ऩीसा
- सारे गमं धप मंग मंध नीध मंग रेग रे - सा -
- नीनी धनी धप मंध धप मंध पमं गरे गरे सा -
- गमं पध नीसां रेंगं गंरें गंरें सांसां रेंगं

रें सां   सां सां   नी नी   नी ध   ध ध   प प   म॑ म॑   ग ग   रे - सा -

- सा रे   सा रे   ग रे   ग ऩी   सा ऩी   रे सा   रे ऩी   सा -
  सा रे   - रे   ग -   ग म॑   - ध   नी -   ध सां   नी सां
  प ध   म॑ नी   ध नी   ध प   - म॑   ध नी   - नी   सां -
  सा रें   - सां   नी ध   प म॑   रे ग   रे सा   ग म॑   ध ग
  म॑ ध   ग म॑
- सा रे   ग रे   सा सा   ऩी सा   ऩी ऩी   ध़ प   म़॑ ध़   ऩी सा
  रे ग   रे ग   रे रे   सा सा   ऩी सा   ध़ ऩी   सा -   सा -
- सा रे   ग ग   रे ग   रे रे   सा सा   ऩी सा   रे ग   म॑ ग
  म॑ रे   ग ग   रे ग   रे रे   सा रे   ऩी ध़   ऩी रे   सा सा
- सा रे   ग म॑   ध प   म॑ ग   ध ध   म॑ प   म॑ ग   रे ग
  म॑ ध   नी नी   ध म॑   रे ग   म॑ प   ध म॑   रे ग   रे सा
- ध ध   प म॑   ग रे   ग म॑   प ध   नी नी   ध प   म॑ ध
  नी सां   सां रें   गं रें   सां नी   सां नी   ध प   म॑ ध   प म॑   रे ग   रे सा
- सा रे   ग म॑   रे ग   म॑ ध   नी ध   प म॑   ग रे   ग म॑
  ध नी   सां रें   गं रें   सां नी   सां नी   ध म॑   रे ग   रे सा
- सा रे   ग ग   रे ग   रे सा   ऩी सा   ध़ ऩी   सा रे   ग म॑

मं ग    रे ग    रे सा    ऩी सा    ध़ ऩी    सा रे    ग रे    सा -

- सा रे    ग मं    प ध    मं ध    नी नी    ध प    मं ध    नी सां

सां नी    सां नी    नी ध    प मं    ध प    मं ग    रे ग    रे सा

- सां -    सां नी    ध प    मं ग    ध -    ध प    मं रे    ग मं

रे ग,    मं मं    ग रे    ग रे    सा -    सा रे    सा ऩी    सा ध़

ध़ ऩी    सा रे    ग -    रे ग    मं -    ग मं    ध -

- ध़ ऩी    सा रे    ग रे    सा रे    सा रे    ग मं    प ध    मं ग

मं ग    मं ध    नी सां    नी ध    नी ध    नी सां    रें सां    नी सां

ध नी    सां रें    गं रें    सां रें    - सां    नी रें    सां नी    ध प

मं -    ध प    मं ध    मं रे    ग रे    सा -    ग मं    ध ग    मं ध    ग मं

- सा रे    ग रे    - मं    ग मं    ध -    नी नी    ध प    मं -

ध ध    प मं    ग -    ग मं    रे रे    रे ग    रे -    ग ग

रे सा    - -    सा रे    ग रे    - मं    ग मं    ध -    सा रे

ग रे    - मं    ग मं    ध -    सा रे    ग रे    - मं    ग मं

- ध़ऩीऩी    सा रे    साऩीनि़    ध़ प    मं़ ध़    ध़ ऩी    सा रे    सा सा

ऩी सा    ऩी ग    ग रे    ग रे    मं मं    ग मं    ग प    प ध

ध मं    प ध    प मं    रे ग    रे सा    सा रे    ग -    रे ग

मं -    ग मं    ध -    ध -

**स्वयं जांच अभ्यास 3**

11.11 तोड़ी राग के छोटे ख्याल में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 1

घ) 9

11.12 तोड़ी राग का बड़ा ख्याल मध्य लय में ही होता है?

क) हां

ख) नहीं

11.13 तोड़ी राग का छोटा ख्याल केवल एक ताल में ही गाते हैं?

क) हां

ख) नहीं

11.14 एक ताल में, 8 मात्रा की तान को किस मात्रा से शुरू करें कि वह सम पर समाप्त हो जाए?

क) 8

ख) 5

ग) 10

घ) 1

11.15 एक ताल में, 16 मात्रा की तान को किस मात्रा से शुरू करें कि वह सम पर समाप्त हो जाए?

क) 16

ख) 1

ग) 9

घ) 12

## 11.6 सारांश

तोड़ी राग भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत के गायन के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। तोड़ी राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में छोटा ख्याल, तेज लय में गाया जाता है। छोटे ख्याल में तानों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तानों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ गाया जाता है।

## 11.7 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- छोटा ख्याल: गायन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी गीत रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा मध्य या द्रुत लय में गाई जाती हो उसे छोटा ख्याल कहते हैं।
- तान: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, गाया जाता है तो उसे तान कहते हैं।

## 11.8 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

**स्वयं जांच अभ्यास 1**

11.1 उत्तर: क)

11.2 उत्तर: ग)

11.3 उत्तर: ग)

11.4 उत्तर: घ)

11.5 उत्तर: क)

11.6 उत्तर: क)

11.7 उत्तर: ख)

**स्वयं जांच अभ्यास 2**

11.8 उत्तर: क)

11.9 उत्तर: ख)

11.10 उत्तर: क)

**स्वयं जांच अभ्यास 3**

11.11 उत्तर: ग)

11.12 उत्तर: ख)

11.13 उत्तर: क)

11.14 उत्तर: ख)

11.15 उत्तर: ग)

## 11.9 संदर्भ

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

## 11.10 अनुशंसित पठन

भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

## 11.11 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग तोड़ी का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग तोड़ी के तीन आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग तोड़ी के छोटा ख्याल को लिखिए।

प्रश्न 4. राग तोड़ी के छोटे ख्याल की पांच तानों को लिखिए।

# इकाई-12
# राग भैरवी का छोटा ख्याल

## इकाई की रूपरेखा


| क्रम | विवरण |
|---|---|
| 12.1 | भूमिका |
| 12.2 | उद्देश्य तथा परिणाम |
| 12.3 | भैरवी राग का परिचय (गायन के संदर्भ में) |
| | स्वयं जांच अभ्यास 1 |
| 12.4 | भैरवी राग का आलाप (गायन के संदर्भ में) |
| | स्वयं जांच अभ्यास 2 |
| 12.5 | राग भैरवी का छोटा ख्याल तथा तानें |
| 12.5.1 | भैरवी राग का छोटा ख्याल 1 |
| 12.5.2 | भैरवी राग का छोटा ख्याल 2 |
| 12.5.3 | भैरवी राग के छोटे ख्याल की तानें |
| | स्वयं जांच अभ्यास 3 |
| 12.6 | सारांश |
| 12.7 | शब्दावली |
| 12.8 | स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर |
| 12.9 | संदर्भ |
| 12.10 | अनुशंसित पठन |
| 12.11 | पाठगत प्रश्न |

## 12.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA304PR की यह बारहवीं इकाई है। इस इकाई में गायन संगीत के संदर्भ में, राग भैरवी  का परिचय, आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग भैरवी के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से राग भैरवी का आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को को गा सकेंगे।

## 12.2 उद्देश्य तथा परिणाम

### सीखने के उद्देश्य

- भैरवी राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।
- भैरवी राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- भैरवी  राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

### सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- भैरवी  राग के स्वरूप की बुनियादी जानकारी प्रदान करना।

- भैरवी  राग के आलाप, छोटा ख्याल तथा तानों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- भैरवी  राग के आलाप, , छोटा ख्याल तथा तानों को गाने में सक्षम होंगे।
- राग भैरवी  के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और  अनुभव भी प्राप्त होगा।

## 12.3 भैरवी राग का परिचय

राग - भैरवी

थाट – भैरवी

जाति – संपूर्ण- संपूर्ण

वादी - मध्यम

संवादी - षड़ज

स्वर – ऋषभ, गंधार, धैवत, निषाद कोमल (रे ग ध नी), अन्य स्वर शुद्ध

न्यास के स्वर – षडज, मध्यम, पंचम

समय – प्रात:काल

समप्रकृतिक राग – बिलासखानी तोडी

आरोह: सा रे ग म प ध नी सां।

अवरोह: सां, नी ध प, म ग रे सा।

पकड़- म ग रे ग, सा रे सा, ग म प ध प, म ग रे सा।

भैरवी राग, भैरवी थाट का एक महत्वपूर्ण राग है। इस राग की जाति संपूर्ण-संपूर्ण है। भैरवी राग का वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षड़ज है। प्रस्तुत राग में ऋषभ, गंधार, धैवत, निषाद कोमल (रे ग ध नी) तथा अन्य स्वर शुद्ध लगते हैं। इस राग का वादन समय प्रात:काल माना जाता है परंतु इस राग को किसी भी समय बजाया जा सकता है ऐसा विद्वानों का मत है।

इस राग में षडज, मध्यम, पंचम स्वरों पर न्यास किया जाता है। इस राग में सभी 12 स्वरों का प्रयोग भी किया जाता है। इस राग का विस्तार अधिकतर मन्द्र और मध्य सप्तक में किया जाता है। मन्द्र सप्तक में यह राग विशेष रूप से अच्छा लगता है। भैरवी राग में म प ध प स्वर समुदाय बार-बार प्रयुक्त होते हैं।

**स्वयं जांच अभ्यास 1**

12.1 भैरवी राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) म

ख) प

ग) रे

घ) ग

12.2 भैरवी राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) नि

ग) सा

घ) प

12.3 भैरवी राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का दूसरा प्रहर

ख) सांयकाल

ग) प्रात:काल

घ) दोपहर

12.4 भैरवी राग का आविष्कारक किसने किया था?

क) उ. विलायत खां

ख) पं. रवि शंकर

ग) स्वामी हरिदास

घ) अज्ञात

12.5 भैरवी राग में, निम्न में से कौन सा स्वर कोमल नहीं होता है?

क) षड़ज

ख) गंधार

ग) धैवत

घ) ऋषभ

12.6 भैरवी राग में किस स्वर पर न्यास होता है?

क) प

ख) ग

ग) ध

घ) नी

12.7 भैरवी राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) भैरवी

ग) मारवा

घ) आसावरी

## 12.4 आलाप

- सा रे सा, ध नि सा, ग रे सा,
- नि ध प, प ध नि सा रे सा।
- सा रे ग ऽ रे ग सा, प ध प,

  म प ग, सा रे ग म प ऽ

  ध प म प ग म ग, सा ग प ऽ म, प ऽ ग म

ग़ ऽ रे़ सा, ध़ नि़ सा ग़ रे सा।

- नि़ सा ग़ म प ऽ ध़ प, ग़ म प ध़ प, नि़ ध़ प,

  प ध़ नि़ ऽ ध़ नि़ ऽ प ध़ प, म प नि़ ध़ प,

  सा ऽ प प ध़ प म प म ग़, सा रे़ ग़ म ग़,

  सा रे़ सा, ध़ नि़ सा रे़ सा।

- ग़ म ध़ नि़ सां, रें़ सां गं़ रें़ सां, सां रें़ गं़ सां रें़ मं गं़ सां

  रें़ सां, नि़ सां नि़ सां रें़ सां ध़ प, नि़ ध़ प प ऽ प

  ध़ ऽऽ प, ध़ म प म ग़, सा ग़ म प, म ग़ सा रे़ सा,

  ध़ नि़ ध़ सा, रे़ सा ग़ रे़ सा।

**स्वयं जांच अभ्यास 2**

12.8 क्या भैरवी राग में ग़ म॑ रे़ ग़ रे़ सा स्वर संगति हो सकती है?

क) हां

ख) नहीं

12.9 क्या भैरवी राग में ध़ ऽ नी़ ध़ प़ स्वर संगति हो सकती है?

क) हां

ख) नहीं

12.10 भैरवी राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) सा रे़ ग़ म ग़ रे़ सा

ख) म ग़ रे सा

ग) रे़ ग म प ध़ ऽ,

घ) म ग़ रे सा

## 12.5 राग भैरवी का छोटा ख्याल तथा तानें

### 12.5.1 भैरवी राग का छोटा ख्याल (1) द्रुत लय तीन ताल

**स्थायी**

घर जाने दो, करो मत रार मोसे,

गरजोरी ना करो तुम यशोदा कान्हा।

**अंतरा**

गौए चराओ, बंसिया बजाओ

पनघट ना आओ, मैं दुंगी गारी।

| x | | | 2 | | | 0 | | | | 3 | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 |
| **स्थाई** | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | ग | म | प | ध | प | म | ग | रे | सा | नी |
| | | | | | | घ | र | जा | ने | दो | क | रो | - | म | त |
| रे | रे | सा | ग | - | म | प | ध | सां | सां | रें | गं | सां | - | सां | - |
| रा | - | र | मो | - | से | ग | र | जो | री | ना | क | रो | - | तु | म |
| प | नी | ध | प | ग | म | | | | | | | | | | |
| य | शो | दा | का | - | न्हा। | | | | | | | | | | |
| **अंतरा** | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | ग | म | ध | नी | सांगं | रेंगं | रें | सां |
| | | | | | | | | गौ | - | ए | च | रा | - | ओ | - |
| नी | नी | सां | रें | नी | सां | ध | प | | | | | | | | |
| बं | सि | या | ब | जा | ओ | प | न | | | | | | | | |
| | | | | | | | | प | गं | मं | रें | - | सां | सां | सां |
| | | | | | | | | घ | ट | ना | आ | - | ओ | मैं | - |
| प | ध | म | प | ग | म | | | | | | | | | | |
| दुं | - | गी | गा | - | री | | | | | | | | | | |

## 12.5.2 भैरवी राग का छोटा ख्याल (2) द्रुत लय तीन ताल

**स्थाई**

सुराभरण भैरवी स्वनरंग,
ठाठ भैरवी संपूरन संग।

**अंतरा**

मध्यम वादी ससा सदा सुहागन
सर्वकोमला भैरवी रसरंग॥

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| X | | | | 2 | | | | 0 | | | | 3 | | | |
| **स्थायी** | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | ध | सां | ऽ | रें | सां | सां | ध | नि |
| | | | | | | | | सु | रा | ऽ | भ | र | ण | भै | र |
| सां | ऽ | ऽ | ऽ | नि | ध | प | प | | | | | | | | |
| वी | ऽ | ऽ | ऽ | स्व | न | रं | ग | | | | | | | | |
| | | | | | | | | प | ऽ | ध | नि | सां | सां | सां | ऽ |
| | | | | | | | | ठा | ऽ | ठ | भै | ऽ | र | वी | ऽ |
| नि | ध | प | म | ग | रे | ग | सा | | | | | | | | |
| सं | ऽ | पू | ऽ | र | न | अं | ग | | | | | | | | |
| **अंतरा** | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | | | म | ऽ | ध | नि | सां | सां | नि | सां |
| | | | | | | | | म | ऽ | ध्य | म | वा | दी | स | सा |
| सां | सां | ऽ | सां | ध | ऽ | रें | सां | | | | | | | | |
| स | दा | ऽ | सु | हा | ऽ | ग | न | | | | | | | | |
| | | | | | | | | मं | गं | रें | सां | सां | रें | सां | सां |
| | | | | | | | | स | र | व | को | ऽ | म | ला | ऽ |
| नि | ध | प | म | ग | रे | सा | सा | | | | | | | | |
| भै | ऽ | र | वी | र | स | रं | ग | | | | | | | | |

## 12.5.3 भैरवी राग की तानें

- सारे गम गरे सारे गम पम गरे साऽ
- गम पम पम गम गरे सारे गरे साऽ
- सारे गम मप गम पम गम गरे साऽ
- सारे गम गरे साऩी धप धऩी साऩी साऽ
- ऩीसा गम पऽ मप गम पम गरे साऽ
- सारे सारे गरे सारे ऩीसा ऩीसा रेसा साऽ
- सारेंं गरेंं सांनि धनि सांनि धप मग रेसा
- निसा गम पध पम गम पध निध पम
  गम पध निसां रेंसां सांनि धप मग रेसा
- सारे रेग गम मप पध धनी नीसां सारेंं
  सांनी नीध धप पम मग गरे रेसा साऽ
- सारे गम पध मप गम गरे गग रेसा
- सारे गरे गम गम पम गरे गग रेसा
- सांनी धनी धप मप गम गरे गग रेसा
- धऩी सारे साऩी सारे गग रेग मप धप

पम गम गरे गग रेसा रेग रेसा नीसा

- गम धप मप गम गरे सारे नीसा रेग

  सारे गम पध पम पग मरे गग रेसा

**स्वयं जांच अभ्यास 3**

12.11 भैरवी राग के छोटे ख्याल को केवल एकताल में ही गाते हैं?

क) हां

ख) नहीं

12.12 भैरवी राग के छोटे ख्याल में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 2

ख) 16

ग) 1

घ) 9

12.13 भैरवी राग के छोटे ख्याल में सम पर कौन सा 'शब्द' आता है?

क) केवल 'म' शब्द ही आता है

ख) केवल 'घ' शब्द ही आता है

ग) कोई भी शब्द आ सकता है

घ) सम पर कोई भी शब्द नहीं आता है

12.14 एक ताल में, 8 मात्रा के तोड़े को किस मात्रा से शुरू करें कि वह सम पर समाप्त हो जाए?

क) 8

ख) 5

ग) 10

घ) 1

12.15 एक ताल में, 12 मात्रा के तोड़े को किस मात्रा से शुरू करें कि वह सम पर समाप्त हो जाए?

क) 16

ख) 9

ग) 1

घ) 12

## 12.6 सारांश

भैरवी राग भारतीय शास्त्रीय संगीत का एक प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत के गायन के अंतर्गत इस राग को गाया जाता है। भैरवी राग का आलाप अनिबद्ध (ताल रहित) होता है। इस राग में छोटा ख्याल, तेज लय में गाया जाता है। छोटा ख्याल में तानों का अपना महत्व है और विभिन्न प्रकार की तानों को इसमें विभिन्न प्रकार की लयकारियों के साथ गाया जाता है।

## 12.7 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- छोटा ख्याल: गायन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी गीत रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा मध्य या द्रुत लय में गाई जाती हो उसे छोटा ख्याल कहते हैं।
- तान: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, गाया जाता है तो उसे तान कहते हैं।

## 12.8 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

**स्वयं जांच अभ्यास 1**

12.1 उत्तर: क)

12.2 उत्तर: ग)

12.3 उत्तर: ग)

12.4 उत्तर: घ)

12.5 उत्तर: क)

12.6 उत्तर: क)

12.7 उत्तर: ख)

**स्वयं जांच अभ्यास 2**

12.8 उत्तर: ख)

12.9 उत्तर: ख)

12.10 उत्तर: क)

**स्वयं जांच अभ्यास 3**

12.11 उत्तर: ख)

12.12 उत्तर: ग)

12.13 उत्तर: ग)

12.14 उत्तर: ख)

12.15 उत्तर: ग)

## 12.9 संदर्भ


श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।


## 12.10 अनुशंसित पठन


भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।


## 12.11 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग भैरवी का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. राग भैरवी के तीन आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग भैरवी के छोटा ख्याल को लिखिए।

प्रश्न 4. राग भैरवी के छोटे ख्याल की पांच तानों को लिखिए।

# इकाई-13
# ध्रुवपद

## इकाई की रूपरेखा


| क्रम | विवरण |
|---|---|
| 13.1 | भूमिका |
| 13.2 | उद्देश्य तथा परिणाम |
| 13.3 | ध्रुवपद |
| 13.3.1 | ध्रुवपद का परिचय |
| 13.3.2 | राग तोड़ी का परिचय |
| 13.3.3 | राग तोड़ी का आलाप |
| 13.3.4 | राग तोड़ी  में ध्रुवपद |
| | स्वयं जांच अभ्यास 1 |
| 13.4 | सारांश |
| 13.5 | शब्दावली |
| 13.6 | स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर |
| 13.7 | संदर्भ |
| 13.8 | अनुशंसित पठन |
| 13.9 | पाठगत प्रश्न |

## 13.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA304PR की यह तेरहवीं इकाई है। इस इकाई में गायन संगीत के संदर्भ में, ध्रुवपद का परिचय, आलाप, बंदिश, तानों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

ध्रुवपद उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत की एक कर्णप्रिय गायन शैली है। ध्रुपद एक गंभीर प्रकृति की गायन शैली है। उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में ध्रुवपद का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार ध्रुवपद को कई रागों में बांधकर अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी ध्रुवपद के स्वरूप के साथ-साथ उसके आलाप, बंदिश आदि को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही क्रियात्मक रूप से ध्रुवपद शैली को गा सकेंगे।

## 13.2 उद्देश्य तथा परिणाम

### सीखने के उद्देश्य

- ध्रुवपद  के स्वरूप की जानकारी प्रदान करना।
- ध्रुवपद को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- ध्रुवपद के आलाप, बंदिश तथा तानों को गाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को ध्रुवपद गायन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

### सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी ध्रुवपद गायन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- ध्रुवपद के आलाप, बंदिश  तथा तानों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- ध्रुवपद के आलाप, बंदिश  तथा तानों को गाने में सक्षम होंगे।

- ध्रुवपद के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

## 13.3 ध्रुवपद

### 13.3.1 ध्रुवपद का परिचय

ध्रुवपद उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत की एक कर्णप्रिय गायन शैली है। 'ध्रुवपद' शब्द का अर्थ है 'ध्रुव+पद' अर्थात् जिसके नियम निश्चित हों, जो नियमों में बंधा हुआ हो। नाट्यशास्त्र के अनुसार 'अलंकार, वर्ण, गान-क्रिया, यति, वाणी, लय आदि जहाँ परस्पर सम्बद्ध रहें, उन गीतों को 'ध्रुव' कहा गया है तथा जिन पदों में यह नियम शामिल हों, उन्हें 'ध्रुवपद' कहा जाता है। ध्रुपद एक गंभीर प्रकृति की गायन शैली है। ध्रुवपद का विकास ध्रुवा गीतों से हुआ। ध्रुवपद का प्रचलन मध्यकाल से अधिक रहा। कुछ विद्वानों के अनुसार ध्रुवपद गायन शैली का आविष्कार राजा मानसिंह तोमर ने किया परंतु कुछ का कहना है कि यह गायन शैली पहले से ही मौजूद थी तथा राजा मानसिंह तोमर ने केवल इसके विकास में योगदान दिया।

ध्रुवपद के चार अंग होते हैं स्थाई, अंतरा, संचारी तथा आभोग। आजकल ध्रुवपद के दो ही अंग देखने को मिलते हैं स्थाई तथा अंतरा। प्राचीन काल में ध्रुवपद संस्कृत में गाए जाते थे परंतु भाषा परिवर्तन के साथ यह अन्य भाषाओं में भी गाए जाने लगे। ध्रुवपद शैली एक कठिन गायन शैली मानी जाती है। इस शैली में गमक, कठिन लयकारियों आदि का प्रयोग होता है। विशेष रुप से पखावज पर बजाई जाने वाली तालें जैसे तीव्रा ताल, चारताल, आड़ा चारताल आदि में ध्रुवपद गाये जाते हैं। ध्रु

वपद की बंदिशों में भगवान की स्तुति, राजाओं की प्रशंसा आदि पर आधारित रचनाएं मिलती हैं। ध्रुवपद गायन शैली अपने आप में परिपूर्ण है। इस शैली को स्वामी हरिदास, तानसेन, बैजू बावरा आदि संगीतकारों ने अपनी साधना से विकसित किया है। ध्रुपद गायन की चार बाणियाँ मानी गई हैं-

1 गोबरहार वाणी, 2 खंडार वाणी, 3 नौहार वाणी, 4 डागर वाणी। वाणी को वर्तमान में घराना कहा जा सकता है। वर्तमान में चार घरानों में डागर बाणी और गौबरहार वाणी प्रचलन में हैं।

## 13.3.2 तोड़ी राग का परिचय

राग - तोड़ी

थाट – तोड़ी

जाति – संपूर्ण- संपूर्ण

वादी - धैवत

संवादी - गंधार

स्वर – ऋषभ, गंधार, धैवत कोमल (रे॒ ग॒ ध॒), मध्यम तीव्र, (म॑) अन्य स्वर शुद्ध

न्यास के स्वर – षडज, गंधार, धैवत

समय – दिन का दूसरा प्रहर

समप्रकृतिक राग – गुर्जरी तोड़ी

आरोह: सा रे॒ ग॒ म॑ ध॒ ऽ प, म॑ ध॒ नी सां।

अवरोह: सां, नी ध॒ प ऽ, म॑ ग॒, रे॒ ग॒, रे॒ सा।

पकड़: ध॒ नी॒ सा, म॑ ग॒, रे॒ ग॒ रे॒ सा।

तोड़ी राग, तोड़ी थाट का एक महत्वपूर्ण राग है। इस राग की जाति संपूर्ण-संपूर्ण है। तोड़ी राग का वादी स्वर धैवत तथा संवादी स्वर गंधार है। प्रस्तुत राग में ऋषभ, गंधार, धैवत कोमल (रे॒ ग॒ ध॒), मध्यम तीव्र (म॑) तथा अन्य स्वर शुद्ध लगते हैं। इस राग का वादन समय दिन का दूसरा प्रहर माना जाता है। इस राग में षडज, गंधार, धैवत स्वरों पर न्यास किया

जाता है। इस राग की प्रकृति शांत है। इस राग का आविष्कारक मियां तानसेन को माना जाता है। इसलिए इस राग को मियां की तोड़ी भी कहा जाता है। इस राग का विस्तार अधिकतर मन्द्र और मध्य सप्तक में किया जाता है। मन्द्र सप्तक में यह राग विशेष रूप से अच्छा लगता है। इस राग का आरोह करते समय पंचम को अधिकतर छोड़ दिया जाता है। तोड़ी राग में रे ग रे सा स्वर समुदाय बार-बार प्रयुक्त होते हैं। आरोह में म॑ ध नि सां स्वर समुदाय का प्रयोग किया जाता है।

## 13.3.3 आलाप

- सा, ऩी सा रे रे सा, रे रे ग रे सा, सा,

  ऩी सा, ध ध ऩी ऩी सा, सा, रे ग रे सा।

- सा ऩी ध ऩी ऩी सा, सा, ऩी सा, ऩी ध प़, प़, ध

  ऩी ध म॑ प़ ध, प़ म प़ ध ऩी सा।

- सा रे ग म॑ म॑ ग, रे ग म॑ ग रे ग रे रे

  सा, सा, ऩी ध ऩी सा। सा रे सा ऩी ध ऩी

  ध प़ म॑ प़ ध ऩी ग रे ग रे सा, सा,

  सा रे ग म॑ म॑ रे ग रे सा, ग रे ग म॑

  ध प म॑ ध ध, म॑ रे ग रे सा।

- सा ऩी सा रे ग रे, ग म॑ ग रे, ध प म॑ ग रे

  ध नी ध प म॑ ग, ध ऩी सा रे सा।

## 13.3.4 राग तोड़ी में ध्रुपद ताल: चारताल

**स्थाई**

हर- हर शिव शंकर गंगाधर पिनाकि
पारवती अरधांगी सोहै।

**अंतरा**

नर रुंड माल कंठ और वेष विराजत,
भस्म अंग सेत बसन सेत मोहे ॥

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| x | | 0 | | 2 | | 0 | | 3 | | 4 | |
| **स्थाई-** | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | ध | मग | रे | ग | रे | सा |
| | | | | | | ह | sर | ह | र | शि | व |
| नि | सारे | ग | म' | प | - | | | | | | |
| शं | ss | क | र | गं | s | | | | | | |
| | | | | | | म' | प | ध | म' | ग | ग |
| | | | | | | गा | s | s | ध | र | पि |
| म' | ध | ध | नि | सा | नि | | | | | | |
| ना | s | कि | पा | s | र | | | | | | |
| | | | | | | ध | प | म' | प | ध | म' |
| | | | | | | व | थी | अ | र | s | धां |
| ग | रे | - | रे | - | सा | | | | | | |
| s | गी | s | सो | s | हे | | | | | | |

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| x | | 0 | | 2 | | 0 | | 3 | | 4 | |
| **अंतरा** | | | | | | | | | | | |
| | | | | | | प | ग | - | म | - | ध |
| | | | | | | न | र | s | यूं | s | ड |
| नि | सा | नि | सा | - | सा | | | | | | |
| मा | s | ल | अं | s | ठ | | | | | | |
| | | | | | | सा | ध | - | नि | सा | रे |
| | | | | | | औ | र | s | वे | s | ष |
| ग | रे | सा | नि | सा | निध | | | | | | |
| वि | रा | s | ज | s | तs | | | | | | |
| | | | | | | म | ध | निसा | निध | नि | ध |
| | | | | | | भ | s | स्म | अंs | s | ग |
| प | - | मध | नि | ध | प | | | | | | |
| से | s | तs | ब | स | न | | | | | | |
| | | | | | | म | मग | रे | ग | रे | सा |
| | | | | | | से | ss | त | सो | s | हे |

## स्वयं जांच अभ्यास 1

13.1 ध्रुवपद किस प्रकृति क गायन शैली है?

क) गंभीर

ख) चंचल

ग) करूण

घ) उपरोक्त में से काई नहीं

13.2 ध्रुवपद के कितने अंग होते थे?

क) 2

ख) 4

ग) 6

घ) 3

13.3 प्राचीन काल में ध्रुवपद मुख्यत: किस भाषा में गाए जाते थे?

क) हिन्दी

ख) फारसी

ग) संस्कृत

घ) बृज भाषा

13.4 ध्रुवपद के साथ किस वाद्य की संगति होती है?

क) तबला

ख) मृदंग

ग) डुग्गी

घ) पखावज

13.5 ध्रुवपद में कठिन लयकारियों का प्रयोग किया जाता है?

क) हां

ख) नहीं

13.6 ध्रुवपद का विकास ------- गीतों से हुआ।

क) जाति

ख) ध्रुवा

ग) प्रबंध

घ) ख्याल

13.7 ध्रुवपद की कितनी वाणियां थी

क) 2

ख) 3

ग) 4

घ) 6

## 13.4 सारांश

ध्रुवपद उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत की एक कर्णप्रिय तथा गंभीर प्रकृति की गायन शैली है। ध्रुवपद का विकास ध्रुवा गीतों से हुआ। ध्रुवपद के चार अंग होते हैं स्थाई, अंतरा, संचारी तथा आभोग परन्तु आजकल ध्रुवपद के दो ही अंग देखने को मिलते हैं स्थाई तथा अंतरा। प्राचीन काल में ध्रुवपद संस्कृत में गाए जाते थे परंतु भाषा परिवर्तन के साथ यह अन्य भाषाओं में भी गाए जाने लगे। इस शैली में गमक, कठिन लयकारियों आदि का प्रयोग होता है। विशेष रुप से पखावज पर बजाई जाने वाली तालें जैसे तीव्रा ताल, चारताल, आड़ा चारताल आदि में ध्रुवपद गाये जाते हैं।

## 13.5 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- छोटा ख्याल: गायन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी गीत रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा मध्य या द्रुत लय में गाई जाती हो उसे छोटा ख्याल कहते हैं।
- तान: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, गाया जाता है तो उसे तान कहते हैं।

## 13.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

**स्वयं जांच अभ्यास 1**

13.1 उत्तर: क)

13.2 उत्तर: ख)

13.3 उत्तर: ग)

13.4 उत्तर: घ)

13.5 उत्तर: क)

13.6 उत्तर: ख)

13.7 उत्तर: ग)

## 13.7 संदर्भ


श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2010). मधुर स्वरलिपि संग्रह भाग (भाग 1-3), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2015). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।


## 13.8 अनुशंसित पठन


श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2010). मधुर स्वरलिपि संग्रह भाग (भाग 1-3), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). क्रमिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।


## 13.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. ध्रुवपद का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. किसी भी राग में ध्रुवपद को लिखिए।

प्रश्न 3. किसी भी राग में ध्रुवपद को गाकर सुनाइए।

# इकाई-14
# एकताल में द्रुत गत/रजाखनी गत

## इकाई की रूपरेखा


| क्रम | विवरण |
|---|---|
| 14.1 | भूमिका |
| 14.2 | उद्देश्य तथा परिणाम |
| 14.3 | राग बागेश्री |
| 14.3.1 | बागेश्री राग का परिचय |
| 14.3.2 | बागेश्री राग का आलाप |
| 14.3.3 | एक ताल में बागेश्री राग की द्रुत गत/रजाखनी गत |
| 14.3.4 | बागेश्री राग के तोड़े |
| | स्वयं जांच अभ्यास 1 |
| 14.4 | सारांश |
| 14.5 | शब्दावली |
| 14.6 | स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर |
| 14.7 | संदर्भ |
| 14.8 | अनुशंसित पठन |
| 14.9 | पाठगत प्रश्न |

## 14.1 भूमिका

संगीत (वादन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA204PR की यह पंद्रहवीं इकाई है। इस इकाई में वादन संगीत के संदर्भ में, राग बागेश्री का परिचय, आलाप, एक ताल में द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति के माध्यम से विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों का प्रस्तुतिकरण विशेष रूप से होता है, जो सुनने में मधुरता से युक्त, कर्णप्रिय, वैचित्रतापूर्ण तथा आनंददायक होता है। आज के समय में शास्त्रीय संगीत के कलाकार रागों को कई तालों में बांधकर अपने मंच प्रदर्शन के समय प्रस्तुत करते हैं। प्रस्तुत राग का, शास्त्रीय संगीत के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में भी प्रयुक्त होता है, जिसके आधार पर कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि का निर्माण हुआ है तथा हो रहा है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी राग बागेश्री में, एकताल में द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि पद्धति में लिख सकने का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे, साथ ही क्रियात्मक रूप से  बजा सकेंगे।

## 14.2 उद्देश्य तथा परिणाम

### सीखने के उद्देश्य

- बागेश्री राग के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी प्रदान करना।
- एक ताल में द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को भातखंडे स्वरलिपि में लिखने की क्षमता विकसित करना।
- एक ताल में द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- छात्र को वादन के दौरान सुधार करने का प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करना।

### सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी वादन के तकनीकी पहलुओं से अच्छी तरह परिचित हो जाएगा
- एक ताल में द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को लिखने की निपुणता प्राप्त करने में सक्षम होंगे।
- एक ताल में द्रुत गत/रजाखनी गत तथा तोड़ों को बजाने में सक्षम होंगे।

- एक ताल में द्रुत गत/रजाखनी गत के विभिन्न रचनात्मक पहलुओं को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी और अनुभव भी प्राप्त होगा।

## 14.3 राग बागेश्री

### 14.3.1 बागेश्री राग का परिचय

राग - बागेश्री

थाट - काफ़ी

जाति - औडव संपूर्ण

वादी - मध्यम

संवादी - षड्ज

स्वर - गंधार तथा निषाद कोमल (ग़ नि़)

वर्जित - आरोह में रिषभ तथा पंचम

समय - रात्रि का तीसरा प्रहर

समप्रकृतिक राग - रागेश्री

आरोह – ऩी सा ग़ म ध नि़ सां

अवरोह - सां नि़ ध, म प ध ग़, म ग़ रे सा

पकड़ - सां नि़ ध म प ध ग़, रे सा

बागेश्री राग काफी थाट का एक राग है। इसकी जाति औडव-संपूर्ण मानी जाती है। वादी स्वर मध्यम तथा संवादी स्वर षड्ज है। इस राग में गंधार तथा निषाद कोमल प्रयुक्त होते हैं। बागेश्री राग के आरोह में रिषभ तथा पंचम वर्जित रहते हैं।

इसका समय रात्रि का तीसरा प्रहर माना जाता है। बागेश्री एक अत्यन्त मधुर राग है। इस राग का उपयोग कर विद्वानों ने कई मधुर सांगीतिक रचनाएं की हैं।

आरोह करते समय रिषभ वर्जित रहता है अतः प्रारम्भ में नी सा ग म ध, नी सा ग म आदि किया जाता है। इस राग में षड्ज से सीधे मध्यम पर भी आते हैं। जैसे-नी सा म ग रे सा। षड्ज से मध्यम पर आना इस राग की अपनी विशेषता है। बागेश्री राग में पंचम का अल्प प्रयोग होता है।

राग का अवरोह करते समय पंचम का प्रयोग केवल एक विशेष ढंग से किया जाता है, जैसे सां नी ध, म प ध ऽ ग, म ग रे सा। पंचम का सीधा प्रयोग राग में नहीं किया जाता है, जैसे सां नी ध प म आदि।

इस राग का प्रमुख स्वर समुदाय ध़ नी सा म, ग म ध नी ध तथा म प ध ग ऽ है। इन्हीं के आधार पर आलाप तान आदि की रचनाएं की जाती हैं। इस राग में ध ग की संगति प्रयुक्त होती है, जैसे- म प ध ग, रे सा। बाग्रश्री राग का आरम्भ (आलाप) सा नी ध़ नी सा म या ध़ नी सा म करते हुए ही करना चाहिए।

इसका समप्रकृतिक राग रागेश्री है। दोनों में अंतर यह है कि बागेश्री में पंचम का प्रयोग किया जाता है वही रागेश्री में पंचम वर्जित रहता है। बागेश्री में कोमल गंधार का प्रयोग है वहीं दूसरी ओर रागेश्री में गंधार शुद्ध है जैसे- बागेश्री - नी सा म ग, म ध नी ध, म प ध ग, म ग रे सा। रागेश्री – नी सा ग म, ग म ध नी ध म, ग म रे सा।

## 14.3.2 बागेश्री राग का आलाप

- सा, नी सा, सा, नी ध़ - सा रे सा,
- ध़ नी नी ध़ नी सा,

  सा नी ध़ म़ -, म़

  ध़ नी नी सा, सा,

- ध़ ऩी सा म ग – म ग रे सा
- सा ऩी ध़ ऩी ध़ -, म़ म़ ध़,

  म़ ध़ ऩी ऩी सा, सा
- ध़ ऩी सा म -, ग म ग रे सा, ग

  म ग – ग म ध –

  म ग, म ग रे सा
- म ग ध, ध म – ध नी ध म,

  म ध नी नी सां, सां
- सां – गं गं रें सां -, ध नी नी सां,

  मं गं रें सां सां,
- सां नी ध नी ध – म प ध

  ग – म ग

  रे सा, ध़ ऩी ऩी सा

  म ग रे सा, सा

## 14.3.3 एकताल में बागेश्री राग की द्रुत गत/रजाखनी गत

**राग: बागेश्री** **ताल: एक ताल** **लय: द्रुत लय**

| **x** | | **0** | | **2** | | **0** | | **3** | | **4** | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **1** | **2** | **3** | **4** | **5** | **6** | **7** | **8** | **9** | **10** | **11** | **12** |
| **स्थाई** | | | | | | | | | | | |
| सा | गग | म | ग | -ग | रे | सा | नी | सा | ग | रें | नी |
| दा | दिर | दा | दा | ऽर | दा | रा | दा | रा | ऽ | दा | रा |
| ध़ | -ध़ | म़ | ध़ | -नी | नी | सा | नी | ध़ | नीनी | गम | गरे |
| दा | ऽर | दा | दा | ऽर | दा | रा | दा | रा | दिर | दिर | दिर |
| **अन्तरा** | | | | | | | | | | | |
| म | गग | म | ध | -ध | ध | नी | -नी | नी | ध | -ध | नी |
| दा | दिर | दा | दा | ऽर | दा | रा | दा | रा | ऽ | दा | रा |
| सां | -सां | सां | नी | -नी | सां | ध | नी | सांमं | गंमं | गं | रें |
| दा | ऽर | दा | दा | ऽर | दा | दा | रा | दिर | दिर | दा | रा |
| सां | गंगं | ममं | गं | -गं | रें | सां | नी | सां | नीनी | ध | नी |
| दा | दिर | दिर | दा | ऽर | दा | दा | रा | दा | दिर | दा | रा |
| ध | -ध | ध | म | प | ध | ग | रें | -रे | रे | सा | धनी |
| दा | ऽर | दा | दा | रार | दा | रा | दा | -द | दा | रा | दिर |

## 14.3.4 बागेश्री राग के तोड़े

- सांनी धनी सांनी धनी धम गम गरे साऩी
  ध़ऩी साध़ ऩीसा ध़ऩी
- गम धनी सांनी धनी सां- म- सा- --
  गम धनी सांनी धनी सां- म- सा- --
  गम धनी सांनी धनी सां- म- सा- --
- गम धनी सांनी धनी सां- सां- सां- --
  गम धनी सांनी धनी सां- सां- सां- --
  गम धनी सांनी धनी सां- सां- सां- --
- ऩीसा गम धनी धम गम धम गरे सासा
  ऩीसा गम गरे सा- ऩीसा गम गरे सा-
  ऩीसा गम गरे सा-
- सांनी धनी धम पध ग- मग रेसा ऩीसा
  गम गम ध- मग रेसा साग मग मध
  -म गरे सासा - ग मग मध -म गरे
- धऩी सा,ध़ ऩीसा, ध़ऩी, गम ध,ग मध, गम,
  धनी सां,ध नीसां, धनी, धनी सांनी धम गम

धम गम गरे सासा गम धनी सां- गम

धनी सां- गम धनी

**स्वयं जांच अभ्यास 1**

14.1 बागेश्री राग का वादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) म

ख) नि

ग) नी

घ) ग

14.2 बागेश्री राग का संवादी स्वर निम्न में से कौन सा है?

क) रे

ख) सा

ग) प

घ) म

14.3 बागेश्री राग का समय निम्न में से कौन सा है?

क) दिन का प्रथम प्रहर

ख) दिन का तीसरा प्रहर

ग) रात्रि का तीसरा प्रहर

घ) दोपहर

14.4 बागेश्री राग में, निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में कोमल होता है?

क) कोई भी नहीं

ख) षड़ज

ग) मध्यम

घ) गंधार

14.5 बागेश्री राग में निम्न में से कौन सा स्वर आरोह में वर्जित होता है?

क) प

ख) म

ग) म

घ) सा

14.6 बागेश्री राग का थाट निम्न में से कौन सा है?

क) कल्याण

ख) काफी

ग) भैरवी

घ) तोड़ी

14.7 बागेश्री राग के संदर्भ में निम्न में से कौन सी स्वर संगति ठीक है?

क) ध नि ध प, म॑ ग

ख) ध सां नि ध प, म ग

ग) नि ध म प ध ग

घ) ध नि सां नी ध म ग

14.8 बागेश्री राग की बंदिशों/गतों में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 9

ख) 16

ग) 2

घ) 1

14.9 बागेश्री राग की बंदिशों/गतों के साथ केवल एकताल का ही प्रयोग होता है।

क) नहीं

ख) हां

14.10 बागेश्री राग, काफी तथा श्री रागों के मिश्रण से बना है।

क) सही

ख) गलत

## 14.4 सारांश

बागेश्री राग भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचलित राग है। शास्त्रीय संगीत की वादन विधा के अंतर्गत इस राग को बजाया जाता है। शास्त्रीय संगीत में रागों के प्रस्तुतिकरण के लिए तथा संगीत के अभ्यास के लिए राग का अभ्यास शुरू से ही किया जाता है। इस राग में द्रुत गत/रजाखनी गत को तीन ताल के अतिरिक्त अत्य तालों में भी बजाया जाता है। इसमें

## 14.5 शब्दावली

- आलाप: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, अनिबद्ध (ताल रहित) रूप सें राग के स्वरों का विस्तार धीमी लय में करना, आलाप कहलाता है।
- द्रुत गत: वादन के अंतर्गत, राग के समस्त लक्षणों को ध्यान में रखते हुए, ऐसी स्वर रचना, जो स्वरबद्ध, लयबद्ध व तालबद्ध हो तथा द्रुत लय में बजाई जाती हो उसे द्रुत गत कहते हैं।
- तोड़ा: साधारण रूप से राग के स्वरों का विस्तार जब विभिन्न प्रकार की लयों तथा लयकारियों में बांधकर, बजाया जाता है तो उसे तोड़ा कहते हैं।
- लय: वादन/आायन में बीत रहे समय की समान गति को 'लय' कहा जाता है।
- द्रुत लय: वादन/गायन के अंतर्गत जब लय बहुत तेज गति मे चलती है तो उसे द्रुत लय कहते हैं।
-

## 14.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

**स्वयं जांच अभ्यास 1**

14.1 उत्तर: क)
14.2 उत्तर: ख)
14.3 उत्तर: ग)
14.4 उत्तर: घ)
14.5 उत्तर: क)
14.6 उत्तर: ख)
14.7 उत्तर: ग)
14.8 उत्तर: घ)
14.9 उत्तर: क)
14.10 उत्तर: ख)

## 14.7 संदर्भ


श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (1999). मधुर स्वरलिपि संग्रह (भाग 1-3), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

श्रीवास्तव, हरिश्चद्र. (2045). राग परिचय (भाग 1-4), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2004). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।


## 14.8 अनुशंसित पठन


भातखंडे, विष्णुनारायण. (2017). कर्मिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।


## 14.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. राग बागेश्री का परिचय लिखिए/बताइए।

प्रश्न 2. राग बागेश्री का आलाप लिखिए।

प्रश्न 3. राग बागेश्री की विलंबित गत को लिखिए।

प्रश्न 4. राग बागेश्री में पांच तोड़ों को लिखिए।

# इकाई-15
# ताल

## इकाई की रूपरेखा


| क्रम | विवरण |
|---|---|
| 15.1 | भूमिका |
| 15.2 | उद्देश्य तथा परिणाम |
| 15.3 | तीन ताल, दादरा, एकताल, चौताल का  परिचय तथा स्वरलिपि |
| 15.3.1 | तीन ताल का परिचय तथा स्वरलिपि |
| 15.3.2 | दादरा ताल का परिचय तथा स्वरलिपि |
| 15.3.3 | एक ताल का परिचय तथा स्वरलिपि |
| 15.3.4 | चौ ताल का परिचय तथा स्वरलिपि |
| | स्वयं जांच अभ्यास 1 |
| 15.4 | सारांश |
| 15.5 | शब्दावली |
| 15.6 | स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर |
| 15.7 | संदर्भ |
| 15.8 | अनुशंसित पठन |
| 15.9 | पाठगत प्रश्न |

## 15.1 भूमिका

संगीत (गायन तथा वादन) में, स्नातक के क्रियात्मक पाठ्यक्रम MUSA304PR की यह पंद्रहवीं इकाई है। इस इकाई में संगीत में प्रयुक्त होने वाली कुछ तालों को विस्तार पूर्वक प्रस्तुत किया गया है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत में तालों का विशेष महत्व रहता है। गायन और वादन के साथ विभिन्न प्रकार की तालों को बजाया जाता है। इन तालों में तीन ताल, दादरा ताल, एक ताल तथा चौताल आदि तालें काफी प्रयोग की जाती हैं। इन तालों को एकगुण, दुगुण, तिगुण व चौगुण लयकारियों में तबले पर बजाया जाता है तथा हाथ पर ताली देकर भी प्रदर्शित किया जाता है। इस तालों को शास्त्रीय संगीत की बंदिशों के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि क साथ भी बजाया जाता है।

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी तीन ताल, दादरा ताल, एक ताल तथा चौताल की मूलभूत जानकारी प्राप्त कर सकेंगे तथा क्रियात्मक रूप से उन्हें बजा सकेगें।

## 15.2 उद्देश्य तथा परिणाम

### सीखने के उद्देश्य

- तीन ताल, दादरा ताल, एक ताल तथा चौताल का परिचय प्रदान करना।
- तीन ताल, दादरा ताल, एक ताल तथा चौताल को बजाने की क्षमता विकसित करना।
- तीन ताल, दादरा ताल, एक ताल तथा चौताल की लिखने की क्षमता विकसित करना।
- विद्यार्थी में कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास करना।

### सीखने के परिणाम

- विद्यार्थी, ताल के संदर्भ में, तीन ताल, दादरा ताल, एक ताल तथा चौताल के विषय में जान पाएगा।
- विद्यार्थी, ताल के संदर्भ में, तीन ताल, दादरा ताल, एक ताल तथा चौताल को बजाने में सक्षम होगा।

- विद्यार्थी में, ताल के संदर्भ में, तीन ताल, दादरा ताल, एक ताल तथा चौताल के वादन द्वारा कल्पना, उपज तथा सृजनात्मक गुणों का विकास होगा।
- विद्यार्थी में, ताल के संदर्भ में, तीन ताल, दादरा ताल, एक ताल तथा चौताल को मंच पर प्रदर्शित करने की क्षमता विकसित होगी।

## 15.3 तीन ताल, दादरा ताल, एक ताल तथा चौताल

### 15.3.1 तीन ताल का परिचय तथा स्वरलिपि

| | |
|---|---|
| मात्राएं | 16 |
| विभाग | 04 |
| ताली | 03 |
| खाली | 01 |

तीन ताल 16 मात्रा की ताल है। यह ताल 4 विभागों में विभक्त है। हर विभाग 4 मात्राओं के होते हैं। इस ताल में पहली मात्रा पर सम, पांचवी व तेहरवीं मात्रा पर ताली तथा नौवीं मात्रा खाली होती है। इस ताल का प्रयोग शास्त्रीय संगीत, उप शास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत इत्यादि लगभग सभी विधाओं में होता है। यह ताल विलंबित लय, मध्य लय, द्रुत लय तीनों लयों में बजाई जाती है। इस ताल में बड़ा ख्याल, छोटा ख्याल, विलंबित गतें, द्रुत गतें, ठुमरी इत्यादि गाए-बजाए जाते हैं। फिल्मी संगीत में इस ताल का काफी प्रयोग होता है।

**तालिपि**

**एकगुण**

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **x** | | | | **2** | | | |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 |
| धा | धीं | धीं | धा | धा | धीं | धीं | धा |
| **0** | | | | **3** | | | |
| 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 |
| धा | तीं | तीं | ता | ता | धीं | धीं | धा |

**दुगुण**

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **x** | | | | **2** | | | |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 |
| धाधीं | धींधा | धा धीं | धींधा | धातीं | तीं ता | ताधीं | धींधा |
| **0** | | | | **3** | | | |
| 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 |
| धाधीं | धींधा | धा धीं | धींधा | धातीं | तीं ता | ताधीं | धींधा |

**तिगुण**

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **x** | | | **2** | | | | |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 |
| धाधीं धीं | धा धा धीं | धींधाधा | तींतीं ता | ताधींधीं | धा धाधीं | धींधा धा | धीं धींधा |
| **0** | | | | **3** | | | |
| 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 |
| धातीं तीं | तिताधीं | धींधा धा | धीं धींधा | धा धींधीं | धाधातीं | तींताता | धींधींधा |

**चौगुण**

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 |
| धाधींधींधा | धाधींधींधा | धातींतींता | ताधींधींधा | धाधींधींधा | धाधींधींधा | धातींतींता | ताधींधींधा |
| **x** | | | | **2** | | | |
| 9 | 10 | 11 | 12 | 13 | 14 | 15 | 16 |
| धाधींधींधा | धाधींधींधा | धातींतींता | ताधींधींधा | धाधींधींधा | धाधींधींधा | धातींतींता | ताधींधींधा |
| **0** | | | | **3** | | | |

## 15.3.2 दादरा ताल का परिचय तथा स्वरलिपि

| | |
|---|---|
| मात्राएं | 06 |
| विभाग | 02 |
| ताली | 01 |
| खाली | 01 |

एक ताल 06 मात्रा की ताल है। यह ताल 2 विभागों में विभक्त है। दोनों विभाग 3 मात्राओं के हैं। इस ताल में पहली मात्रा पर ताली व चौथी मात्रा पर खाली होती है। इस ताल का प्रयोग शास्त्रीय संगीत, उप शास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत इत्यादि लगभग सभी विधाओं में होता है। यह ताल मध्य लय, द्रुत लय में बजाई जाती है। इस ताल को भारतीय सुगम संगीत में गीत, गज़ल, भजन आदि के साथ बजाया जाता है। यह तबले पर बजाए जाने वाला एक ताल है।

### काललिपि

#### एकगुण

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 |
|---|---|---|---|---|---|
| धा | धी | ना | धा | ती | ना |
| **x** | | | **0** | | |

#### दुगुण

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 |
|---|---|---|---|---|---|
| धाधी | नाधा | तीना | धाधी | नाधा | तीना |
| **x** | | | **0** | | |

**तिगुण**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 |
| धाधीना | धातीना | धाधीना | धातीना | धाधीना | धातीना |
| **x** | | | **0** | | |

**चौगुण**

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 |
| धाधीनाधा | तीनाधाधी | नाधातीना | धाधीनाधा | तीनाधाधी | नाधातीना |
| **x** | | | **0** | | |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 |
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 |
| धाधीनाधा | तीनाधाधी | नाधातीना | धाधीनाधा | तीनाधाधी | नाधातीना |
| **x** | | | **0** | | |

## 15.3.3 एक ताल का परिचय तथा स्वरलिपि

| | |
|---|---|
| मात्राएं | 12 |
| विभाग | 06 |
| ताली | 04 |
| खाली | 02 |

एक ताल 12 मात्रा की ताल है। यह ताल 6 विभागों में विभक्त है। हर विभाग 2 मात्राओं के होते हैं। इस ताल में पहली मात्रा पर सम, पहली,पांचवी, नौवीं व ग्याहरवीं मात्रा पर ताली तथा तीसरी व सातवीं मात्रा खाली होती है। इस ताल का प्रयोग शास्त्रीय संगीत, उप शास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत इत्यादि लगभग सभी विधाओं में होता है। यह ताल विलंबित लय, मध्य लय, द्रुत लय तीनों लयों में बजाई जाती है। इस ताल में बड़ा ख्याल, छोटा ख्याल, विलंबित गतें, द्रुत गतें, ठुमरी इत्यादि गाए-बजाए जाते हैं। गायन में इस ताल का प्रयोग अधिक किया जाता है।

**तालिपि**

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **एकगुण** | | | | | | | | | | | |
| धिं | धिं | धागे | तिरकिट | तू | ना | क | ता | धागे | तिरकिट | धी | ना |
| **x** | | **0** | | **2** | | **0** | | **3** | | **4** | |

**तालिपि**

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 0 | 11 | 12 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| **दुगुण** | | | | | | | | | | | |
| धिंधिं | धागेतिरकिट | तूना | कता | धागेतिरकिट | धीना | धिंधिं | धागेतिरकिट | तूना | कता | धागेतिरकिट | धीना |
| **x** | | **0** | | **2** | | **0** | | **3** | | **4** | |

**तालिपि**

**तिगुण**

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 |
|---|---|---|---|---|---|
| धिंधिंधागे | तिरकिटतूना | कताधागे | तिरकिटधीना | धिंधिंधागे | तिरकिटतूना |
| **x** | | **0** | | **2** | |
| 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
| कताधागे | तिरकिटधीना | धिंधिंधागे | तिरकिटतूना | कताधागे | तिरकिटधीना |
| **0** | | **3** | | **4** | |

**चौगुण**

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 |
|---|---|---|---|---|---|
| धिंधिंधागेतिरकिट | तूनाकता | धागेतिरकिटधीना | धिंधिंधागेतिरकिट | तूनाकता | धागेतिरकिटधीना |
| **x** | | **0** | | **2** | |
| 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
| धिंधिंधागेतिरकिट | तूनाकता | धागेतिरकिटधीना | धिंधिंधागेतिरकिट | तूनाकता | धागेतिरकिटधीना |
| **0** | | **3** | | **4** | |

## 15.3.4 चौताल का परिचय तथा स्वरलिपि

मात्राएं 12

विभाग 06

ताली 04

खाली 02

एक ताल 12 मात्रा की ताल है। यह ताल 6 विभागों में विभक्त है। हर विभाग 2 मात्राओं का होता है। इस ताल में पहली मात्रा पर सम तथा ताली, पांचवी, नवीं, ग्यारहवीं मात्रा पर ताली तथा तीसरी व सातवीं मात्रा पर खाली रहती है। चौताल पखावज की एक ताल है। इस ताल की मात्रा, संख्या, ताली, खाली आदि सब एक ताल के समान हैं।

ध्रुवपद गायकी के साथ इस ताल का खूब प्रयोग किया जाता है। इस ताल का मृंदग पर स्वतन्त्र वादन भी किया जाता है। इस ताल का वादन खुले हाथों से बोल बजाकर किया जाता है। इस ताल का प्रयोग शास्त्रीय संगीत में होता है। यह ताल विलंबित लय, मध्य लय, द्रुत लय तीनों लयों में बजाई जाती है।

**तालिपि**

**एकगुण**

| | | | | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
| धा | धा | दिं | ता | किट | धा | दिं | ता | तिट | कत | गदि | गन |
| **x** | | **0** | | **2** | | **0** | | **3** | | **4** | |

**दुगुण**

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| धाधा | दिंता | किटधा | दिंता | तिटकत | गदिगन | धाधा | दिंता | किटधा | दिंता | तिटकत | गदिगन |
| **x** | | **0** | | **2** | | **0** | | **3** | | **4** | |

**तिगुण**

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 |
|---|---|---|---|---|---|
| धाधादिं | ताकिटधा | दिंतातिट | कतगदिगन | धाधादिं | ताकिटधा |
| **x** | | **0** | | **2** | |
| 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
| दिंतातिट | कतगदिगन | धाधादिं | ताकिटधा | दिंतातिट | कतगदिगन |
| **0** | **3** | | | **4** | |

**चौगुण**

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 |
|---|---|---|---|---|---|
| धाधादिंता | किटधा दिंता | तिटकतगदिगन | धाधादिंता | किटधा दिंता | तिटकतगदिगन |
| **x** | | **0** | | **2** | |
| 7 | 8 | 9 | 10 | 11 | 12 |
| धाधादिंता | किटधा दिंता | तिटकतगदिगन | धाधादिंता | किटधा दिंता | तिटकतगदिगन |
| **0** | | **3** | | **4** | |

## स्वयं जांच अभ्यास 1

15.1. तीन ताल में कितनी मात्राएं होती हैं?

क) 10

ख) 12

ग) 14

घ) 16

15.2. तीन ताल में कितनी ताली  होती हैं?

क) 1

ख) 2

ग) 3

घ) 4

15.3. तीन ताल में खाली कौन सी मात्रा पर होती हैं?

क) 1

ख) 5

ग) 9

घ) 13

15.4. तीन ताल में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 1

ख) 5

ग) 9

घ) 13

15.5. दादरा ताल में कितनी मात्राएं होती हैं?

क) 10

ख) 12

ग) 6

घ) 8

15.6. दादरा ताल में कितनी ताली  होती हैं?

क) 1

ख) 2

ग) 3

घ) 4

15.7 दादरा ताल में खाली कौन सी मात्रा पर होती हैं?

क) 4

ख) 5

ग) 6

घ) 3

15.8. दादरा ताल में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 1

ख) 6

ग) 3

घ) 5

15.9. तीन ताल में 11वीं मात्रा पर कौन सा बोल होता है?

क) धा

ख) धिं

ग) तिं

घ) ता

15.10 दादरा ताल में 5वीं मात्रा पर कौन सा बोल होता है?

क) धा

ख) धी

ग) ती

घ) ता

15.11. एक ताल में कितनी मात्राएं होती हैं?

क) 10

ख) 12

ग) 14

घ) 16

15.12. एक ताल में खाली कौन सी मात्रा पर होती हैं?

क) 1

ख) 5

ग) 3

घ) 13

15.13. एक ताल में सम कौन सी मात्रा पर होता है?

क) 1

ख) 5

ग) 9

घ) 13

15.14. एक ताल में 11वीं मात्रा पर कौन सा बोल होता है?

क) धा

ख) क

ग) धी

घ) ता

15.15. चौताल में कितनी मात्राएं होती हैं?

क) 10

ख) 16

ग) 14

घ) 12

15.16. चौताल में कितनी ताली  होती हैं?

क) 1

ख) 3

ग) 2

घ) 4

15.17. चौताल में खाली कौन सी मात्रा पर होती हैं?

क) 1

ख) 7

ग) 11

घ) 10

15.18. चौताल में कितने विभाग होते हैं?

क) 6

ख) 4

ग) 2

घ) 8

15.19. चौताल में 5वीं मात्रा पर कौन सा बोल होता है?

क) धा

ख) किट

ग) धीं

घ) तिट

## 15.4 सारांश

भारतीय शास्त्रीय संगीत में गायन और वादन के साथ विभिन्न प्रकार की तालों को बजाया जाता है। इन तालों में तीन ताल तथा दादरा तालें काफी प्रयोग की जाती हैं। तीन ताल 16 मात्रा तथा दादरा 06 मात्रा की ताल है। इन तालों को एकगुण, दुगुण, तिगुण व चौगुण लयकारियों में तबले पर बजाया जाता है तथा हाथ पर ताली देकर भी प्रदर्शित किया जाता है। इन तालों का प्रयोग शास्त्रीय संगीत की बंदिशों, गतों के अतिरिक्त, सुगम संगीत व फिल्मी संगीत में कई मधुर गीतों, भजनों, गजलों इत्यादि क साथ भी बजाया जाता है।

## 15.5 शब्दावली

- एकगुण: ठाह लय में बोलों को बजाना।
- दुगुण:- दुगनी लय में बोलों को बजाना।
- तिगुण: तिगुनी लय में बोलों को बजाना।
- चौगुण:- चौगुनी लय में बोलों को बजाना।

## 15.6 स्वयं जांच अभ्यास प्रश्नों के उत्तर

**स्वयं जांच अभ्यास 1**

15.1 उत्तर: घ)

15.2 उत्तर: ग)

15.3 उत्तर: ग)

15.4 उत्तर: क)

15.5 उत्तर: ग)

15.6 उत्तर: क)

15.7 उत्तर: क)

15.8 उत्तर: क)

15.9 उत्तर: ग)

15.10 उत्तर: ग)

15.11 उत्तर: ख)

15.12 उत्तर: ग)

15.13 उत्तर: क)

15.14 उत्तर: ग)

15.15 उत्तर: घ)

15.16 उत्तर: घ)

15.17 उत्तर: ख)

15.18 उत्तर: क)

15.19 उत्तर: ख)

## 15.7 संदर्भ

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2001). संगीत मैनुअल. ए.जी. पब्लिकेशन, दिल्ली।

भातखंडे, विष्णुनारायण. (1970). कर्मिक पुस्तक मलिका. खंड 1-6, संगीत कार्यालय हाथरस।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2008). तंत्रिका विज्ञान, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

## 15.8 अनुशंसित पठन

शर्मा, डॉ. मृत्युंजय. (2005). स्वर सरिता, एस.आर.ई.आई.टी. पब्लिकेशन, शिमला।

झा, पं. रामाश्रय. (2020). अभिनव गीतांजलि (भाग 1-5), संगीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद।

## 15.9 पाठगत प्रश्न

प्रश्न 1. तीनताल का परिचय लिखिए।

प्रश्न 2. दादरा ताल का परिचय लिखिए।

प्रश्न 3. चौताल ताल का परिचय लिखिए।

प्रश्न 4. एकताल का परिचय लिखिए।

प्रश्न 5. तीनताल को हाथ पर ताली देकर तथा बोलकर बताइए।

प्रश्न 6. दादरा ताल को हाथ पर ताली देकर तथा बोलकर बताइए।

प्रश्न 7. चौताल ताल को हाथ पर ताली देकर तथा बोलकर बताइए।

प्रश्न 8. एकताल को हाथ पर ताली देकर तथा बोलकर बताइए।

## महत्वपूर्ण प्रश्न - कार्यभार

प्रश्न 1. राग दरबारी कान्हड़ा  का परिचय, आलाप, विलंबित ख्याल, छोटा ख्याल  को पांच-पांच तानों सहित लिखिए।

प्रश्न 2. राग तोड़ी का परिचय, आलाप, विलंबित ख्याल, छोटा ख्याल  को पांच-पांच तानों सहित लिखिए।

प्रश्न 3. राग भैरवी का परिचय, आलाप, विलंबित ख्याल, छोटा ख्याल  को पांच-पांच तानों सहित लिखिए।

प्रश्न 4. राग दरबारी कान्हड़ा  का परिचय, आलाप, विलंबित गत, द्रुत गत को पांच-पांच तोड़ों सहित लिखिए।

प्रश्न 5. राग तोड़ी का परिचय, आलाप, विलंबित गत, द्रुत गत को पांच-पांच तोड़ों सहित लिखिए।

प्रश्न 6. राग भैरवी का परिचय, आलाप, विलंबित गत, द्रुत गत को पांच-पांच तोड़ों सहित लिखिए।

प्रश्न 7. तीनताल का पूर्ण परिचय तथा उसकी एकगुण, दुगुण, तिगुण, चौगुण लिखिए।

प्रश्न 8. एकताल का पूर्ण परिचय तथा उसकी एकगुण, दुगुण, तिगुण, चौगुण लिखिए।

प्रश्न 9. चौताल ताल का पूर्ण परिचय तथा उसकी एकगुण, दुगुण, तिगुण, चौगुण लिखिए।

प्रश्न 10. धमार ताल का पूर्ण परिचय तथा उसकी एकगुण, दुगुण, तिगुण, चौगुण लिखिए।

प्रश्न 11. किसी एक राग की द्रुत गत (तीनताल के अतिरिक्त) को तोड़ों लिखें तथा बजा कर सुनाएं।

प्रश्न 12. किसी एक राग में ध्रुवपद को  लिखें तथा सुनाएं।